

[image]

[image]

सुबहका वक्त हे. कांचके झरोके लगाई इमारतोंके जंगलमें एक इमारत और उस इमारतके चौथे मालेपर एक एक करके एक आयटी कंपनीके कर्मचारी आने लगे थे. दस बजनेको आए थे और कर्मचारीयों की भीड़ अचानक बढ़ने लगी. सब कर्मचारी ऑफिसमें जानेके लिए भीड़ और जल्दी करने लगे. कारण एकही था की देरी ना हो जाए. सब कर्मचारीयोंके आनेका वक्त दरवाजेपर ही स्मार्ट कार्ड रिडरपर दर्ज किया जाता था. सिर्फ आनेका वक्त ही नहीं तो उनकी पुरी अंदर बाहर जानेकी गतिविधियां उस कार्ड रिडरपर दर्ज किई जाती था. कंपनीका जो कांचसे बना मुख्य दरवाजा था उसे मॅग्नेटीक लॉक लगाया था और दरवाजा कर्मचारीयोंने अपना कार्ड दिखानेके सिवा खुलता नहीं था. उस कार्ड रिडरकी वजहसे कंपनीकी सुरक्षा और नियमितता बरकरार रखी जाती थी. दसका बझर बज गया और तबतक कंपनीके सारे कर्मचारी अंदर पहुंच गए थे. कंपनीकी डायरेक्टर और सिईओ ईशा भी अंदर आ गयी थी.

ईशाने बी.ई कॉम्प्यूटर किया था और उसकी उम्र जादासे जादा २३ साल होगी. उसके पिता, कंपनीके पुर्व डायरेक्टर और सिईओ, अचानक गुजर जानेसे, उम्रके लिहाजसे कंपनीकी बहुत बडी जिम्मेदारी उस पर आन पडी थी. नहीं तो यह तो उसके हंसने खेलनेके और मस्ती करनेके दिन थे. उसकी आगेकी पढाई यु.एस. में करनेकी इच्छा थी. लेकिन उसकी वह इच्छा पिताजी गुजर जानेसे केवल इच्छाही रह गई थी. वह भी कंपनीकी जिम्मेदारी अच्छी तरहसे निभाती थी और साथमें अपने मस्तीके, हंसने खेलनेके दिन मुरझा ना जाए इसका खयाल रखती थी.

हॉलमें दोनो तरफ क्यूबिकल्स थे और उसके बिचमेंसे जो संकरा रास्ता था उससे गुजरते हुए ईशा अपने कॅबिनकी तरफ जा रही थी. वैसे वह ऑफिसमें पहननेके लिए कॅजुअल्स पहनावा ही जादा पसंद करती थी. ढीला सफेद टी शर्ट और कॉटनका ढीला बादामी पैंट. कोई बडा प्रोग्रॅम होनेपर या कोई स्पेशल क्लायंट के साथ मिटींग होनेपर ही वह फॉर्मल ड्रेस पहनना पसंद करती थी.

ऑफिसके बाकी स्टाफ और डेक्लपर्सकोभी फॉर्मल ड्रेसकी कोई जबरदस्ती नहीं थी. वे जिन कपडोंमें कंफर्टेबल महसूस करे ऐसा पहनावा पहननेकी उन सबको छूट थी. ऑफिसके कामके बारेमें ईशाका एक सूत्र था. की सब लोग ऑफिस का काम ऍन्जॉय करनेमें सक्षम होना चाहिए. अगर लोग काम ऍन्जॉय कर पाएंगे तो उन्हे कामकी थकान कभी महसूस ही नहीं होगी. उसने ऑफिसमेंभी काम और विश्राम या हॉबी इसका अच्छा खासा तालमेल बिठाकर कर उसके कंपनीमें काम कर रहे कर्मचारीयोंकी प्रॉडक्टीव्कीटी बढ़ाई थी. उसने ऑफिसमें स्विमींग पुल, झेन चेंबर, मेडीटेशन रुम, जीम, टी टी रुम ऐसी अलग अलग सुविधाएं कर्मचारीयोंको मुहय्या कराकर उनका ऑफिसके बारेमें अपनापन बढ़ानेकी कोशीश की थी. और उसे उसके अच्छे परिणामभी दिखने लगे थे.

उसके कॅबिनकी तरफ जाते जाते उसे उसके कंपनीके कुछ कर्मचारी क्रॉस हो गए. उन्होने उसे अदबके साथ विश किया. उसनेभी एक मीठे स्माईलके साथ उनको विश कर प्रतिउत्तर दिया.

वे सिर्फ डरके कारण उसे विश नहीं करते थे तो उनके मनमें उसके बारेमें उसके काबिलियत के बारेमें एक आदर दिख रहा था. वह अपने कॅबिनके पास पहुँच गई.

उसके कॅबिनकी एक खासियत थी की उसकी कॅबिन बाकि कर्मचारियोंसे भारी सामानसे ना भरी होकर, जो सुविधाएँ उसके कर्मचारियोंको थी वही उसके कॅबिनमें भी थी. 'मैं भी तुममेंसे एक हूँ.' यह भावना सबके मनमें दृढ़ हो, यह उसका उद्देश्य होगा.

वह अपने कॅबिनके पास पहुँचतेही उसने स्प्रिंग लगाया हूवा अपने कॅबिनका कांचका दरवाजा अंदरकी ओर धकेला और वह अंदर चली गई.

ईशाने ऑफीसमें आये बराबर रोजके जो महत्वपूर्ण काम थे वह निपटाए. जैसे महत्वपूर्ण खत, ऑफीशियल मेल्स, प्रोग्रेस रिपोर्ट्स इत्यादी. कुछ महत्वपूर्ण मेल्स थी उन्हो जवाब भेज दिया, कुछ मेल्सके प्रिंट लिए. सब महत्वपूर्ण काम निपटनेके बाद उसने अपने कॉम्प्यूटरका चॅटींग सेशन ओपन किया.

कामकी थकान महसूस होनेसे या कुछ खाली वक्त मिलनेपर वह चॅटींग करती थी. यह उसका हर दिन कार्यक्रम रहता था. यूभी इतनी बड़ी कंपनीकी जिम्मेदारी संभालना कोई मामूली बात नहीं थी. कामका तणाव, टेन्शन्स इनसे छूटकारा पानेके लिए उसने चॅटींगके रुपमें बहुत अच्छा विकल्प चुना था.

तभी फोनकी घंटी बजी. उसने चॅटींग विंडोमें आये मेसेजेस पढते हुए फोन उठाया. हुबहु कॉम्प्यूटरके पॅरेलल प्रोसेसिंग जैसे सारे काम वह एकही वक्त कर सकती थी.

" यस दीपिका"

"मॅडम .. सीक्युर डेटाज मॅनेजींग डायरेक्टर ... मि. कश्यप इज ऑन द लाईन..." उधरसे दीपिकाका आवाज आया.

" कनेक्ट प्लीज"

‘ हाय’ तबतक चॅटींगपर किसीका मेसेज आया.

ईशाने किसका मेसेज है यह चेक किया. ‘क्युट बॉय’ मेसेज भेजने वालेने धारण किया हुवा नाम था.

‘ क्या चिपकू आदमी है ‘ ईशाने सोचा.

यही ‘क्युट बॉय’ हमेशा चॅटींगपर उसे मिलता था. और लगभग हरबार ईशाने चॅटींग सेशन

ओपन किए बराबर उसका मेसेज आया नहीं ऐसा बहुत कम होता था.

‘ इसे कुछ काम धंदे है की नाही ... जब देखो तब चॅटींगपर पडा रहता है ‘

ईशाने आजभी उसे इग्नोर करनेकी ठान ली. दो तिन ऑफलाईन मेसेजेस थे.

ईशा कान और कंधेके बिच फोनका क्रेडल पकडकर की बोर्डपर सफाईसे अपनी नाजुक उंगलीया चलाते हुए वे ऑफलाईन मेसेजेस चेक करने लगी.

" गुड मॉर्निंग मि. कश्यप... हाऊ आर यू" ईशाने फोन कनेक्ट होतेही मि. कश्यपका स्वागत किया और वह उधरसे कश्यपकी बातचीत सुननेके लिए बिचमें रुक गई.

" देखीए कश्यपजी... वुई आर द बेस्ट ऍट अवर क्वालीटी ऍन्ड डिलीवरी शेड्यूलस... यू डोन्ट वरी... वुई विल डिलीवर युवर प्रॉडक्ट ऑन टाईम... हमारी डिलीवरी वक्तके अंदर नहीं हूई ऐसा कभी हुवा है क्या?... नहीं ना?... देन डोंट वरी... आप एकदम निश्चित रहीएगा ... यस... ओके... बाय.. " ईशाने फोन रख दिया और फिरसे दो डीजीट डायल कर फोन उठाया, " जरा निकिताको अंदर भेज दो "

फोनपर चल रहे बातचीतसे ईशाका कॉम्प्यूटर पर खयाल नहीं रहा था. क्योंकि उस वक्त काम महत्वपूर्ण था और बाकी बाते बाद में.

तभी कॉम्प्यूटरपर ‘बिप’ बजा. चॅटींग विंडोमें ईशाको किसीका मेसेज आया था. ईशाने चिढ़कर मॉनिटरकी तरफ देखा.

‘फिरसे उसी क्युट बॉयकाही मेसेज होगा ‘ उसने सोचा.

लेकिन वह मेसेज क्युट बॉयका नहीं था. इसलिए वह पढ़ने लगी.

मेसेज था – ‘ क्या तुम मेरी दोस्त बनना पसंद करोगी ?’

मॉनिटरपर अबभी ‘ क्या तुम मेरा दोस्त बनना पसंद करोगी ?’ यह चॅटींगपर आया मेसेज दिख रहा था. अब इसे क्या जवाब भेजा जाए ताकी वह अपना पिछा छोडेगा ऐसा सोचते हुए ईशाने मेसेज भेजनेवालेका नाम देखा. लेकिन वह ‘क्युट बॉय’ नहीं था यह देखकर उसे सुकून महसूस हुवा.

‘ क्यो नहीं ? जरूर... दोस्ती करनेसे निभाना जादा मायने रखता है ‘ ईशाने मेसेज टाईप किया.

तभी निकिता – ईशाकी सेक्रेटरी अंदर आ गई.

" यस मॅडम"

" निकिता मैंने तुम्हे कितनी बार कहा है ... की डोन्ट कॉल मी मॅडम... कॉल मी सिम्प्ली ईशा... तुम जब मुझे मॅडम कहती हो मुझे एकदम २३ सालसे ५० सालका हुए जैसा लगता है " ईशा चिढ़कर बोली.

वह उसपर गुस्सा तो हो गई लेकिन फिर उसे बुरा लगने लगा.

ईशा अचानक एकदम गंभीर होकर बोली, " सच कहूं तो पापा के अचानक जानेके बाद यह जिम्मेदारी मुझपर आन पड़ी है ... नहींतो अभी तो मेरे हसने खेलनेके दिन थे... सच कहूं तो ... मैंने तुम्हें यहां जानबुझकर बुला लिया है .. ताकी इस कामकाजी मौहोलमें मैं अपनी हंसी खुशी ना खो दूं... कम से कम तूम तो मुझे ईशा कह सकती हो ... तूम मेरी दोस्त पहले हो और सेक्रेटरी बादमें ... समझी? " ईशाने कहा.

" यस मॅडम ... आय मीन ईशा" निकिताने कहा.

ईशा निकिताकी तरफ देखकर मंद मंद मुस्कुराने लगी. निकिता उसके सामने कुर्सीपर बैठ गई तभी फिरसे कॉम्प्यूटरका अलर्ट बझर बज गया. चार्टींगके विंडोमें फिरसे मेसेज आ गया था –

‘तुम्हारा नाम क्या है?’

‘ मेरा नाम ईशा ... तुम्हारा ?’ ईशाने मेसेज टाइप किया.

ईशाने सेन्ड बटनपर माऊस क्लिक किया और बोलनेके लिए निकिता बैठी थी उधर अपनी चेअर घुमाई.

" वह सीक्युर डेटाका प्रोजेक्ट कैसा चल रहा है ?..." ईशाने पुछा.

" वैसे सब ठिक है ... लेकिन एक मॉड्यूल सिस्टीमको बारबार क्रॅश कर रहा है ... बग क्या है कुछ समझमें नहीं आ रहा है ... " निकिताने जानकारी दी.

तभी चॅटींगपर फिरसे मेसेज आया –

‘ मेरा नाम अस्तित्व है ... बाय द वे... आपकी पसंदीदा चिजें क्या है ... आय मीन हॉबीज?’

ईशाने कॉम्प्यूटरकी तरफ देखा. और उस मेसेजकी तरफ ध्यान ना देते हुए चिंतायुक्त चेहरेसे निकिताकी तरफ देखने लगी.

" उस मॉड्यूलपर कौन काम कर रहा है ?" ईशाने पुछा.

" पंकज भदोरिया" निकिताने जानकारी दी.

" वही ना जो पिछले महिने जॉईन हुवा था ?" ईशाने पुछा.

" हां वही "

" उसके साथ कोई सिनीयर असोशिएट करो और सी डॅट द मॅटर इज रिझॉल्व्ड " ईशाने एक पलमें उस समस्याकी जड ढूंढते हुए उसपर उपायभी सुझाया था.

" यस मॅडम... आय मीन ईशा" निकिता बडे गर्वके साथ ईशाके तरफ देखते हुए बोली.

उसे अपने बॉस और दोस्त ईशाके मॅनेजमेंट स्किलसे हमेशा अभिमानीत महसूस करती थी.

ईशाने फिरसे अपना रुख अपने कॉम्प्यूटरकी तरफ किया.

निकिता वहांसे उठकर बाहर गई और ईशा कॉम्प्यूटरपर आए चॅटींग मेसेजको जवाब टाईप करने लगी.

‘ हॉबीज ... हां .. पढना, तैरना ... कभी कभी लिखना और ऑफ कोर्स चॅटींग’

ईशाने मेसेज टाईप कर ‘सेन्ड’ की दबाकर वह भेजा और चॅटींग विंडो मिनीमाईझ कर उसने मायक्रोसॉफ्ट एक्सेलकी दुसरी एक विंडो ओपन की. वह उस एक्सेल शिटमें लिखे हुए आंकडे पढते हुए गुमसी गई. शायद वह उसके कंपनीके किसी प्रोजेक्टके फायनांसिएल डिटेल्स थे.

तभी फिरसे एक चॅटींग मेसेज आ गया.

‘ अरे वा .. क्या संयोग है ... मेरी हॉबीजभी तुम्हारी हॉबीजसे मेल खाती है ... एकदम हुबहु ... एक कम ना एक जादा ...’ उधरसे अस्तित्व का था.

‘ रिअली?’ उसने उपरोधसे भरे लहजेसे जवाब दिया.

फ्लर्टींगके इस पुराने नुस्केसे ईशा अच्छी तरहसे वाकिफ थी.

तभी चपरासी अंदर आया. उसने कुछ कागजाद दस्तखत करनेके लिए ईशाके सामने रखे. ईशाने उन सब कागजाद पर एक दौडती हुई नजर घुमाई और उनपर दस्तखत करने लगी.

‘ आय स्वीअर’ मॉनिटरपर अस्तित्व ने उधरसे भेजा हुवा मेसेज आ गया.

शायद उसे उसके शब्दोंमें छुपा उपरोध समझमें आया था.

‘ मुझे तुम्हारा मेलिंग ऍट्रेस मीलेगा ? ‘ उधरसे अस्तित्व का फिरसे मेसेज आ गया.

ईशाने खास चॅटींगपर मिलनेवाले अजनबी लोगोंको देनेके लिए बनाया मेल ऍट्रेस उसे भेज दिया.

ईशाने अब अपनी चेअर घुमाकर अपनी डायरी ढुंढी और अपने घड़ीकी तरफ देखते हुए वह कुर्सीसे उठ खड़ी हो गई.

अपनी डायरी लेकर वह जानेके लिए घुम गई तभी फिरसे कॉम्प्यूटरपर चॅटींगका बझर बज गया. उसने जाते जाते मुड़कर मॉनिटरकी तरफ देखा.

मॉनिटरपर अस्तित्व का मेसेज था, ‘ ओके थैंक यू... बाय ... सी यू सम टाईम...’

इंटरनेट कॅफेमें अस्तित्व एक कॉम्प्यूटरके सामने बैठकर कुछ कर रहा था. एक उसकेही उम्रके लडकेने, शायद उसका दोस्तही हो, विकासने पिछेसे आकर उसके दोनो कंधोपर अपने हाथ रख दिए और उसके कंधे हल्केसे दबाकर कहा, " हाय अस्तित्व ... क्या कर रहे हो ?"

अपने धूनसे बाहर आते हुए अस्तित्व ने पिछे मुडकर देखा और फिरसे अपने काममें व्यस्त होते हुए बोला, " कुछ नहीं यार... एक लडकीको मेल भेजनेकी कोशीश कर रहा हूं "

" लडकीको? ...ओ हो... तो मामला इश्क का है" विकास उसे चिढाते हुए बोला.

" अरे नहीं यार... बस सिर्फ दोस्त है ..." अस्तित्व ने कहा.

" प्यारे ... मानो या ना मानो...

जब कभी लडकीसे बात करना हो और लब्ज ना सुझे...और जब कभी लडकीको खत लिखना हो और शब्द ना सुझे...तो समझो मामला इश्क का है ..." विकास उसे और चिढाते हुए बोला.

अस्तित्व कुछ ना बोलते हुए सिर्फ मुस्कुरा दिया.

" देखो देखो गाल कैसे लाल लाल हो रहे है ..." विकासने कहा.

अस्तित्व फिरसे कुछ ना बोलते हुए सिर्फ मुस्कुरा दिया.

" जब कोई ना करे इन्कार ...

या ना करे इकरार

तो समझो वह प्यार है "

विकास उसे छोडनेके लिए तैयार नहीं था.

लेकिन अब अस्तित्व चिढ गया, " तू यहांसे जाने वाले हो या मुझसे पिटने वाले हो? ..."

" तुम जैसा समझ रहे हो ऐसा कुछ नहीं है ... मै सिर्फ अपने पिएचडीके टॉपीक्स सर्च कर रहा हूं और बिच बिचमें बोरीयतसे बचनेके लिए मेल्स भेज रहा हूं बरस..." अस्तित्व ने अपना चिढना काबूम रखनेकी कोशीश करते हुए कहा.

" बस्स?" विकास.

" तुम अब जानेवाले हो? ... या तुम्हारी इतने सारे लोगोंके सामने अपमानित होनेकी इच्छा है ?" अस्तित्व फिरसे चिढ़कर बोला.

" ओके .. ओके... काम डाऊन... अच्छा तुम्हारे पिएचडीका टॉपीक क्या है ?" विकासने पुछा.

" इट्स सिफ्रीट टॉपीक डीयर... आय कान्ट डिस्क्लोज टू ऐनीवन..." अस्तित्व ने कहा.

" नॉट टू मी आल्सो ?..." विकासने पुछा.

" यस नॉट टू यू आल्सो" अस्तित्व ने जोर देकर कहा.

" तुम्हारा अच्छा है ... सिफ्रसीके पिछे ... इश्क का चक्करभी चल रहा है ..." विकासने कहा.

" तूम वह कुछभी समझो ..." अस्तित्व ने कहा.

" नहीं अब मैं समझनेके भी आगे पहुंच चूका हूँ ..." विकासने कहा.

" मतलब ?"

" मतलब ... मुझे कुछ समझनेकी जरूरत नहीं बची है "

" मतलब ?"

" मतलब अब मुझे पक्का यकिन हो गया है " विकासने कहा.

अस्तित्व फिरसे चिढ़कर पिछे मुड़ा. तबतक विकास मुस्कराते हुए उसकी तरफ देखते हुए वहांसे दरवाजेकी तरफ निकल चूका था.

सुबहके लगभग दस बजे होंगे. ईशा जल्दी जल्दी अपने कॅबिनमें घुस गई. जब वह कॅबिनमें आ गई थी तब निकिताकी कॅबिनकी चिजे ठिक लगाना चल रहा था. ईशाके अनुपस्थितीमें उसके कॅबिनकी पुरी जिम्मेदारी निकिताकी ही रहती थी.

ईशाके कॅबिनमें प्रवेश करतेही निकिताने अदबसे खडे रहते हुए उसे विश किया, " गुडमॉर्निंग..."

‘मॅडम’ उसकें मुंहमें आते आते रह गया. ईशा उसे कितनीभी दोस्तकी तरह लगती हो या उससे दोस्तकी तरह व्यवहार करती हो फिरभी निकिताको कमसे कम उसके कॅबिनमें उससे दोस्तकी तरह बरताव करना बड़ा कठिण जाता था, और वह भी कभी कभी बाकी लोगोंके सामने.

ईशाने अंदर आकर उसके पाससे गुजरते हुए उसके पिठपर थपथपाते हुए कहा, " हाय"

उसके पिछे पिछे उसका ड्रायक्लर उसकी सुटकेस लेकर अंदर आ गया. जैसेही ईशा अपने कुर्सीपर बैठ गई, ड्रायक्लरने सुटकेस उसके बगलमे रख दी और वह कॅबिनसे निकल गया.

निकिता ईशाके आमने सामने कुर्सीपर बैठ गई और उसने उसकी अपॉईटमेंट्सकी डायरी खोलकर उसके सामने खिसकाई. ईशाने अपने कॉम्प्यूटरका स्विच ऑन किया और वह डायरीमें लिखी अपॉईटमेंट्स पढ़ने लगी.

" सुबह आए बराबर मिटींग..." ईशा बुरासा मुंह बनाकर बोली, " अच्छा इस दोपहरके सेमीनारको मै नहीं जा पाऊंगी .. क्यों न शर्माजी को भेज दे?..."

" ठिक है " निकिता उस अपॉईटमेंट्सके सामने स्टार मार्क करते हुए बोली.

" क्या करें इन लोगोंको मुंहपर कुछ बोलभी नहीं सकते ... और समयके अभावमें सेमीनार को जा भी नहीं सकते.... सचमुछ किसी कंपनीके हेडका काम कोई मामूली नहीं होता."

ईशा अपनी सूटकेस खोलकर उनमेंसे कुछ पेपर्स बाहर निकालने लगी. पेपर निकालते हुए एक पेपरकी तरफ देखकर, वह पेपर बगलमें निकालकर रखते हुए बोली, " अब यह देखो ... इस कंपनीके टेंडरका काम अब तक पुरा नहीं हुवा ... यह पेपर जरा उस पांडेकी तरफ भेज देना ..."

" पांडे आज छुट्टीपर है " निकिताने कहा.

" लेकिन मेरे जानकारीके अनुसार उनकी छुट्टी तो कलतक ही थी. ..." ईशा चिढ़कर बोली.

" हां ...लेकिन अभी थोड़ी देर पहले उनका फोन आया था. ... वे कामपर नहीं आ सकते यह बोलनेके लिए " निकिताने कहा.

" क्यों नहीं आ सकते ?" निकिताने गुस्सेसे पुछा.

" मैंने पुछा तो उन्होने कुछ ना कहते हुएही फोन रख दिया.

" यह पांडे मतलब एक बेहद गैरजिम्मेदाराना आदमी ..." ईशा चिढ़कर बोली.

और फिर जो ईशाकी बडबड शुरु होगई वह रुकनेका नाम नहीं लेही थी. निकिताको खुब पता था की जब ईशा ऐसी बडबड करने लगे तो क्या करना चाहिए. कुछ नहीं, चूपचाप बैठकर सिर्फ उसकी बडबड सुन लेना. बिचमें एकभी लब्ज नहीं बोलना. ईशाने ही उसे एक बार बताया था की जब अपना बॉस ऐसा बडबड करने लगे, तो उसकी वह बडबड मतलब एक तरह का स्ट्रेस बाहर निकालने का तरीका होता है. जब उसकी ऐसी बडबड चल रही होती है तब जो सेक्रेटरी उसे और कुछ बोलकर या और कुछ पुछकर उसकी और स्ट्रेस बढ़ाती है उसे मोस्ट अनसक्सेसफुल सेक्रेटरी कहना चाहिए. और जो सेक्रेटरी चूपचाप अपने बॉसकी बकबक सुनती है और अपने बॉसको फिर से नॉर्मल होनेकी राह देखती है उसे मोस्ट सक्सेसफुल सेक्रेटरी कहना चाहिए.

ईशाकी बकबक अब बंद होकर वह काफी शांत हो गई थी. वह हाथमें कुछ पेपर्स और फाईल्स लेकर मिटींगको जानेके लिए अपने कुर्सीसे उठ खडी हो गई. निकिताभी उठ खडी होगई.

बगलमें चल रहे कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ देखते हुए वह निकितासे बोली, " तूम जरा मेरी मेल्स चेक कर लेना ... मैं मिटींगको हो आती हूं ..." और ईशा अपने कॅबिनसे बाहर जाने लगी.

"पर्सनल मेल्सभी ?" निकिताने उसे छेडते हुए मुस्कराकर मजाकमें कहा.

" यू नो... देअर इज नर्थिंग पर्सनल... और जोभी है ... तुम्हे सब पता है ही ..." ईशाभी उसकी तरफ देखकर, मुस्कराते हुए बोली और पलटकर जल्दी जल्दी मिटींगको जानेके लिए निकल पडी.

सुबह सुबह रास्तेपर बैंग हाथमें लेकर अस्तित्व की कही जानेकी गडबड चल रही थी.

पिछेसे दौडते हुए आकर उसके दोस्त विकासने उसे जोरसे आवाज दिया, " ए सुन गुरु... इतनी सुबह सुबह कहां जा रहा है"

अस्तित्व ने मुडकर देखा और उसे अनदेखा करते हुए फिरसे पहले जैसे जल्दी जल्दी सामने चलने लगा.

" किसी लडकी के साथ भाग तो नहीं जा रहे हो ?..." विकासने वह रुक नहीं रहा है और उसकी गडबड देखते हुए पुछा.

विकास अबभी उसके पिछेसे दौडते हुए उसके पास पहुंचनेकी कोशीश कर रहा था.

" क्या सरदर्द है ... जरा दो दिन बाहर जा रहा हूं ... उसका भी इतना ढींढोरा... " अस्तित्व बडबड करते हुए सामने चल रहा था.

" दो दिन बाहर जा रहा हूं ... उतनाही तूमसे छूटकारा मिलेगा" अस्तित्व ने चलते हुए जोरसे विकासको ताना मारते हुए कहा.

" थोडी देर रुको तो सही ... तुमसे एक अर्जेंट बात पुछनी थी. ..." विकासने कहा.

अस्तित्व रुक गया और विकास दौडते हुए आकर उसके पास पहुंच गया.

" बोलो ... क्या पुछना है ? ... जल्दी पुछो ... नहीं तो उधर मेरी बस छूट जाएगी " अस्तित्व बुरासा मुंह बनाकर बोला.

" क्या हुवा फिर कल ?" विकासने पुछा.

" किस बातका ?" अस्तित्व ने प्रतिप्रश्न किया.

" वही उस मेलका? ... कल मेल भेजी की नहीं ? " विकासने उसे छेडते हुए उसके गलेमें हाथ डालकर पुछा.

" अजीब बेवकुफ हो तूम ... किस वक्त किस बातका महत्व है इसका कोई तुम्हे सरोकार नहीं होता... उधर मेरी बस लेट हो रही है और तुम्हे उस मेलकी पडी है ..." अस्तित्व झल्लाते हुए उसका हाथ अपने कंधेसे झटकते हुए बोला.

अस्तित्व अब फिरसे तेजीसे आगे बढने लगा.

" क्या बात करते हो यार तूम ?... बससे कभीभी मेल महत्वपुर्ण होगी ... अब मुझे बता.. हावडा मेल, राजधानी मेल.... ये सारी मेल बडी की वह तुम्हारी टपरी बस?" विकास अबभी उसके पिछे पिछे जाते हुए उसे छेडते हुए बोला.

अस्तित्व समझ चूका था की अब विकाससे बात करनेमें कोई मतलब नही था. वह अपने बडे बडे कदम बढ़ाते हुए आगे चलने लगा. और विकासभी बकबक करते हुए और उसे छेडते हुए उसके साथ साथ चलने लगा.

निकिता ईशाके कॅबिनमें कॉम्प्यूटरपर बैठी हुई थी. ईशा उसकी सुबहकी मिटींग निपटाकर उसके कॅबिनमें वापस आ गई. उसने घड़ी की तरफ देखा. लगभग दोपहरके बारा बज गए थे. कुर्सी पिछे खिंचकर वह अपने कुर्सीपर बैठ गई और कुर्सीपर पिछेकी ओर झुलते हुए अपनी थकावट दूर करनेका प्रयास करने लगी. निकिताने एक बार ईशाकी तरफ देखा और वह फिरसे अपने कॉम्प्यूटरके काममें व्यस्त हो गई.

"किसीकी कोई खास मेल ?" ईशाने निकिताकी तरफ ना देखते हुए ही पुछा.

" नही .. कोई खास नही... लेकिन एक उस 'क्युटबॉय' की मेल थी. " निकिताने कहा.

" क्युटबॉय ... कुछ लोग बहुतही चिपकू होते है ... नही?" ईशाने कहा.

" सही है ... " निकिताको ईशाका इशारा समझ गया था.

क्योंकी ईशाने पहले एकबार उसे उस क्युटबॉयके बारेमें बताया था.

" और हां ... एक और किसी अस्तित्व की मेल थी " निकिताने आगे कहा.

" अस्तित्व ?... हां वही होगा जो कल चेंटींगपर मिला था.... मै बोलती हूं ना उसने क्या लिखा होगा.... तुम्हारी उम्र क्या है ?... तुम्हारा ऍड्रेस क्या है ?... मेरी उम्र फलां फलां है ... मेरा ऍड्रेस फलां फलां ... और मै फलां फलां काम करता हू... और धीरे धीरे वह अपने असली जातपर आएगा... इन आदमीयोंकी जातही ऐसी होती है ... लंपट ..बदमाश आणि चिपकू..."

" तूम बोल रही हो वैसा उसने कुछभी लिखा नही है ... " निकिता बिचमेंही उसे टोकते हुए बोली.

" नही?... तो फिर किसी कंपनीके प्रॉडक्टकी सिफारीश की होगी उसने... मतलब वह प्राडक्ट खरीद हम लेंगे और वह उसका फौकटमें कमिशन खाएगा" ईशाने कहा.

" नही वैसाभी उसने कुछ लिखा नही है . " निकिताने कहा.

" फिर ?... फिर उसने क्या लिखा है ?" ईशाने उत्सुकतावश गर्दन घुमाकर निकिताके तरफ देखते हुए पुछा.

"उसने मेलमें कुछभी लिखा नहीं है .. उसने ब्लॉक मेल भेजी है और निचे सिर्फ उसका नाम 'अस्तित्व' ऐसा लिखा हुआ है " निकिताने कहा.

ईशा एकदम उठकर सिधी बैठ गई.

"देखू तो .." ईशा निकिताकी तरफ मुड़कर कॉम्प्यूटरकी तरफ देखते हुए बोली.

निकिताने ईशाके मेलबॉक्ससे अस्तित्व की मेल क्लीक कर खोली. सचमुछ वह मेल ब्लॉक थी.

" ईशा तूम कुछभी कहो ... लडकेमें 'स्टाईल' है ... ऍटलिस्ट इतना पक्का है की वह बाकी लडकोसे जरा हटके है ... " निकिता ईशाके दिलको टटोलनेकी कोशीश करते हुए बोली.

" तूम जरा चूप बैठोगी ... और क्या लडका ... लडका लगा रखा है ... तुम्हे वह कौन ? कहाका? .. उसकी उम्र क्या है ?... कुछ पता भी है ?... वह कोई रंगीन मिजाजवाला, कोई खुसट बुढ़ाभी हो सकता है ... तुम्हे पता हैही आजकल लोग इंटरनेटपर कैसे पर्सनलायझेशन करते है ... "

" ... हां तुम सही कहती हो ... लेकिन चिंता मत करो ... ये लो मै अभी उसकी सायबर तहकिकात करती हूं " निकिता फटाफट कॉम्प्यूटरके किबोर्डकी कुछ बटन्स दबाती हुई बोली.

थोडीही देरमें कॉम्प्यूटरके मॉनीटरपर मानो एक रिपोर्ट आ गया.

" यहां तो उसका नाम सिर्फ अस्तित्व ऐसा लिखा हुआ है ... सरनेम लिखा नहीं है ... मुंबईका रहनेवाला है और पिएच डी कर रहा है ... उम्र है ... " निकिताने मानो किसी बातका क्लायमॅक्स खोलना हो ऐसा एक पॉज लिया.

ईशाकीभी अब जिज्ञासा जागृत हुई थी और वह निकिता उसकी उम्र क्या बताती है इसकी राह देखने लगी.

" पिएचडी? ... मतलब जरूर कोई बुढ़ा खुसट होना चाहिए ... मैने कहा था ना?"

" और उसकी उम्र है २५ साल ... " निकिताने मानो क्लायमॅक्स खोला था.

" तो नूर ए जन्नत मिस ईशा अब क्या किया जाए? निकिता उसे छेडते हुए बोली.

ईशाभी प्रयत्नपूर्वक आपना चेहरा भावनाविरहीत रखते हुए बोली, " तो फिर? ... हमें उसका क्या करना है ?"

" देने वाले अपना पैगाम देकर चले गए
करने वाले तो अपना इशारा कर चले गए
उधर बड़ा बुरा हाल है दिलके गलियारोंका
अब उन्हें इंतजार है बस आपके इशारोंका "

" वा वा क्या बात है ..." निकिता अपनेही शेरकी तारीफ करते हुए बोली, " अब क्या करना है इस मेलका? "

" करना क्या है ... डिलीट कर दो " ईशाने कंधे उचकाते हुए बेफिक्र अंदाजमें कहा ... मतलब कमसे कम वैसे जताते हुए कहा.

" डिलीट... नहीं इतना बड़ा सितम मत करो उसपर... एक काम करते है ... कोरे खत का जवाब कोरे खतसेही देते है ..."

निकिताने फटाफट कॉम्प्यूटरके किबोर्डके कुछ बटन्स दबाए और उस ब्लॉक मेलको ब्लॉक रिप्लाय भेज दिया.

ईशाने आज सुबह आए बराबर कुर्सीपर बैठकर कॉम्प्यूटर शुरू किया. कॉम्प्यूटर बुट होनेके बाद उसने चॅटींग विंडो ओपन किया और किसीका कोई ऑफलाईन मेसेज है क्या देखने लगी. किसीका भी ऑफलाईन मेसेज नहीं था. उसके चेहरेपर मायूसी छा गई लेकिन वह छिपाते हुए वह सामने टेबलपर रखे रिपोर्ट्स उलट पुलटकर देखने लगी. उसके टेबलके सामने निकिता बैठी थी. वह बड़ी गौरसे ईशाकी एक एक हरकत देख रही थी और मुस्कुरा रही थी. रिपोर्ट देखते हुए ईशाके यह बात ध्यानमें आगई तो झटसे उसने निकिताकी तरफ एक कटाक्ष डाला.

" क्या हुआ ... क्यों मुस्कुरा रही हो ?" ईशाने उसे पुछा.

निकिताभी बड़ी चतूराईसे अपने चेहरेके भाव छिपाकर गंभीर मुद्रा धारण करती हुई बोली,

" कहां... मैं कहा मुस्कुरा रही हूं ?... "

तभी ईशाके कॉम्प्यूटरका बझर बजा. ईशाने झटसे मुडकर अपने कॉम्प्यूटरके मॉनीटरकी तरफ देखा और फिरसे रिपोर्ट पढनेमें व्यस्त हो गई.

" दो दिनसे मैं देख रही हूं की जबभी चार्टिंगका बझर बजता है तुम सारे कामधाम छोडकर मॉनीटरकी तरफ देखती हो ... क्या किसीके मेसेजकी या मेलकी राह देख रही हो ? " निकिताने पुछा.

" नहींतो ?" ईशाने कहा और फिरसे अपने टेबलपर रखे रिपोर्ट पढनेमें व्यस्त होगई, या कमसे कम वैसे जतानेकी कोशीश करने लगी. कॉम्प्यूटरका बझर फिरसे बजा. ईशाने फिरसे छटसे मॉनीटरकी तरफ देखा और इस बार वह अपनी पहिएवाली कुर्सी झटकेसे घुमाकर कॉम्प्यूटरकी तरफ अपना रुख कर बैठ गई.

" यह जरूर अस्तित्व का मेसेज है " निकिता फिरसे उसे छेडते हुए बोली.

" किस अस्तित्व का ?" ईशाभी कुछ समझी नहीं ऐसा जताते हुए बोली.

" किस अस्तित्व का? ... वही जो उस दिन चॅटींगपर मिला था " निकिताभी उसे छोडनेके मुडमें नहीं थी.

" यह तुम इतने यकिनके साथ कैसे कह सकती हो ?" ईशाने कॉम्प्यूटरपर काम करते हुए पुछा.

" मॅडम आपके चेहरेकी लाली सब कुछ बता रही है " निकिता मुस्कुराते हुए बोली.

पहले तो ईशाके चेहरेपर चोरी पकड़ने जैसे झेंपभरे भाव आ गए. लेकिन झटसे अपने आपको संभालते हुए वह निकितापर गुस्सा होते हुए बोली.

" तूम जरा मेरा पिछा छोडोगी... कबसे मैं देख रही हो मेरे पिछेही पडी हो... उधर बाहर देखो ऑफिसके कितने काम पेंडींग पडे हुए है.... वह जरा देखके आओ.. जाओ .." ईशाने कहा.

ईशाका इशारा समझकर निकिता वहांसे उठ गई और मुस्कुराते हुए वहांसे चली गई.

निकिता जानेके बाद ईशाने झटसे कॉम्प्यूटर पर अभी अभी आया हुआ अस्तित्व का मेसेज खोला.

ईशाने कॉम्प्यूटरपर आया हुआ अस्तित्व का चॅटींग मेसेज खोला तो सही, लेकिन खोलते वक्त उसका दिल जोर जोरसे धडक रहा था. उसे अपने इस बेचैन स्थितीपर खुदही आश्चर्य हो रहा था. उसने झटसे उसने भेजा हुआ मेसेज पढा –

" हाय गुड मॉर्निंग ... हाऊ आर यू?" उसके मेसेज विंडोमें लिखा था.

वह कही उसमें फसती तो नहीं जा रही है – इस बातकी उसने तस्सल्ली करते हुए बडी सावधानीसे जवाब टाईप किया –

" फाईन..."

और अपने मनकी अधिरता वह भांप ना पाए इसलिए मनही मन सौ तक गिना और फिर काफी समय हो गया है इसकी तसल्ली करते हुए 'सेंड' बटनपर क्लीक किया.

" कल मैं बाहर गया था " उधरसे तूरंत अस्तित्व का मेसेज आ गया.

‘ तूम कल चॅटींगपर क्यो नहीं मिले ?’ इस ईशाके दिमागमें घुम रहे सवालका जवाब देकर उसने मानो उसके दिलका हाल जान लिया था ऐसा उसे लगा.

वह अपने मनको पढ तो नह सकता है? ...

ईशाके मन मे आया.

" अच्छा अच्छा " उसने भी खबरदारी के तौरपर अपनी रुखी रुखी प्रतिक्रिया व्यक्त की.

" और कुछ पुछोगी नही ?" उसने पुछा.

वह उसका मेसेज आनेके बाद जवाब देनेमें जानबुझकर देरी लगा रही थी, लेकिन उसके मेसेजेस तुरंत, मानो मेसेज मिलनेके पहलेही टाईप किए हो ऐसे जल्दी जल्दी आ रहे थे.

" तूमही पुछो " उसने रिप्लाय भेजा.

उसे लडकी देखनेके लिए लडका आनेके बाद, एक अलग कमरेमें जाकर जैसे बाते करते है, ऐसा लग रहा था.

" अरे हां उस दिन मैंने तुम्हे ब्लॉक मेल इसलिए भेजी थी की मुझे तुम्हारी कुछभी जानकारी नही... फिर क्या लिखता ?... लेकिन मेल भेजे बिना भी रहा नही जा रहा था ... इसलिए भेज दी ब्लॉक मेल.."

फिर उसनेही पहल करते हुए पुछा, " अच्छा तुम क्या करती हो? ... मेरा मतलब पढाई या जॉब?"

" मैंने बी. ई. कॉम्प्यूटर किया हूवा है ... और जी. एच. इन्फॉर्मॅटीक्स इस खुदके कंपनीकी मै फिलहाल मैनेजींग डायरेक्टर हूं " उसने मेसेज भेजा.

उसे पता था की चॅटिंगमें पहलेही खुदकी सच जानकारी देना खतरनाक हो सकता है. फिरभी वह खुदको रोक नही सकी, मानो जानकारी टाइप कर रही उंगलीयोंपर उसका कोई कन्ट्रोल नही रहा था.

" अरे बापरे!.. " उधरसे अस्तित्व की प्रतिक्रिया आ गई.

" तुम्हे तुम्हारे उम्रके बारेमें पुछा तो गुस्सा तो नही आएगा ?... नही ... मतलब मैंने कही पढा है की लडकियोंको उनके उम्रके बारेमें पुछना अच्छा नही लगता है. ... " उसने उसे बडी खबरदारीके साथ सवाल पुछा.

उसने भेजा , " २३ साल"

" अरे यह तो मुझे पताही था... मैंने तुम्हारे मेल आयडीसे मालूम किया था.... सच कहूं ? तूमने जब बताया की तूम मैनेजींग डायरेक्टर हो ... तो मेरे सामने एक ४५-५० सालके वयस्क औरतकी तस्वीर आ गई थी... " वह अब खुलकर बाते कर रहा था.

वह उसके खुले और मजाकिया अंदाजपर मनही मन मुस्करा रही थी. उसने उसके बारेमेंभी इंटरनेटपर सर्च कर जानकारी इकट्ठा की यह जानकर उसके खयालमें आगया था की वह भी उसके बारेमें उतनाही सिरीयस है.

"तूम्हने तुम्हारी उम्र नही बताई ?..." उसने सवाल किया.

"मैने मेरे मेल ऍड्रेसकी जानकारीमें ... मेरी असली उम्र डाली हुई है ..." उसका उधरसे मेसेज आया.

उसके इस जवाबसे उसे अहसास हुआ की वाकई वह बाकी लोगोसे कुछ हटके है.

अस्तित्व कॉम्प्यूटरके सामने बैठकर कुछ पढ़ रहा था. तभी उसका दोस्त धीरेसे, कोई आवाज ना हो इसका ध्यान रखते हुए, उसके पिछे आकर खड़ा हो गया. काफी समय तक विकास अस्तित्व का क्या चल रहा है यह समझनेकी कोशीश करते रहा.

"क्या गुरु... कहां तक पहुंच गई है तुम्हारी प्रेम कहानी ? " विकासने एकदमसे उसके कंधे झंझोरते हुए सवाल पुछा.

अस्तित्व तो एकदम चौंक गया और हडबडाहटमें मॉनीटरपर दिख रही विंडोज मिनीमाईझ करने लगा.

जोरसे ठहाका लगाते हुए विकासने कहा , " छुपाकर कोई फायदा नही ... मै सबकुछ पढ़ चुका हूं " .

अस्तित्व अपने चेहरेपर आए हडबडाहटके भाव छिपानेका प्रयास करते हुए फिरसे मॉनीटरपर सारी विंडोज मैक्सिमाईज करते हुए बोला, " देख तो .. उसने मेलके साथ क्या अटॅचमेंट भेजी है "

" मतलब आग बराबर दोनो तरफ लगी हुई है वैसे उस चिडीयाका कुछ नाम तो होगा... जिसने हमारे अस्तित्व का दिल उड़ाया है" विकासने पुछा.

" ईशा" अस्तित्व का चेहरा शर्मके मारे लाल लाल हुआ था.

" देख देख कितना शर्मा रहा है " विकास उसे छेड़ते हुए बोला.

" देखूतो ... क्या भेजा है उसने ?..." विकासने उसे आगे पुछा.

विकास बगलमें रखे स्टूलपर बैठकर पढ़ने लगा तो अस्तित्व उसे ईशाने अटॅच कर भेजे उस सॉफ्टवेअर प्रोग्रॅमके बारेमें जानकारी देने लगा –

" यह एक जॉपनीज सॉफ्टवेअर इंजीनियरने लिखा हुआ सॉफ्टवेअर प्रोग्रॅम है ... इस प्रोग्रॅमके लिए रिफ्लेक्शन टेक्नॉलॉजीजका इस्तेमाल किया गया है. जब हम कॉम्प्यूटरके मॉनीटरके

सामने बैठे होते है तब जो रोशनी अपने चेहरेपर पडती है वह अलग अलग रंगोंमें विभाजीत होकर मॉनिटरपर परावर्तीत होती है. इस सॉफ्टवेअर प्रोग्रॅमद्वारा परावर्तीत हुए रोशनीकी तिब्रता एकत्रीत कर उसे इस टेक्नॉलॉजीद्वारा फोटोग्राफमें परिवर्तीत किया जा सकता है. मतलब अगर आप इस प्रोग्रॅमको रन करोगे तो मॉनिटरपर पडे परिवर्तनके तिब्रताको एकत्रित कर यह प्रोग्रॅम आपका फोटो बना सकता है. लेकिन फोटो निकालते वक्त इतना ध्यान रखना पडता है की आप मॉनिटरके एकदम सामने, समांतर और समानांतर बैठे हुए है. मॉनीटर और आपके चेहरेमें अगर कोई तिरछा कोण होगा तो फोटो ठिकसे नहीं आएगा."

" मतलब यह सॉफ्टवेअर फोटो निकालता है ?" विकासने पुछा.

" हां ... यह देखो अभी अभी थोडी देर पहले मैने मेरा फोटो निकाला हूवा है " अस्तित्व ने कॉम्प्यूटरपर उसका अपना फोटो खोलकर दिखाया.

" अरे वा... एकदम बढीया ... अगर ऐसा है तो हमे कॅमेरा खरीदनेकी जरूरतही नहीं पडेगी. " विकासने खुशीके मारे कहा.

" वही तो .."

" रुको ... मुझे जरा देखने दो ... मै मेरा फोटो निकालता हूं .." विकास मॉनीटरके सामनेसे अस्तित्व को उठाते हुए खुद उस स्टूलपर बैठते हुए बोला.

विकासने स्टूलपर बैठकर माऊस कर्सर मॉनीटरपर इधर उधर घुमाते हुए पुछा, " हां अब क्या करना है. ?"

" कुछ नहीं ... सिर्फ वह स्नॅपका बटन दबावो ... लेकिन रुको .. पहले सिधे ठिकसे बैठो..." अस्तित्व ने कहा.

विकास सिधा बैठकर माऊसका कर्सर 'स्नॅप' बटनके पास ले जाकर बटन दबाने लगा.

" स्माईल प्लीज " अस्तित्व ने उसे टोका.

विकासने अपने चेहरेपर जितनी हो सकती है उतनी हंसी लानेकी कोशीश की.

" रेडी ... नाऊ प्रेस द बटन" अस्तित्व

विकासने 'स्नॅप' बटनपर माऊस क्लीक किया. मॉनीटरवर एक-दो पलके लिए निला 'प्रोसेसींग' बार आगे बढता हूवा दिखाई दिया और फिर मॉनीटरपर फोटो दिखाई देने लगा. जैसेही मॉनीटरवर फोटो आगया अस्तित्व जोर जोरसे हंसने लगा और विकासका चेहरा तो

देखने लायक हो गया था. मॉनीटरपर एक हंसते हुए बंदरका फोटो आ गया था.

दिनबदीन ईशा और अस्तित्व का चॅटींग, मेल करना बढताही जा रहा था. मेलकी लंबाई चौड़ाई बढ रही थी. एकदुसरेको फोटो भेजना, जोक्स भेजना, पझल्स भेजना ... मेल भेजनेके न जाने कितने बहाने उनके पास थे. धीरे धीरे ईशा को अहसास होने लगा था की वह उससे प्यार करने लगी है. लेकिन प्यार का इजहार उसने अस्तित्व के पास या अस्तित्व ने ईशाके पास कभी नहीं किया था. उनके हर मेलके साथ... मेल मे लिखे हर वाक्य के साथ... उनके हर फोटो के साथ... उनके व्यक्तीत्व का एक एक पहलू उन्हे पता चल रहा था. और उतनी ही वह उसमें डूबती जा रही थी. ईशाने भी अपने आपको कभी रोका नहीं. या यू कहीए खुद को रोकने से खुदको उसके प्यारमें पुरी तरह डूबनेमें ही उसे आनंद मिल रहा हो. लेकिन प्यारके इजहार के बारे में वह बहुत फूंक फूंककर अपने कदम आगे बढा रही थी. उसके पास बहाना था की उसने अब तक उसे आमने सामने देखा नहीं था. वैसे उसके प्रेम का अहसास उसे नहीं था ऐसे नहीं. लेकिन अस्तित्व भी प्यारके इजहारके बारेमें शायद उतनाही खबरदारी बरत रहा था. शायद उसने भी उसे अबतक आमने सामने न देखनेके कारण. वह मिलनेके बाद मुकर तो नहीं जाएगा? इसके बारेमें वह एकदम बेफिक्र थी. क्यो की विश्वामित्रको भी ललचाए ऐसा उसका सौंदर्य था.

ईशा अपने कॉम्प्यूटरपर चाटींग कर रही थी और उसके टेबलके सामने कुर्सीपर निकिता बैठी हुई थी. कॉम्प्यूटरपर आई एक मेल पढते हुए ईशा बोली,

" निकिता देख तो अस्तित्व ने मेलपर क्या भेजा है? "

निकिता कुर्सीसे उठकर ईशाके पिछे जाकर खडी होगई और मॉनिटरकी तरफ ध्यान देकर देखने लगी. इन दिनो वैसे अस्तित्व और ईशाका कुछ ना कुछ आदान प्रदान चलता ही रहता था. और निकिताको भी उनका प्रेमभरा आदान प्रदान देखने में या पढनेमें बडा मजा आता था. उसने मॉनीटरपर देखा की एक छोटा चायनीज बच्चा बडे मजेदार तरीकेसे डांस कर रहा था. डांस करते हुए वह बच्चा एकदमसे शूशू करने लगा तो दोनोही बडी जोरसे हंसने लगी.

" पता नहीं वह कहां कहांसे यह सब ढूंढता है . " ईशाने कहा.

" सही है... मै तो इंटरनेटपर कितना सर्फ करती हूं लेकिन यह एनिमेशन अबतक मेरे देखनेमें कैसे नहीं आया. " निकिताने कहा.

तभी एक बुजुर्ग आदमी दरवाजेपर नॉक कर अंदर आया. वह आदमी आतेही ईशाने अपनी पहिेवाली कुर्सी घुमाकर अपना ध्यान उस आदमीपर केंद्रीत किया. निकिता वहांसे बाहर चली गई. वह बुजुर्ग आदमी टेबलके सामने कुर्सीपर बैठतेही ईशाने कहा,

" बोलो रमेशजी.. "

" मॅडम ... "क्लीन वेसल" कंपनीने अपने सारे कोलॅबरेटर्स के साथ एक मिटींग रखी है. अभी थोड़ीही देर पहले उनका फॅक्स आया है.... उन्होंने मिटींगका दिन और व्हेन्यू हमें भेजा है ... और साथही मिटींगका अजेंडाभी भेजा है. ..." आनंदजीने जानकारी दी.

" कब रखी है मिटींग ?" ईशाने पुछा.

" मुंबई ... २५ तारखको ... यानीकी .. इस सोमवारको " आनंदजीने कॅलेडरकी तरफ देखते हुए कहा.

ईशाभी कॅलेंडरकी तरफ देखते हुए कुछ सोचते हुए बोली,

" ठिक है कन्फर्मेशन फॅक्स भेज दो ... और दीपिकाको मेरे सारे फ्लाईट और होटल बुकींग डिटेल्स दे दो"

" ठिक है मॅडम" आनंदजी उठकर खडे होते हुए बोले.

जैसे आनंदजी वहांसे चले गए वैसे ईशाने अपनी पहिएवाली कुर्सी घुमाकर अपना ध्यान कॉम्प्यूटरपर केंद्रीत कर दिया. उसके चेहरेपर खुशी समाए नहीं समा रही थी. झटसे उसने मेल प्रोग्रॅम खोला और जल्दी जल्दी वह मेल टाईप करने लगी –

" अस्तित्व ... ऐसा लगता है की जल्दीही अपने नसिबमें मिलना लिखा है ...पुछो कैसे? लेकिन मैं अभी नहीं बताऊंगी. क्योंकि कुछ तो क्लायमॅक्स रहना चाहिए ना ? अगले मेलमे सारे डिटेल्स भेजूंगी ... बाय फॉर नाऊ... टेक केअर .. —ईशा..."

ईशाने फटाफट कॉम्प्यूटरके दो चार बटन्स दबाकर आखिर ऐन्टर दबाया. कॉम्प्यूटरके मॉनीटरपर मेसेज आ गया – ‘मेल सेन्ट’

अस्तित्व सायबर कॅफेमें अपने कॉम्प्यूटरपर बैठा था. फटाफट हाथकी सफाई किए जैसे उसने गुगल मेल खोलतेही उसे ईशाकी मेल आई हुई दिखाई दी. उसका चेहरा खुशीसे दमकने लगा. उसने एक पलभी ना गवांते हुए झटसे डबल क्लीक करते हुए वह मेल खोली और उसे पढ़ने लगा -

" अस्तित्व ... २५ तारीख को सुबह बारा बजे मैं एक मिटींगके सिलसिलेमें मुंबई आ रही हूं ... १२.३० बजे तक हॉटेल ओबेराय पहुँचूंगी... और फिर फ्रेश वगैरे होकर १.०० बजे मिटींग अटेंड करूंगी.... मिटींग ३ से ४ बजेतक खत्म हो जाएगी ... तुम मुझे बराबर ५.०० बजे वसोंवा बिचपर मिलना ... बाय फॉर नॉऊ... टेक केअर"

अस्तित्व ने मेल पढ़ी और खुशीके मारे खड़ा होकर " यस्स..." करके चिल्लाया.

सायबर कॅफेमें बैठे बाकी लोग क्या होगया करके उसकी तरफ आश्चर्यसे देखने लगे. जब उसने होशमें आकर बाकी लोगोंको अपनी तरफ आश्चर्यसे ताकते पाया वह शर्माकर निचे बैठ गया.

वह फिरसे अपने रिसर्चके सिलसिलेमें गुगल सर्च ईंजीनपर जानकारी ढुंढने लगा. लेकिन उसका ध्यान किसी चिजमें नहीं लग रहा था. कब एक बार वह दिन आता है , कब ईशा मुंबईको आती है और कब उसे वह वसोंवा बिचपर मिलता है ऐसा उसे हो गया था.

‘ वसोंवा बिच’ दिमागमें आगया लेकिन उस बिचकी तस्वीर उसके जहनमें नहीं आ रही थी. वसोंवा बिचका नाम उसने सुना था लेकिन वह कभी वहां नहीं गया था. वैसे वह मुंबईमें रहकर पिएचडी कर तो रहा था लेकिन वह जादातर कभी घुमता नहीं था. मुंबईमें वह वैसे पहले पहले काफी घुमा था. लेकिन वसोंवा बिचपर कभी नहीं गया था. अब यहां सायबर कॅफेमें बैठे बैठे क्या करेंगे यह सोचकर उसने गुगल सर्च ओपन किया और उसपर ‘वसोंवा बिच’ सर्च स्ट्रींग दिया. इंटरनेटपर काफी जानकारी फोटोज और जानेके रास्ते मॅप्स अवतरीत हुए . उसने वह जानकारी पढ़कर जानेका रास्ता तय किया. अब और क्या करना चाहिए ? उसका दिमाग सुन्न हो गया था. चलो उसने भेजी हुई पुरानी मेल्स पढ़ते है और उसने भेजे हुए फोटोज देखते है ऐसा सोचकर वह एक एक कर उसकी पुरानी मेल्स खोलने लगा. मेल्सकी तारीखसे उसके खयालमें आ गया की उनका यह ‘सिलसिला’ वैसे जादा पुराना नहीं था. आज लगभग १ महिना हो गया था जब वह पहली बार उसे चॅटींगपर मिल गई थी. लेकिन उसे उनकी पहचान कैसे कितनी पुरानी लग रही थी. उन्होंने एकदुसरेको भेजे मेल्स और फोटोजसे वैसे उन्हे एक दुसरेको जाननेका मौका मिला था और एक दुसरेके जहनमें उन्होंने एक दुसरेकी एक तस्वीर बना रखी थी. वैसे उन्होंने एकदुसरे के स्वभावकाभी एक अंदाजा लगाकर अपने अपने मनमें बसाया था.

‘ वह अपने कल्पनानुसारही होगी की नहीं ?’ उसके दिमागमें एक प्रश्न उपस्थित हुवा.

या मिलनेके बाद मैने सोचे इसके विपरीत कोई अनजान... कोई कभी ना सोची होगी ऐसी एक व्यक्ति अपने सामने खड़ी हो जाएगी...

‘ चलो आम्ने सामने मिलनेके बाद कमसे कम यह सब शंकाएं मिट जाएंगी ‘ उसने उसका फोटो अल्बम देखते हुए सोचा.

अचानक उसे उसके पिछे कोई खड़ा है ऐसा अहसास हो गया. उसने पलटकर देखा तो विकास एक नटखट मुस्कुराहट धारण करते हुए उसकी तरफ देख रहा था.

" साले बस बात यहीतक पहुँची है... तो यह हाल है ... तुझे आजुबाजुकाभी कुछ दिखता नहीं... शादी होनेके बाद पता नहीं क्या होगा?" विकासने उसे छेड़ते हुए कहा.

" अरे... तुम कब आए ?" अस्तित्व अपने चेहरेपर आए हडबडाहटके भाव छुपाते हुए बोला.

" कमसे कम पुरा आधा घंटा हो गया होगा... ऐसा लगता है शादी होनेके बाद तु हमें जरूर भुल जाएगा " विकास फिरसे उसे छेड़ते हुए बोला.

" अरे नहीं यार... ऐसा कैसे होगा ?... कमसे कम तुम्हे मै कैसे भूल पाऊंगा ?" अस्तित्व उसके सामने आए हुए तोंदमें मुक्का मारनेका अविर्भाव करते हुए बोला.

ईशा वसोंवा बीचपर आकर अस्तित्व की राह देखने लगी. उसने फिरसे एकबार अपनी घड़ीकी तरफ देखा. अस्तित्व के आनेको अभी वक्त था. इसलिए उसने समुंदरके किनारे खड़े होकर दुरतक अपनी नजरे दौड़ाई. नजर दौड़ाते हुए उसके विचार का चक्र भूतकालमें चला गया. उसके दिलमें अब उसकी बचपनकी यादे आने लगी...

वसोंवा बीच यह ईशाका मुंबईमें स्थित पसंदीदा स्थान था. बचपनमें वह उसके मां बापके साथ यहां अक्सर आया करती थी. उसे उसके मां बाप की आज बहुत याद आ रही थी. भलेही आज वह समुंदर का किनारा इतना साफ सुधरा नहीं था लेकिन उसके बचपनमें वह बहुत साफ सुधरा रहा करता था. सामने समुंदरके लहरोंका आवाज उसके दिलमें एक अजीबसी कसक पैदा कर रहा था.

उसने अपने कलाईपर बंधे घड़ीकी तरफ फिरसे देखा. अस्तित्व को उसने शामके पांचका वक्त दिया था.

पांच तो कबके बज चूके थे ... फिर वह अबतक कैसे नहीं पहुँचा ?...

उसके जहनमें एक सवाल उठा ...

कहीं ट्रैफिकमें तो नहीं फंस गया? ...

मुंबईकी ट्रैफिक में कब कोई और कहां फंस जाएं कुछ कहा नहीं जा सकता....

उसने लंबी आह भरते हुए फिरसे चारों ओर अपनी नजरे दौड़ाई.

सामने किनारेपर एक लडका समुंदरके किनारे रेतके साथ खेल रहा था. वह देखकर उसके विचार फिरसे भूतकालमें चले गए और फिर एक बार उसकी बचपनकी यादोंमें डूब गए.

वह तब लगभग १२-१३ सालकी होगी.जब वह अपने मां और पिताके साथ इसी बीचपर आई थी. वह लडका जहां खेल रहा था, लगभग वही कहीं रेतका किला बना रहे थे. तभी उसके पिताने कहा था,

" देखो ईशा उधर तो देखो..."

समुंदर के किनारे एक लडका कुछ चिज समुंदरके अंदर दुरतक फेंकनेका जीतोड प्रयास कर रहा था. वह लेकिन समुंदरकी लहरे उस चिजको फिरसे किनारेपर वापस लाती थी. वह लडका बार बार उस चिजको समुंदरमें बहुत दुरतक फेंकनेकेका प्रयास करता था और बार बार वह

लहरें उस चिजको किनारेपर लाकर छोडती थी.

फिर उसके पिताजीने ईशासे कहा –

" देखो ईशा वह लडका देखो ... वह चिज वह समुंदरमें फेकनेकी कोशीश कर रहा है और वह वस्तू बार बार किनारेपर वापस आ रही है... अपने जिवनमेंभी दुःख और सुखका ऐसेही होता है... आदमी जैसे जैसे अपने जिवनमें आए दुखको दुर करनेका प्रयास करता है... उस वक्त के लिए लगता है की दुख चला गया है और वह फिरसे वापस कभी नहीं आएगा... लेकिन दुखका उस चिज जैसाही रहता है ... जितना तुम उसे दुर धकेलनेकी कोशीश करो वह फिरसे उतनेही जोरसे वापस आता है... अब देखो वह लडका थोडी देर बाद अपने खेलनेमें व्यस्त हो जाएगा... और वह उस चिजको पुरी तरहसे भूल जाएगा... फिर जब उसे उस चिजकी याद आएगी... वह चिज किनारेपर ढूँढकरभी नहीं मिलेगी... वैसेही आदमीने अगर दुखको जादा महत्व ना देते हूए ... सुख और दूखका एकही अंदाजसे सामना किया तो उसे दुखसे तकलिफ नहीं होगी... ..देअर विल बी पेन बट टू सफर ऑर नॉट टू सफर वील बी अप टू यू!"

उसे याद आ रहा था की उसके पिता कैसे उसे छोटी छोटी बातोंसे बहुत कुछ सिखकी बाते कह जाते थे.

जब ईशा अपनी पुरानी यादोंसे बाहर आ गई, उसके सामने अस्तित्व खड़ा था. उंचा, गठीला शरीर, चेहरेपर हमेशा मुस्कान और उसकी हर एक हरकतसे दिखता उसका उत्साह. उसने देखे उसके फोटोसे वह बहुत अलग और मोहक लग रहा था. वे एकदूसरेसे पहली बारही मिल रहे थे इसलिए दोनोंके चेहरे खुशीसे दमक उठे थे. दोनों एकदूसरे की तरफ सिर्फ एकटक देखने लगे.

ईशा और अस्तित्व दोनों न जाने कितनी देर सिर्फ एक दुसरे की तरफ ताक रहे थे. भलेही वे एकदूसरे को एक महिने से जानते थे लेकिन वे एक दुसरे के सामने पहली बार आ रहे थे. वैसे वे एकदूसरे को सिर्फ जानते ही नहीं थे तो उन्होंने एक दुसरेको अच्छी तरह से समझ लिया था. एकदूसरे के स्वभाव की खुबीयां या खामीयां वे भली भांती जानते थे. फिरभी एक दुसरे के सामने आते ही उन्हें क्या बोले कुछ समझ नहीं आ रहा था. वे इतने चूप थे की मानो दो-दो तिन-तिन पेजेस की मेल करनेवाले वे हम ही है क्या? ऐसी उन्हें आशंका आए. आखिर अस्तित्व ने ही पहल करते हुए शुरुवात की,

"ट्रैफिकमें अटक गया था... इसलिए देर हो गई ..."

"मैं तो साडेचार बजेसेही तुम्हारी राह देख रही हूं..." ईशाने कहा.

"लेकिन तूम्हने तो पांच का वक्त दिया था. " अस्तित्व ने कहा.

सिर्फ शुरु करनेकी ही देरी थी, अब वे आपस में अच्छे खासे घुल मिलकर बातें करने लगे, मानो इंटरनेट पर चॅटिंग कर रहे हो. बातें करते करते वे धीरे धीरे बीचके रेतपर समुंदरके किनारे किनारे चलने लगे. चलते चलते कब उनके हाथ एकदूसरे में गुथ गए, उन्हें पताही नहीं चला. न जाने कितनी देर तक वे एक दुसरेके हाथ पकडकर बीचपर घुम रहे थे.

सुर्यास्त हो चुका था और अब अंधेराभी छाने लगा था. बिचमेंही अचानक रुककर, गंभीर होकर अस्तित्व ने कहा,

"ईशा... एक बात पुछू?"

उसने आखोंसेही मानो हा कह दिया.

"मुझसे शादी करोगी?" उसने सिधे सिधे पुछा.

उसके इस अनपेक्षित सवालसे वह एक पल के लिए गडबडासी गई. अपने गडबडाए हालातसे संभलकर उसने कुछ ना बोलते हुए अपनी गर्दन निचे झुकाई.

अस्तित्व का दिल अब जोरजोरसे धडकने लगा था.

मैंने बड़ा ढाँढस कर यह सवाल तो पुछा....

लेकिन वह 'हां' कहेगी या 'नहीं' ?...

वह उसके जवाबकी प्रतिक्रिया करने लगा.

मैंने यह सवाल पुछनेमें कुछ जल्दी तो नहीं कर दी ?...

उसने अगर 'नहीं' कहा तो ?...

उसके जहनमें अलग अलग आशंकाएं आने लगी.

थोड़ी देरसे वह बोली,

" चलो हमें निकलना चाहिए .."

उसने बोलने के लिए मुंह खोला तब उसका दिल जोर जोरसे धडकने लगा था.

लेकिन यह क्या ... वह उसके सवालके जवाबसे बच रही थी....

लेकिन वह एक पीएचडी का छात्र था. किसी भी सवाल के जवाब का पिछा करना उसके खुनमें ही भिना हुआ था.

" .. तूम्ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया .." उसने उसे टोका.

" चलो मैं तुम्हे छोड आती हूं " वह फिर से उसके सवाल के जवाब से बचते हुए बोली.

लेकिन वहभी कुछ कम नहीं था.

" अभी तक तूम्ने मेरे सवालका जवाब नहीं दिया "

वह शर्मके मारे चूर चूर हो रही थी. उसकी गर्दन झुकी हुई थी और उसका गोरा चेहरा शर्मके मारे लाल लाल हुआ था. वह अपनी भावनाएं छुपानेके लिए पैर के अंगुठेसे जमीन कुरेदने लगी.

" मैंने थोड़ी ना कहा है " वह किसी तरह, अभीभी अपनी गर्दन निची रखते हुए बोली.

अपने मुंहसे वह शब्द बाहर पडे इसका उसे खुदको ही आश्चर्य लग रहा था. अस्तित्व का अब तक मायूस हुआ चेहरा एकदम से खुशीके मारे खिल उठा. उसे इतनी खुशी हुई थी की वह उसे कैसे व्यक्त करे कुछ समझ नहीं पा रहा था. उसने अपने आपको ना रोक पाकर उसे अपने

बाहोंमें कसकर भरकर उपर उठा लिया.

ईशा गाडी ड्राईव कर रही थी और गाडीमें आगे उसके बगलकीही सिटपर अस्तित्व बैठा हुआ था. गाडीमें काफी समयतक दोनो अपने आपमें खोए हुए गुमसुमसे बैठे हुए थे.

सच कहा जाए तो अस्तित्व उसने सोचा उससे भी जादा चुस्त , तेज तर्रार और देखनेमें उमदा है ... और उसका स्वभाव कितना सिधा और सरल है ...

पहलेही मुलाकातमें शादीके बारेमें सवाल कर उसने अपनी भावनाएं जाहिर की यह एक तरहसे अच्छा ही हुवा.. सच कहा जाए तो उसने वह सवाल पुछकर मुझेभी उसके बारेमें अपनी भावनाएं व्यक्त करनेका मौका दिया है...

उसे अब उसके बारेमें एक अपनापन महसूस हो रहा था. उसने अब उसमें अपना भावी सहचारी ... एक दोस्त... जो हमेशा दुख और सुखमें उसका साथ देगा ... देखना शुरु किया था.

उसने सोचते हुए उसकी तरफ एक कटाक्ष डाला. उसनेभी उसकी तरफ देखकर एक मधूर मुस्कुराहट बिखेरी.

लेकिन अब वहभी अपनेही बारेमें सोच रहा होगा क्या?...

" तूम पढाई वैगेरा कब करते हो... नही .. मतलब .. हमेशा तो चॅटींग और इंटरनेटपरही बिझी रहते हो " ईशा कुछ तो बोलना है और अस्तित्व को थोडा छेडनेके उद्देश्यसे बोली.

अस्तित्व उसके छेडनेका मुड पहचानकर सिर्फ मुस्कुरा दिया.

" हालहीमें तुम्हारे कंपनीका प्रोग्रेस क्या कहता है ? " अस्तित्व ने पुछा.

" अच्छा है ... क्यों?... हमारी कंपनी तो दिनबदीन प्रोग्रेस करती जा रही है " ईशाने कहा.

" नही मैंने सोचा ... हमेशा चॅटींग और इंटरनेटपर बिझी होनेसे उसका असर कंपनीके कामपर हुवा होगा. ... नही?" अस्तित्व भी उसे वैसाही नटखट जवाब देते हुए बोला.

वहभी उसके तरफ देखकर सिर्फ हंस दी. वह उसके इस बातोंमें उलझानेके खुबीसे वाकीफ थी और उसे उसका इस बारेमें हमेशा अभिमान रहा करता था.

ईशाकी गाडी एक आलीशान हॉटेलके सामने – हॉटेल ओबेरायके सामने आकर रुकी. गाडी

पार्कींगमें ले जाकर ईशाने कहा, " एक मिनीट मै मेरा मोबाईल हॉटेलमें भूल गई हूं ... वह झटसे लेकर आती हूं और फिर हम निकलेंगे... नहीं तो एक काम कर सकते है ... कुछ ठंडा या गरम हो जाए तो मजा आ जाएगा ... नहीं?... और फिर निकलेंगे " ईशा गाडीके निचे उतरते हुए बोली.

ईशा उतरकर हॉटेलमें जाने लगी और अस्तित्व भी उतरकर उसके साथ हो लिया.

हॉटेलका सुईट जैसे जैसे नजदिक आने लगा, वैसे एक अन्जानी भावनासे ईशाके दिलकी धडकन तेज होने लगी थी. एक अनामिक डरने मानो उसे घेर लिया था. अस्तित्व भलेही उसके पिछे पिछे चल रहा था लेकिन उसके सासोंकी गति विचलीत हो चुकी थी. ईशाने सुईटका दरवाजा खोला और अंदर चली गई.

अस्तित्व दरवाजेमेही इधर उधर करता हुवा खडा हो गया.

" अरे आवोना अंदर आवो " ईशा उनके बिच बनी, असहजता, एक तणाव दूर करनेका प्रयास करती हुई बोली.

" बैठो " ईशा उसे बैठनेका इशारा करती हुई बोली और वही कोनेमें रखा फोन उठानेके लिए उसके पासही बैठ गई.

ईशाने अस्तित्व के पास रखा हुवा फोन उठानेके लिए हाथ बढ़ाया और बोली, " क्या लोगे ठंडा या गरम"

फोन उठाते हुए ईशाके हाथका हल्कासा स्पर्श अस्तित्व को हुवा था. उसका दिल जोर जोरसे धडकने लगा. ईशाको भी वह स्पर्श आल्हाददायक और अच्छा लगा था. लेकिन चेहरेपर वैसा कुछ ना बताते हुए उसने ऑर्डर देनेके लिए फोनका क्रेडल उठाया.

फोनका नंबर डायल करनेके लिए अब उसने अपना दुसरा हाथ बढ़ाया. इसबार इस हाथकाभी हल्कासा स्पर्श अस्तित्व को हुवा. इस बार वह अपने आपको रोक नहीं सका. उसने ईशाने आगे बढ़ाया हुवा हाथ हल्केही अपने हाथमें लिया. ईशा उसकी तरफ देखकर शर्माकर मुस्कुराई. उसे वह हाथ उसके हाथसे छुडाकर लेना नहीं हो रहा था. मानो वह हाथ सुन्न हो गया हो. अस्तित्व ने अब वह हाथ कसकर पकडकर उसे खिंचकर अपनी बाहोंमें भर लिया. सबकुछ कैसे तेजीसे घट रहा था और वह सब ईशाकोभी अच्छा लग रहा था. उसका पुरा बदन गर्म हो गया था और होंठ कांपने लगे थे. अस्तित्व नेभी अपने गर्म और बेकाबू हुए होंठ उसके कांपते होंठोपर रख दिए. ईशाका एक मन प्रतिकार करनेके लिए कह रहा था. लेकिन दुसरा मन तो विद्रोही होकर सारी मर्यादाएं तोडने निकला था. वह उसपर हावी होता जा रहा था और ईशाकी मानो होशोहवास खोए जैसी स्थिती हो गई थी. अस्तित्व ने उसे झटसे अपने मजबुत बाहोंमें उठाकर बगलमें रखे बेडपर लिटाया. उसके उस उठानेमें उसे एक आधार देनेवाली मर्दानी और हक जतानेवाली भावना दिखी इसलिए वह इन्कारभी नहीं कर सकी. या यू कहिए उसके पास प्रतिकार करनेके लिए कुछ शक्तीही नहीं बची थी.

उसे उसका वह सवाल याद आगया, " ईशा मुझसे शादी करोगी ?"

और उसे अपना जवाबभी याद आगया, " मैंने ना थोड़ीही कहा है "

उसे अब उसके बाहोमें एक सुरक्षा का अहसास हो रहा था. वहभी अब उसके हर भावनाको उतनीही उत्कटतासे प्रतिसाद दे रही थी.

" अस्तित्व आय लव यू सो मच" उसके मुंहसे शब्द बाहर आ गये.

" आय टू" अस्तित्व मानो उसके गलेका चुंबन लेते हुए उसके कानमें कह रहा था.

धीरे धीरे उसका मजबुत मर्दानी हाथ उसके नाजूक बदनसे खेलने लगा. और वहभी किसी लतीका की तरह उसको चिपककर अपने भविष्यके आयुष्यका सहारा ढुंढ रही थी.

‘ हां मै ही तुम्हारे आगेके आयूष्य का सहारा ... साथीदार हुं ‘ इस हकसे अब वह उसके बदनसे एक एक कपडे हटाने लगा था.

‘ हां मैने भी अब तुम्हे सब कुछ अर्पन कर दिया है .. ‘ इस विश्वास के साथ समर्पन करके वहभी उसके शरीर से एक एक कपडे हटाने लगी.

ईशा अचानक हडबडाकर निंदसे जाग गई. उसने बेडपर बगलमें देखा तो वहा अस्तित्व निर्वस्त्र अवस्थामें चादर बदनपर ओढे गहरी निंद सो रहा था. लेकिन निंदमें भी उसका एक हाथ ईशाके निर्वस्त्र बदनपर था. इतने दिनोंमे रातको अचानक बुरे सपनेसे जगनेके बाद उसे पहली बार उसके हाथका एक बडा सहारा महसूस हुवा था.

ईशा चिंताग्रस्त अवस्थामें अपनी कुर्सीपर बैठी थी. उसके टेबलके सामनेही निकिता बैठी हुई थी. अस्तित्व के साथ बिताया एक एक पल याद करते हुए पिछले तिन कैसे बित गए ईशाको कुछ पता ही नहीं चला था. लेकिन आज उसे चिंता होने लगी थी.

" आज तिन दिन हो गए ... ना वह चार्टिंगपर मिल रहा है ना उसकी कोई मेल आई है." ईशाने निकितासे चिंताभरे स्वरमें कहा.

एक दिनमें न जाने कितनी बार चर्टींगपर चॅट करनेवाला और एक दिनमें न जाने कितनी मेल्स भेजनेवाला अस्तित्व अब अचानक तिन दिनसे चूप क्यों होगया? सचमुछ वह एक चिंताकी ही बात थी.

" उसका कोई कॉन्टॅक्ट नंबर तो होगाना ?" निकिताने पुछा.

" हां है... लेकिन वह कॉलेजका नंबर है... लेकिन वहां फोन कर उसके बारेमें पुछना उचीत होगा क्या ?" ईशाने कहा.

" हा वह भी है " निकिताने कहा.

" मुझे चिंता है ... कही वह मेरे बारेमें कुछ गलत सलत सोचकर ना बैठे ... और अगर वैसा है तो पता नही वह मेरे बारेमें क्या सोच रहा होगा ... " ईशाने मानो खुदसेही सवाल किया.

हॉटेलमें जो हुवा वह नही होना चाहिए था ...उसकी वजहसे शायद वह अपने बारेमें कुछ गलत सोच रहा होगा....लेकिन जोभी हुवा वह कैसे ... अचानक... दोनोंको कोई मौका दिए बिना हो गया...मैने उसे हॉटेलमें बुलाना ही नही चाहिए था...उसे अगर हॉटेलमें नही बुलाया होता तो यह घटना घटी ही नही होती...

ईशाके दिमागमें पता नही कितने सवाल और उनके जवाब भिड कर रहे थे.

" मुझे नही लगता की वह तुम्हारे बारेमें कुछ गलत सोच रहा होगा... वह दुसरेही किसी कारणवश तुम्हारे संपर्कमें नही होगा... जैसे किसी महत्वपुर्ण कामके सिलसिलेमें वह किसी बाहर गाव गया होगा...." निकिता ईशाके दिलको समझाने बहलानेकी कोशीश करते हुए बोली.

लेकिन अंदरसे वहभी उतनीही चिंतातुर थी. ईशाने निकिताको हॉटेलमें घटीत घटनाके बारेमें विस्तारसे बताया मालूम हो रहा था. वैसे वह उसे अपनी बहुत करीबी दोस्त मानती थी और उससे निजी बातेंभी नही छुपाती थी.

" उसे हॉटेलके अंदर बुलाया नहीं होता तो शायद यह नौबत नहीं आती " ईशाने कहा.

" नहीं नहीं वैसा कुछ नहीं होगा... पहले तुम अपने आपको बिना मतलब कोसना बंद करदो... " निकिता उसे समझानेकी कोशीश करती हुई बोली.

दीपिकाने जल्दी जल्दी उसके सामनेसे गुजर रहे आनंदजीको रोका.

"आनंदजी आपने निकिताको देखा क्या ?" दीपिकाने पुछा.

" हां .. वह उपर विकासके पास बैठी हुई है ... क्यो क्या हुवा ?" आनंदजीने दीपिकाका चिंतासे ग्रस्त चेहरा देखकर पुछा.

" कुछ नहीं... ईशा मॅमने उसे तुरंत बुलानेके लिए कहा है .. आप उधरही जा रहे हो ना ... तो उसे ईशा मॅमके पास तुरंत भेज देंगे प्लीज... कुछ महत्वपूर्ण काम लगता है " दीपिका आनंदजीसे बोली.

" ठिक है ... मै अभी भेज देता हूं .." आनंदजी सिढीयां चढते हुए बोले.

निकिताको आनंदजीका मेसेज मिलतेही वह तुरंत ईशाके कॅबिनमें गई. देखती है तो ईशा हताश, निराश दोनो हाथोंके बिच टेबलपर अपना सर रखकर बैठी थी.

" ईशा क्या हुवा ?" ईशाको उस अवस्थामें बैठी हुई पाकर निकिताने चिंताभरे स्वरमें, उसके पास जाकर, उसके पिठपर हाथ सहलाते हुए पुछा.

उसने उसे इतना हताश और निराश, और वह भी ऑफीसमें कभी नहीं देखा था.

ऐसा अचानक क्या हुवा होगा?...

निकिता सोचने लगी. ईशाने धीरेसे अपना सर उठाया. उसके हर हरकतमें एक धीमापन और दर्द दुख का अहसास दिख रहा था. उसका चेहराभी उदास दिख रहा था.

हां उसके पिताजी जब अचानक हार्ट अटॅकसे गुजर गए थे तबभी वह ऐसीही दिख रही थी....

धीरेसे अपना चेहरा कॉम्प्यूटरके मॉनीटरकी तरफ घुमाते हुए ईशा बोली, " निकिता... सब कुछ खतम हो चुका है "

कॉम्प्यूटरका मॉनीटर शुरुही था. निकिताने झटसे नजदिक जाकर कॉम्प्यूटरपर क्या चल रहा है यह देखा. उसे मॉनीटरपर अस्तित्व की ईशाने खोली हुई मेल दिखाई दी. निकिता वह मेल पढने लगी –

" मिस ईशा... हाय... वुई हॅड अ नाईस टाईम ... आय रिअली ऍन्जॉइड इट.. खुशीसे और तुम्हारे प्यारकी वर्षावसे भिगे हुए वह पल मैंने मेरे दिलमें और मेरे कॅमेरेमें कैद करके रखे है... मैं तुम्हारी माफी चाहता हूं की वे पल मैंने तुम्हारे इजाजतके बिना कॅमेरेमें बंद किये है ... वह पल थे ही ऐसे की मैं अपने मोहको रोक नहीं सका.... तुम्हे झूट तो नहीं लग रहा है न? .. देखो ... उन पलोंसे एक चुने हुए पलको मैंने इस फोटोग्राफके स्वरूपमें तुम्हारे मेलके साथ अटॅच करके भेजा है.... ऐसे बहुतसे पल मैंने मेरे कॅमेरेमें और मेरे हृदयमें कैद कर रखे है ... सोचता हूं की उन पलोंको .. इन फोटोग्राफ्सको इंटरनेटपर पब्लीश कर दूं .. क्यो कैसी दिमागवाली आयडिया है ? है ना? ... लेकिन यह तुम्हे पसंद नहीं आएगी ... तुम्हारी अगर इच्छा नहीं हो तो उन पलोंको मैं हमेशाके लिए मेरे दिलमें दफन करके रख सकता हूं ... लेकिन उसके लिए तुम्हे उसकी एक मामुलीसी किमत अदा करनी पड़ेगी.... क्या करे हर बात की एक तय किमत होती है ... है की नहीं ?...कुछ नहीं बस ५० लाख रुपए... तुम्हारे लिए बहुतही मामुली रकम ... और हां ... पैसेका बंदोबस्त तुरंत होना चाहिए ... पैसे कब कैसे पहुंचाने है ... यह बादमें मेलके द्वारा बताऊंगा ...

मैं इस मेलके लिए तुम्हारी तहे दिलसे माफी चाहता हूं .. लेकिन क्या करें कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है ... अगले मेलका इंतजार करना ... और हां ... तुम्हे बता दूं की मुझे पुलिसका बहुत डर लगता है ... और जब मैं डरता हूं तब हडबडाहटमें कुछभी अटपटासा करने लगता हूं किसीका खुनभी ...

— तुम्हारा ... सिर्फ तुम्हारा ... अस्तित्व "

मेल पढकर निकिताको मानो उसके पैरके निचेसे जमिन खिसक गई हो ऐसा लग रहा था. वह एकदम सुन्न हो गई थी. ऐसाभी हो सकता है, इसपर उसका विश्वासही नहीं हो रहा था. उसने अस्तित्व के बारेमें क्या सोचा था, और वह क्या निकला था.

" ओ माय गॉड... ही इज अ बिग फ्रॉड... आय कांट बिलीव इट..." निकिताके आश्चर्यसे खुले मुंहसे निकल गया.

निकिताने मेलके साथ अटॅच कर भेजे फोटोके लिंकपर क्लीक करके देखा. वह ईशाका और अस्तित्व का हॉटेलके सुईटमें एकदुसरेको बांहों में लिया हुआ नग्न फोटो था.

" लेकिन उसने यह फोटो, कैसे लिया होगा ?" निकिताने अपनी उलझन जाहिर की.

" मैं मुंबईको कब जानेवाली थी ... कहा रुकने वाली थी ... इसकी उसे पहलेसेही पुरी जानकारी थी. " ईशाने कहा.

" यह तो सिधा सिधा ब्लॅकमेलींग है." निकिता गुस्सेसे आवेशमें आकर चिढ़कर बोली.

" उसके मासूम चेहरेके पिछे इतना भयानक चेहराभी छिपा हूवा हो सकता है ... मुझे तो

अबभी विश्वास नहीं होता. " ईशाने दुखसे कहा.

" कमसे कम शादीके पहले हमें उसका यह भयानक रुप पता चला... नहीं तो न जाने क्या हो जाता ... " निकिताने कहा.

" मुझे दुख पैसेका नहीं ... दुख है तो सिर्फ उसने दिए इतने बड़े धोखे और विश्वासघात का है. " ईशाने कहा.

" एक पलके लिए समझ लो की अगर हम उसे ५० लाख रुपए दे देते है... लेकिन पैसे लेनेके बादभी वह फिरसे हमें ब्लैकमेल नहीं करेगा इसकी क्या ग्यारंटी? ... " निकिताने फिरसे अपने मनमें चल रहा सवाल जाहिर किया.

ईशा चेहरे पर डर लिए सिर्फ उसकी तरफ देखती रही. क्योंकि उसके पासभी इस सवालका कोई जवाब नहीं था.

" मुझे लगता है तूम एक बार उसे मेल कर उसका मन परिवर्तीत करनेका प्रयास करो... और अगर फिरभी वह नहीं मानता है तो ... चिंता मत करो... हम जरूर इसमेंसेभी कुछ रास्ता निकालेंगे. " निकिता उसको ढांडस बढाते हूई बोली.

सायबर कॅफेमें लोग अपने अपने क्यूबीकल्समें अपने अपने इंटरनेट सर्फींगमें बिड़ी थे। कुछ कॉम्प्यूटर्स वही खुले हॉलमें रखे थे, वहांभी कोई कॉम्प्यूटर खाली नहीं था। की बोर्डके बटन्स दबानेका एक अजिब आवाज एक लय और तालमें सारे कॅफेमें घुम रहा था। सब लोग, कोई चेंटींग, कोई सर्फींग, कोई गेम्स खेलनेमें तो कोई मेल्ल्स भेजनेमें मग्न था। तभी एक आदमी दरवाजेसे अंदर आ गया। वह अंदर आकर जिस तरहसे इधर उधर देख रहा था, कमसे कम उससे वह यहां पर पहली बार आया हो ऐसा लग रहा था। रिसेप्शन काउंटरपर बैठा स्टाफ मेंबर उसके सामने रखे कॉम्प्यूटरपर ताशका गेम 'सॉलीटेअर' खेल रहा था। उस आदमीकी आहट होतेही उसने झटसे, बड़ी स्फुर्तीके साथ अपने मॉनिटरपर चल रहा वह गेम मिनीमाईझ किया और आया हुआ आदमी अपना बॉस या उसके घरका कोई आदमी नहीं है यह ध्यानमें आतेही वह फिरसे वह गेम मैक्सीमाईज करके खेलने लगा। वह अंदर आया हुआ आदमी कुछ पलके लिए रिसेप्शन काउंटरके पास मंडराया और रुककर स्टाफको पुछने लगा –

" अस्तित्व आया क्या ?"

उस स्टाफने भावना विरहित चेहरेसे उसकी तरफ देखकर पुछा –

" कौन अस्तित्व ?"

" अस्तित्व जाधव ... वह मेरा दोस्त है और उसनेही मुझे यहां बुलाया है .." उस आदमीने कहा।

" अच्छा वह अस्तित्व ... नहीं आज तो वह दिखा नहीं .. वैसे तो वह रोज आता है ... लेकिन कलसे मैने उसे देखा नहीं है ... " काउंटरपर बैठे स्टाफने जवाब दिया और वह सामने रखे हुए कॉम्प्यूटरपर फिरसे 'सॉलीटेअर' खेलनेमें व्यस्त हो गया।

ईशा कॉन्फरन्स रुममें दिवारपर लगे छोटे पडदेपर प्रोजेक्टरकी सहाय्यतासे निकिताको कुछ समझा रही थी. और निकिता वह जो बोल रही है वह ध्यान देकर सुन रही थी.

" निकिता जैसा तुमने कहा था वैसेही मैंने अस्तित्व को समझाकर देखनेके लिए एक मेल भेजी है ... लेकिन उसे सिर्फ मेलही ना भेजते हुए मैंने एक बड़ा दांव भी फेंका है ... " ईशा बोल रही थी.

" दांव? ... कैसा ?..." निकिताने कुछ ना समझते हुए आश्चर्यसे पुछा.

" उसे भेजे हुए मेलके साथ मैंने एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम अटॅच कर भेजा है" ईशाने कहा.

" कैसा प्रोग्राम?" निकिताको अभीभी कुछ समझ नहीं रहा था.

" उस प्रोग्रामको 'स्निफर' कहते है ... जैसेही अस्तित्व उसे भेजी हुई मेल खोलेगा .. वह स्निफर प्रोग्राम रन होगा ..." ईशा बोल रही थी.

" लेकिन वह प्रोग्राम रन होनेसे क्या होगा ?" निकिताने पुछा.

" उस प्रोग्रामका काम है ... अस्तित्व के मेलका पासवर्ड मालूम करना ... और वह पासवर्ड मालूम होतेही वह प्रोग्राम हमे वह पासवर्ड मेलद्वारा भेजेगा ... " ईशा बोल रही थी.

" अरे वा... " निकिता उत्साहभरे स्वरमें बोली लेकिन अगलेही पल कुछ सोचते हुए उसने पुछा, " लेकिन उसका पासवर्ड मालूम कर हमें क्या मिलेगा ?"

" जिस तरहसे अस्तित्व मुझे ब्लॉकमेल कर रहा है ... उसी तरह हो सकता है की वह और बहुत लोगोंको ब्लॉकमेल कर रहा होगा ...या फिर उसके मेलबॉक्समें हमे उसकी कुछ कमजोरी... या जो हमारे कामका साबीत हो ऐसा कुछतो हमें पता चलेगा ... वैसे फिलहाल हम अंधेरेमें निशाना साध रहे है.... लेकिन मुझे यकिन है ... हमें कुछ ना कुछतो जरूर मिलेगा " ईशा बता रही थी.

" हां ... हो सकता है " निकिताने कहा.

और फिर कुछ सोचकर उसने कहा, " मुझे क्या लगता है ... हमें अपना दुश्मन कौन है यह पता है ... वह कहां रहता है यहभी पता है ... फिर वह अपनेपर वार करनेके पहलेही अगर हम उसपर वार करते है तो ?"

" वह संभावनाभी मैंने जांचकर देखी है ... लेकिन अब वह उसके होस्टेलसे गायब है ... वुई डोन्ट नो हिज व्हेअर अबाऊट्स"

तभी कॉम्प्यूटरका बझर बजा. ईशाने और निकिताने झटसे पलटकर मॉनिटरकी तरफ देखा. मॉनिटरकी तरफ देखतेही दोनोंके चेहरे खिल गए. क्योंकि उनकी अपेक्षानुसार ईशाने अस्तित्व के मेलको अटेंच कर भेजे 'स्निफर' सॉफ्टवेयरकीही वह मेल थी. अब दोनोंको वह मेल खोलनेकी जल्दी हो गई थी. कब एक बार वह मेल खोलती हूं और कब एक बार उस मेल द्वारा आए अस्तित्व के पासवर्डसे उसका मेल अकाउंट खोलती हूं ऐसा ईशाको हुवा था. उसने तुरंत डबलक्लीक कर वह मेल खोली.

" यस्स!" उसके मुंहसे विजयी उद्गार निकले.

उसने भेजे स्निफरने अपना काम बराबर किया था.

उसने बिजलीके गतीसे मेल सॉफ्टवेयर ओपन किया और ...

" यह उसका मेल आयडी और यह उसका पासवर्ड" बोलते हुए अस्तित्व का मेल ऍट्रैस टाईप कर उस प्रोग्रामको अस्तित्व के मेलका पासवर्ड दिया.

ईशाने उसका मेल अकाउंट खोलतेही और कुछ की बोर्डकी बटन्स और दो चार माऊस क्लीक्स किए. और दोनो अब कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ देखने लगी.

" ओ माय गॉड ... आय जस्ट कान्ट बिलीव्ह" ईशाके खुले मुंहसे निकल गया.

निकिता कभी मॉनिटरकी तरफ तो कभी ईशाके खुले मुंहकी तरफ असमंजससे देख रही थी.

ईशा अपने ऑफीसमें कुर्सीपर बैठकर कुछ सोच रही थी. उसका चेहरा मायूस दिख रहा था. शायद उसने उसके जिवनमें इतना बड़ा भूचाल आएगा ऐसा कभी सोचा नहीं होगा. उसने अपना कॉम्प्यूटर शुरु कर रखा तो था, लेकिन उसे ना चार्टींग करनेकी इच्छा हो रही थी ना किसी दोस्तको मेल भेजनेकी. उसने अपनी सारी ऑफीशियल मेल्स चेक की और फिरसे वह सोचने लगी. तभी कॉम्प्यूटरपर बझर बजा. उसने अपनी चेअर घुमाकर कॉम्प्यूटरकी तरफ अपना रुख किया –

‘ हाय ... मिस ईशा’

अस्तित्व का चर्टींगपर मेसेज था.

उसे अहसास हो गया की उसके दिलकी धड़कने तेज होने लगी है. लेकिन इसबार धड़कने

बढनेकी वजह कुछ अलग थी. ईशा सिर्फ उस मेसेजकी तरफ देखती रही. उसे अब क्या किया जाए कुछ सुझ नहीं रहा था. तभी निकिता अंदर आ गई. ईशाने निकिताको अस्तित्व का मेसेज आया है ऐसा कुछ इशारा किया. निकिता झटसे बाहर चली गई, मानो पहले उन्होने कुछ तय किया हो. ईशा अबभी उस मेसेजकी तरफ देख रही थी.

‘ईशा कम ऑन एकनॉलेज यूवर प्रेझेन्स’ अस्तित्व का फिरसे मेसेज आ गया.

‘यस’ ईशाने टाईप किया और सेंड बटनपर क्लिक किया.

ईशाने कॉम्प्यूटर ऑपरेट करते हुए उसके हाथोंमें और उंगलियोंमें पहली बार कंपन महसूस किया.

‘मैं अब मेलमें सारी जानकारी भेज रहा हूँ ‘ अस्तित्व का मेसेज आ गया.

‘लेकिन ५० लाख रुपए देनेके बादभी फिरसे तुम ब्लॉकमेल नहीं करोगे इसकी क्या गॅरंटी. ?’ ईशाने मेसेज भेजकर उसे बार बार सता रहा सवाल उठाया.

अस्तित्व ने उधरसे एक हंसता हुआ छोटासा चेहरा भेजा.

इस बार ईशाको उस चेहरेके हसनेमें मासूमियतसे जादा कपट दिख रहा था.

‘देखो ... यह दुनिया भरोसेपर चलती है ... तुम्हे मुझपर भरोसा करना पड़ेगा ... और तुम्हारे पास मुझपर भरोसा करनेके अलावा और क्या चारा है ?’ उधरसे अस्तित्व का ताना मारता हुआ मेसेज आ गया.

और वह भी सचही तो था ... उसके पास उसपर भरोसा करनेके अलावा कोई दुसरा चारा नहीं था....

ईशा अब उसने भेजे मेसेजको क्या जवाब दिया जाए इसके बारेमें सोचने लगी. तभी अगला मेसेज आ गया –

‘ओके देन बाय... दिस इज अवर लास्ट कन्क्लरसेशन... टेक केअर... तुम्हारा ... और सिर्फ तुम्हारा अस्तित्व ...’

ईशा उस मेसेजकी तरफ काफी देरतक देखती रही. बादमें उसे क्या सुझा क्या मालूम, उसने फटाफट कीबोर्डपर कुछ बटन्स दबाए और कुछ माऊस क्लिक्स किए. उसके सामने उसका खुला हुआ मेलबॉक्स अवतरीत हुआ. उसके अपेक्षानुसार और अस्तित्व ने जैसा कहा था, उसकी मेल उसके मेलबॉक्समें पहुँच चुकी थी. उसने पलभरकी भी देरी ना करते हुए वह मेल

खोली.

मेलमें ५० लाख रुपए कहां, कैसे, और कब पहुंचाने है यह सब विस्तारपूर्वक बताया था. साथमें पुलिसके चक्करमें ना पडनेकी हिदायतरुप धमकीभी दी थी. ईशाने अपनी कलाईपर बंधी घड़ीकी तरफ देखा. अबभी मेलमें बताए स्थानपर पैसे पहुंचानेमें ४ घंटेका अवधी बाकी था. उसने एक दिर्घ श्वास लेकर धीरेसे छोड दी. वह वैसे कर शायद अपने मनका बोझ हलका करनेकी कोशीश करती होगी. वैसे चार घंटे उसके लिए काफी समय था. और पैसोंका बंदोबस्त भी उसने पहलेसे ही कर रखा था – यहांतक की पैसे सुटकेसमें पॅकभी कर रखे थे. मेलकी तरफ देखते देखते उसके अचानक ध्यानमें आ गया की मेलके साथ कोई अटॅचमेंटभी आई हुई है. उसने वह अटॅचमेंट खोलकर देखी. वह एक फोटो था. उसने क्लीक कर वह फोटो खोला.

वह उनके हॉटेलके रुममें दोनो जब एक दिर्घ चुंबन लेते हुए आलिंगनबध्द थे तबका फोटो था.

विकास अपनेही धुनमें मस्त मजेमें सिटी बजाते हुए रास्तेपर चल रहा था. तभी उसे पिछेसे किसीने आवाज दिया.

" विकास..."

विकासने वही रुककर सिटी बजाना रोक दिया. आवाज पहचानका नहीं लग रहा था इसलिए उसने पिछे मुड़कर देखा. एक आदमी जल्दी जल्दी उसीके ओर आ रहा था. विकास असमंजससा उस आदमीकी तरफ देखने लगा क्योंकि वह उस आदमीको पहचानता नहीं था.

फिर उसे अपना नाम कैसे पता चला ?..

विकास उलझनमें वहां खड़ा था. तबतक वह आदमी आकर उसके पास पहुंच गया.

" मैं अस्तित्व का दोस्त हूं ... मैं उसे कलसे ढूंढ रहा हूं ... मुझे कैफेपर काम करनेवाले लडकेने बताया की शायद तुम्हे उसका पता मालूम हो " वह आदमी बोला.

शायद उस आदमीने विकासके मनकी उलझन पढ ली थी.

" नहीं वैसे वह मुझेतो बताकर नहीं गया. ... लेकिन कल मैं उसके होस्टेलपर गया था... वहां उसका एक दोस्त बता रहा था की वह १०-१५ दिनके लिए किसी रिश्तेदार यहां गया है ..." विकासने बताया.

" कौनसे रिश्तेदार यहां ?" उस आदमीने पुछा.

" नहीं उतना तो मुझे मालूम नहीं ... उसे मैंने वैसा पुछाभी था लेकिन वह उसेभी पता नहीं था ... उसे सिर्फ उसकी मेल मिली थी " विकासने जानकारी दी.

ईशा अपने कुर्सीपर बैठी हुई थी और उसके सामने रखे टेबलपर एक बंद ब्रिफकेस रखी हुई थी. उसके सामने निकिता बैठी हुई थी. उनमें एक अजीबसा सन्नाटा छाया हुआ था. अचानक ईशा उठ खड़ी हो गई और अपना हाथ धीरेसे उस ब्रिफकेसपर फेरते हुए बोली, " सब पहेलूसे अगर सोचा जाए तो एकही बात उभरकर सामने आती है .."

ईशा बोलते हुए रुक गई. लेकिन निकिताको सुननेकी बेसब्री थी.

" कौनसी ?" निकिताने पुछा.

" ... की हमें उस ब्लॉकमेलरको ५० लाख देनेके अलावा फिलहाल अपने पास कोई चारा नहीं है ... और हम रिस्क भी तो नहीं ले सकते "

" हां तुम ठीक कहती हो " निकिता शून्यमें देखते हुए, शायद पुरी घटनापर गौर करते हुए बोली.

ईशाने वह ब्रिफकेस खोली. ब्रिफकेसमें हजार हजारके बंडल्स ठीकसे एक के उपर एक करके रखे हुए थे. उसने उन नोटोंपर एक नजर दौड़ाई, फिर ब्रिफकेस बंद कर उठाई और लंबे लंबे कदम भरते हुए वह वहांसे जाने लगी. तभी उसे पिछेसे निकिताने आवाज दिया –

" ईशा..."

ईशा ब्रेक लगे जैसे रुक गई और निकिताके तरफ मुड़कर देखने लगी.

" अपना खयाल रखना " निकिताने अपनी चिंता जताते हुए कहा.

ईशा दो कदम फिरसे अंदर आ गई, निकिताके पास गई, निकिताके कंधेपर उसने हाथ रखा औड़ मुड़कर फिरसे लंबे लंबे कदम भरते हुए वहांसे चली गई.

घना जंगल. जंगलमें चारो तरफ बढे हुए उंचे उंचे पेढ. और पेढोंके निचे सुखे पत्ते फैले हुए थे. जंगलके पेढोंके बिचसे बने संकरे जगहसे रास्ता ढूंढते हुए एक काली, काले कांच चढाई हूई, कार तेडेमेडे मोड लेते हुए सुखे पत्तोसे गुजरने लगी. उस कारके चलनेके साथही उस सुखे पत्तोका एक अजिब मसलने जैसा आवाज आ रहा था. धीरे धीरे चल रही वह कार उस जंगलसे रास्ता निकालते हुए एक पेडके पास आकर रुकी. उस कारके ड्रायव्हर सिटका काला शिशा धीरे धीरे निचे सरक गया. ड्रायव्हींग सिटपर ईशा काला गॉगल पहनकर बैठी हूई थी. उसने कारका इंजीन बंद किया और बगलके पेडके तनेपर लगे लाल निशानकी तरफ देखा.

उसने यही वह पेढ ऐसा मनही मन पक्का किया होगा...

फिर उसने जंगलमें चारो ओर एक नजर दौडाई. दुर-दुरतक कोई परींदाभी नहीं दिख रहा था. आसपास किसीकीभी उपस्थिती नहीं है इसका यकिन होतेही उसने अपने बगलके सिटपर रखी ब्रिफकेस उठाकर पहले अपने गोदीमें ली. ब्रिफकेसपर दो बार अपना हाथ थपथपाकर उसने अपना इरादा पक्का किया होगा. और मानो अपना इरादा डगमगा ना जाए इस डरसे उसने झटसे वह ब्रिफकेस कारके खिडकीसे उस पेडके तरफ फेंक दी. धप्प और साथही सुखे पत्तोका मसलने जैसा एक अजिब आवाज आया.

होगया अपना काम तो होगया ...

चलो अब अपनी इस मसलेसे छूटी होगई...

ऐसा सोचते हुए उसने छुटनेके अहसाससे भरी लंबी आह भरी. लेकिन अगलेही क्षण उसके मनमें एक खयाल आया.

क्या सचमुछ वह इस सारे मसलेसे छूट चूकी थी? ...

या वह अपने आपको एक झूटी तसल्ली दे रही थी...

उसने फिरसे चारो तरफ देखा. आसपास कहीभी कोई मानवी हरकत नहीं दिख रही थी. उसने फिरसे कार स्टार्ट की. और एक मोड लेते हुए कार वहांसे तेज गतिसे चली गई. मानो वहांसे निकल जाना यह उसके लिए इस मसलेसे हमेशाके लिए छूटने जैसा था.

जैसेही कार वहांसे चली गई, उस सुनसान जगहके एक पेडके उपर, उंचाईपर कुछ हरकत हो गई. उस पेडके उपर उंचाई पर बैठे, हरे पेडके पत्तोके रंगके कपडे पहने हुए एक आदमीने उसी हरे रंगका वायरलेस बोलनेके लिए अपने मुंहके पास लीया.

" सर एक्दरी थींग इज क्लिअर ... यू कॅन प्रोसीड" वह वायरलेसपर बोला और फिरसे अपनी पैनी नजर इधर उधर घूमने लगा. शायद वह, वहांसे चली गई कार कहीं वापस तो नहीं आ रही है, या उस कारका पिछा करते हुए वहां और कोई तो नहीं आया ना, इस बातकी तसल्ली करता होगा.

" सर एक्दती थींग इज क्लिअर... कन्फर्मींग अगेन" वह फिरसे वायरलेसपर बोला.

उस पेडपर बैठे आदमीका इशारा मिलतेही जिस पेडके तनेको लाल निशान लगाया हुवा था, उस पेडके बगलमेंही एक बढा सुखे हुए पत्तोका ढेर था, उसमें कुछ हरकत होगई. कार शुरु होनेका आवाज आया और उस सुखे हुए पत्तोके ढेरको चिरते हुए, उसमेंसे एक कार बाहर आ गई. वह कार धीर धीरे आगे सरकती हुई जहां वह ब्रीफकेस पड़ी हुई थी वहा गई. कारसे एक काले कपडे पहना हुवा और मुंहपरभी काले कपडे बंधा हुवा एक आदमी बाहर आ गया. उसने अपनी पैनी नजरसे इधर उधर देखा. जहां उसका आदमी पेडपर बैठा हुवा था उधरभी देखा और उसे अंगुठा दिखाकर इशारा किया. बदलेमें उस पेडपर बैठे आदमीनेभी अंगुठा दिखाकर जवाब दिया. शायद सबकुछ कंट्रोलमें होनेका संकेत दिया. उस कारमेंसे उतरे, उस काले कपडे पहने आदमीने आसपास कोई उसे देखतो नहीं रहा है इसकी तसल्ली करते हुए वह निचे पड़ी हुई ब्रीफकेस धीरेसे उठाई. ब्रीफकेस उठाकर कारके बोनेटपर रखकर खोलकर देखी. हजार रुपयोंके एकके उपर एक ऐसे रखे हुए बंडल्स देखतेही उसके चेहरेपर काले कपडेके पिछे, एक खुशीकी लहर जरूर दौड गई होगी. और उन नोटोंकी खुशबू उसके नाकसे होते हुए उसके मश्तिश्क तक उसे एक नशा चखाती हुए दौड गई होगी. उसने उसमेंसे एक बंडल उठाकर उंगली फेरकर देखकर फिरसे ब्रिफकेसमें रख दिया. उसने फिरसे ब्रिफकेस बंद की. पेडपर बैठे आदमीको फिरसे अंगुठा दिखाकर सबकुछ ठिक होनेका इशारा किया. वह काला साया वह ब्रिफकेस उठाकर फिरसे अपने कारमें जाकर बैठ गया. कारका दरवाजा बंद हो गया, कार शुरु होगई और धीरे धीरे गति पकडती हुई तेज गतिसे वहांसे अदृष्य होगई. मानो वहांसे जल्द से जल्द निकल जाना उस कारमें बैठे आदमीके लिए उन नोटोंपर जल्द से जल्द कब्जा जमाने जैसा था.

उस दिलको दर्द देनेवाले, नही दिल को पुरी तरह तबाह कर देनेवाले घटनाको घटकर अब लगभग १०-१५ दिन हो गए होंगे. उस घटना को जितना हो सके उतना भूलनेकी कोशीश करते हुए ईशा अब पहले जैसे अपने काममें व्यस्त हो गई थी. या यू कहिए उन घटनासे होनेवाले दर्दसे बचनेके लिए उसने खुदको पुरी तरह अपने काममें व्यस्त कर लिया था. उसी बिच ईशाको आयटी क्षेत्रमें भूषणाह समझे जाने वाला 'आय टी वुमन ऑफ द ईअर' अवार्ड मिला. उस अवार्डकी वजहसे उसके यहां प्रेसवालोंका तांता लगने लगा था. उस भिडकी अब ईशाकोभी जरूरत महसूस होने लगी थी. क्योंकि उस तरहसे वह अपने अकेलेपनसे और कटू यादोंसे बच सकती थी. पिछले चारपांच दिनसे लगभग रोजही कभी न्यूजपेपरमें तो कभी टिक्कीपर उसके इंटरव्यू आ रहे थे.

ईशा ऑफीसमें बैठी हुई थी. निकिता उसके बगलमेंही बैठकर उसके कॉम्प्यूटरपर काम कर रही थी. उस बुरे अनुभवके बाद ईशाका चॅटींग और दोस्तोंको मेल भेजना एकदमही कम हुवा था. खाली समयमें वह यूंही बैठकर शून्यमें ताकते हुए सोचते बैठती थी. उसके दिमागमें मानो अलग अलग तरहकी विचारोंका सैलाब उठता था. लेकिन वह तुरंत उन विचारोंको अपने दिमागसे झटकती थी. अबभी उसके मनमें विचारोंका सैलाब उमड़ पड़ा था. उसने तुरंत अपने दिमागमें चल रहे विचार झटकर अपने मनको दुसरे किसी चिजमें व्यस्त करनेके लिए टेबलका ड्रावर खोला. ड्रावरमें उसे उसने संभालकर रखे हुए न्यूजपेपरके कुछ कटींग्स दिखाई दिए. 'आय टी वुमन ऑफ द ईअर - ईशा मेहता' न्यूज पेपरके एक कटींगपर हेडलाईन थी. उसने वह कटींग बाहर निकालकर टेबलपर फैलाया और वह फिरसे वह समाचार पढ़ने लगी.

यह समाचार पढ़नेके लिए अब इस वक्त मेरे पिताजी होने चाहिए थे....

उसके जहनमें एक विचार आकर गया.

उन्हे कितना गर्व महसूस हुवा होता... अपनी बेटीका ...

लेकिन भाग्यके आगे किसका कुछ चला है? ...

अब देखोना अभी अभी आया हुवा अस्तित्व का ताजा अनुभव ...

वह सोच रही थी तभी कॉम्प्यूटरका बझर बजा.

काफी दिनोंसे चॅटींग और मेलींग कम करनेके बाद ज्यादातर उसे किसीका मेसेज नही आता था

फिर यह आज किसका मेसेज होगा ...

कोई हितचिंतक?...

या कोई हितशत्रू...

आजकल कैसे हर बातमें उसे दोनो पहेलू दिखते थे – एक अच्छा और एक बुरा. ठेस पहुंचनेपर आदमी कैसे संभल जाता है और हर कदम सोच समझकर बढ़ाता है.

ईशाने पलटकर मॉनीटरकी तरफ देखा.

" अस्तित्व का मेसेज है ..." कॉम्प्यूटरपर बैठी निकिता ईशाकी तरफ देखकर सहमकर बोली. निकिताके चेहरेपर डर और आश्चर्य साफ नजर आ रहा था. वह भावनाएं अब ईशाके चेहरेपरभी दिख रही थी. ईशा तुरंत उठकर निकिताके पास गई. निकिता ईशाको कॉम्प्यूटरके सामने बैठनेके लिए जगह देकर वहांसे उठकर बगलमें खड़ी हो गई. ईशाने कॉम्प्यूटरपर बैठनेके पहले निकिताको कुछ इशारा किया वैसे निकिता तुरंत दरवाजेके पास जाकर जल्दी जल्दी कैबिनसे बाहर निकल गई.

" मिस. ईशा ... हाय ... कैसी हो ?" अस्तित्व का उधरसे आया मेसेज ईशाने पढ़ा.

एक पल उसने कुछ सोचा और वह भी चैटिंगका मेसेज टाईप करने लगी –

" ठीक है ... " उसने मेसेज टाईप किया और सेंड बटनपर क्लिक करते हुए उसे भेज दिया.

" तुम्हें फिरसे तकलिफ देते हुए मुझे बुरा लग रहा है ... लेकिन क्या करे? ... पैसा यह साली चिजही वैसी है ... कितनेभी संभलकर इस्तमाल करो तो भी खतम हो जाती है ..." उधरसे अस्तित्व का मेसेज आ गया.

ईशाको शक थाही की कभी ना कभी वह और पैसे मांगेगा ...

" मुझे इस बार २० लाख रुपएकी सख्त जरूरत है ..." उधरसे अस्तित्व का मेसेज आ गया.

" अभी तो तुम्हें ५० लाख रुपए दिए थे ... अब मेरे पास पैसे नहीं हैं ..." ईशाने झटसे टाईप करते हुए मेसेज भेज भी दिया.

मेसेज टाईप करते हुए उसके दिमागमें औरभी काफी विचारोंका चक्र चल रहा था.

" बस यह आखरी बार ... क्योंकि यह पैसे लेकर मैं परदेस जानेकी सोच रहा हूं " उधरसे अस्तित्व का मेसेज आया.

" तुम परदेस जावो ... या और कही जावो ... मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं है ... देखो ... मेरे पास कोई पैसोका पेढ तो नहीं है ... " ईशाने मेसेज भेजा.

" ठिक है ... तुम्हे अब मुझे कमसे कम १० लाख रुपए तो भी देने पड़ेंगे ... पैसे कब कहा और कैसे पहुंचाने है वह मैं तुम्हे मेल कर सब बता दूंगा ..." उधरसे मेसेज आया.

ईशा कुछ टाईप कर उसे भेजनेसे पहलेही अस्तित्व का चॅटींग सेशन बंद हो गया था. ईशा एकटक उसके सामने रखे कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ देखने लगी. वह देख तो मॉनिटरके तरफ थी लेकिन उसके दिमागमें विचारोंका तांता लग गया था. लेकिन फिरसे उसके दिमागमें क्या आया क्या मालूम?, वह झटसे उठकर खड़ी हो गई और लंबे लंबे कदम भरते हुए कैबिनसे बाहर निकल गई.

‘इथीकल हँकींग कॉम्पीटीशन – ऑर्गनायझर – सीक्युर डेटा’ ऐसा एक बॅनर बड़े अक्षरोंमें स्टेजपर लगाया गया था. आज कॉम्पीटीशन का आखरी दिन था और जितनेवालोंके नाम घोषित किए जाने थे. पारीतोषीक वितरणके लिए प्रमुख अतिथीके तौर पर ईशाको बुलाया गया था. स्टेजपर उस बॅनरके बगलमें ईशा प्रमुख अतिथी के लिए आरक्षित कुर्सीपर बैठी हुई थी. और उसके बगलमें एक अधेड उम्र आदमी, कश्यपजी बैठे थे. वे ‘सीक्युर डेटा’ के हेड थे. तभी स्टेजके पिछेसे ऍन्कर सामने माईकके पास जाकर बोलने लगा,

" गुड मॉर्निंग लेडीज ऍंड जन्टलमन... जैसे की आप सब लोग जानते हो की हमारी कंपनी " सीक्युर डेटाका यह सिल्वर जूबिली साल है और उसी सिलसिले में हमने ‘इथीकल हँकींग’ इस प्रतियोगिता का आयोजन किया था ... आज हम उस प्रतियोगिताके आखरी दौरसे यानीकी पारितोषीक वितरणके दौरसे गुजरने वाले है ... इस पारितोषीक वितरण के लिए हमने एक खास मेहमान को यहां आमंत्रित किया है ... जिन्हे हालहीमें ‘आय टी वूमन ऑफ द ईयर’ सम्मान देकर गौरवान्वीत किया गया है ... "

हॉलमें बैठे सब लोगोंकी नजरे स्टेजपर बैठे ईशापर टीक गई थी. ईशानेभी एक मंद स्मित बिखेरते हुए हॉलमें बैठे लोगोपर एक नजर दौड़ाई.

" और उन खास मेहमानका नाम है ... मिस ईशा मेहता उनके स्वागतके लिए मैं स्टेजपर हमारे एकसीक्यूटीव मैनेजर श्रीमती सोनी झवेरिया इन्हे आमंत्रित करता हूं ... "

श्रीमती सोनी झवेरियाने स्टेजपर आकर फूलोंका गुलदस्ता देकर ईशाका स्वागत किया. ईशानेभी खडे होकर उस गुलदस्तेका बड़े विनयके साथ अभिवादन करते हुए स्वीकार किया. हॉलमें तालीयां गुंज उठी. मानो एक पलमें वहां उपस्थित लोगोंके शरीमें उत्साह प्रवेश कर गया हो. तालीयोंकी आवाज थमतेही ऍन्कर आगे बोलने लगा –

" अब मैं स्टेजपर उपस्थित हमारे मैनेजिंग डायरेक्टर श्री. कश्यपजीके स्वागतके लिए हमारे मार्केटींग मैनेजर श्री. फिलिप हँकजीको यहां आमंत्रित करता हूं ... "

श्री. फिलिप हँकने स्टेजपर जाकर कश्यपजीका एक गुलदस्ता देकर स्वागत किया. हॉलमें फिरसे तालियां गुंज उठी.

" अब कश्यपजीको मैं बिनती करता हूं की वे यहां आकर दो शब्द बोलें " ऍन्करने माईकपर कहां और वह कश्यपजीकी माईकके पास आनेकी राह देखते हुए खडा रहा.

कश्यपजी खुर्चीसे उठकर खडे हो गए. उन्होंने एक बार ईशाकी तरफ देखा. दोनों एक दुसरेकी तरफ देखकर मुस्कराए. और अपना मोटा शरीर संभालते हुए धीरे धीरे चलते हुए कश्यपजी

माईकके पास आकर पहुंच गए.

" आज इथीकल हँकींग इस स्पर्धाके लिए आमंत्रित की गई ... जी.एच इन्फॉर्मेटिक्स इस कंपनीकी मॅनेजींग डायरेक्टर और आय टी वूमन ऑफ दिस इयर मिस ईशा मेहता, यहां उपस्थित मेरे कंपनीके सिनीयर आणि जुनियर स्टाफ मॅबर्स, इस स्पर्धामें शामिल हुए देशके कोने कोनेसे आए उत्साही युवक आणि युवतीयां, और इस स्पर्धाका नतिजा जाननेके लिए उत्सुक लेडीज एंन्ड जन्टलमन... सच कहूं तो ... यह एक स्पर्धा है इसलिए नहीं तो हर एक के जिंदगी की हर एक बात एक स्पर्धाही होती है ... लेकिन स्पर्धा हमेशा खिलाडू वृत्तीसे खेली जानी चाहिए .. अब देखो ना ... यह इतना बड़ा अपने कंपनीके स्टाफका समुदाय देखकर मुझे एक पुरानी बात याद आ गई ... की १९८४ में हमने यह कंपनी शुरू की थी.... तब इस कंपनीके स्टाफकी गिनती सिर्फ ३ थी ... मैं और, और दो सॉफ्टवेयर इंजिनियर्स... और तबसे हमने हर दिन लढते झगडते हर दिनको एक स्पर्धा एक कॉपीटीशन समझते हुए हम आज इस स्थितीमें पहुंच गए हैं..... मुझे यह बताते हुए खुशी और अभिमान होता है की आज अपने कंपनीने इस देशमेंही नहीं तो विदेशमेंभी अपना झंडा फहराया है और आज अपने स्टाफकी गिनती .. ३०००० के ऊपर पहुंच चुकी है ..."

हॉलमें फिरसे एकबार लोगोंने तालियां बजाते हुए हॉल सर पर उठा लिया. तालीयां थमनेके बाद कश्यपजी फिरसे आगे बोलने लगे. लेकिन स्टेजपर बैठी ईशा उनका भाषण सुनते हुए कब अपने खयालोंमें डूब गई उसे पताही नहीं चला ...

(ईशा और निकिता कॉफी हाऊसमें एकदूसरेके सामने बैठे थे और दोनों अपने अपने सोच में डूबी धीरे धीरे कॉफीकी चुस्कीयां ले रही थी. उनमें एक अजिबसा सन्नाटा फैला हुआ था. आखिर ईशाने उस सन्नाटेको भंग किया -

" बराबर २ दिन हो गए हैं ... उसकी अगली मेल अभीतक कैसे नहीं आई ? "

" शायद उसे शक हुआ होगा " निकिताने कहा.

" ऐसाही लगता है ... " ईशा आह भरती हुई बोली.

" मुझे लग रहा था की इस बार हम उसे पकडनेमें जरूर कामयाब होंगे ... लेकिन अब मुझे चिंता होने लगी है की हम उसे कभी पकडनेमें कामयाबभी होंगे की नहीं " ईशाने कहा.

" और हा उसे शक होना भी उतनाही खतरनाक है .. उसने सारे फोटो अगर इंटरनेटपर डाले तो सारा ही खेल बिगड जाएगा ... और बदनामीभी होगी वह अलग " निकिताने कहा.

ईशाने अपने सोचमें डूबे हुए हालतमें सिर्फ सर हिलाया.

" एकही झटकेमें उसे पकडना जरूरी है ... नहीं तो अपना प्लान पुरा फेल हो जाएगा " ईशाने

कहा)

.... हॉलमें चल रहे तालीयोंकी गुंजसे ईशा अपने सोचके विश्वसे बाहर आ गई. उसने चारो तरफ अपनी नजरे दौड़ाई. कश्यपजींका स्पीच खत्म हो चुका था और वे उसके बगलकेही सिटपर वापस आ रहे थे. वह उनके तरफ देखकर मुस्कुराई, मानो उनके स्पिचकी सराहना कर रही हो. उधर ऍन्कर फिरसे माईकके पास गया था और उसने ऐलान किया – " अब मै पारितोषीक वितरणके लिए जी. एच. इन्फॉरमेटिक्सकी मैनेजींग डायरेक्टर ... दि आय. टी वुमन ऑफ दिस इयर... मिस. ईशा मेहता ... उन्हे आमंत्रित करता हूं ..."

ईशा उठ खडी होगई और माइकके पास चली गई. फिरसे हॉल तालीयोंसे गुंज उठा.

" तो अब हम पारितोषीक वितरणके लिए आगे बढ़ते है ... " एन्करने माइकपर जाहिर किया.

"... जैसे आप लोग जानते हो ... इस प्रतियोगिता को जब जाहिर किया गया तब हमे इसमें भाग लेनेके लिए इच्छूक लोगोंका बहुत प्रतिसाद मिला... देशभरसे लगभग तिन हजार लोगोंके अप्लीकेशन फॉर्मस हमें मिले पहले छाननीमें हमनें उसमेंसे सिर्फ ५० अप्लीकेशन्स चुने ... और अब फायनलमें जो चुने है वे है सिर्फ तिन ... लेकिन उन तिन लोगोंके नाम जाननेके पहले हमें थाडा रुकना पडेगा. क्योंकि पहले हम कुछ लोगोंको कुछ प्रोत्साहनपर प्राइजेस देने वाले है"

प्रोत्साहनपर प्राइजेस देनेमें जादा समय न बिताते हुए ऍन्कर एक एकको स्टेजपर बुला रहा था और ईशा उनको प्राइज देकर उनको शाबासकी देकर उनकी वहांसे रवानगी कर रही थी. प्रोत्साहनपर प्राइजेस खत्म हुए वैसे लोगोंने फिरसें उत्साह बढ़ता हूवा दिखने लगा.

" अब जिन तिनोंके नाम जाननेके लिए हम उत्सुक है वह वक्त आ चुका है ... सबसे पहले मै तिसरा प्राइज जिसे मिला उस प्रतियोगीका नाम जाहिर करने वाला हूं ... " एन्करने सब लोगोंकी जिज्ञासा और बढ़ाते हुए एक बडा पॉज लिया , " तिसरा प्राइज है १ लाख रुपये कैश और मोमेंटो... तो थर्ड प्राइज... मि. उज्ज्वल जोशी फ्रॉम नागपूर... प्लीज कम ऑन द स्टेज... "

हॉलमें तालियां गुंजने लगी. एक पतलासा सावला २० -२२ जिसकी उम्र होगी ऐसा एक लडका सामनेके दसमेंसे एक कतारमेंसे खडा होकर स्टेजकी तरफ जाने लगा. उस प्रतियोगीकी तरफ देखकर किसे लगेगा नही की उसे तिसरा प्राइज मिल सकता है ... लेकिन उसके चलनेमें एक जबरदस्त आत्मविश्वास झलक रहा था. अमोल राठोड स्टेजपर आया. जिस आत्मविश्वाससे वह चला था उसी आत्मविश्वासके साथ उसने पुरस्कारका स्विकार किया और ईशासे हस्तांदोलन किया. हॉलमें मीडियाकी भी काफी उपस्थिती थी. पुरस्कार स्विकार करते वक्त बिजली चमके ऐसे फोटोंके फ्लैश दोनोंके उपर चमक रहे थे.

फिरसे हॉलमें मानो जोरसे बारिश हो ऐसे लोगोंने तालियां बजाई. अमोल राठोड स्टेजसे

उतरकर फिरसे अपने कुर्सीकी तरफ जाने लगा वैसे एँन्कर दुसरा प्राईज जिसे मिला उसके नामका ऐलान करनेके लिए सामने आया,

" दुसरा पारितोषीक है १.५ लाख रुपये कॅश और मोमेंटो... तो थर्ड प्राईज गोज टू... मिस. मेघना रस्तोगी फ्रॉम बंगलोर ... प्लीज कम ऑन द स्टेज..."

हॉलमें फिरसे तालियां बजने लगी. एक गोरी उंची पतली नाजूकसी लगभग २०-२१ सालकी युवती स्टेजपर आने लगी. ईशा शायद वह खुदभी एक स्त्री होनेसे उस लडकीकी तरफ आंखे भरकर देख रही थी. अनघा स्टेजपर ईशाके पास आ गई. पुरस्कार देकर ईशाने उसे गले लगा लिया. फिरसे कॅमेरेके फ्लॅश जैसे बिजली चमके ऐसे चमकने लगे.

अनघा जैसेही स्टेजसे निचे उतरकर अपने जगहपर वापस आगई एँन्करने फिरसे माईकपर कब्जा कर लिया था ,

" अब आखिरमें हम जिस पलकी इतनी बेसब्रीसे राह देख रहे है वह पल एकदम नजदिक आ पहुंचा है ... पहला पुरस्कार ऐलान करनेका पल ... इन फॅक्ट मै अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता हूं की पहला पुरस्कार किसको जानेवाला है यह ऐलान करनेका सौभाग्य मुझे मिल रहा है ... क्योंकि वह प्रतिस्पर्धी सारे भारतमें एक अव्वल प्रतिस्पर्धी रहनेवाला है ... तो पहले देखते है की वह प्रथम पुरस्कार क्या है ... प्रथम पुरस्कार है ३ लाख रुपए कॅश, मोमेंटो एँड अ जॉब ऑफर इन सीक्युर डेटा..."

सब लोग शांत होकर सुन रहे थे. मानो उस पलके लिए उन्होने अपनी सांसे रोककर रखी थी. बहुत लोग अपनी गर्दन उंची कर सामने देखने की कोशीश कर रहे थे. हॉलमें सब तरफ पिनड्रॉप सायलेन्स था

" फर्स्ट प्राईज गोज टू ... द वन एँड ओन्ली वन... मि. सॅम पॅट्रिक फ्रॉम दमन दिऊ ..."

दुसरी कतार विचलित हुई दिखी, क्योंकि दुसरी कतारसे कोई उठा था. सब लोगों के सर उस दिशामें मुड़ गए. इसबार हॉलमें सबसे बड़ा और सबसे दिर्घ तालियोंका आवाज हुवा. सचमुछ उसका यश उसके नामके अनुरूप 'सॅम' यानी की अतुलनीय था. वह उठकर लगभग दौड़ते हुए ही स्टेजपर चला गया, इससे उसका अपूर्व उत्साह और आत्मविश्वास दिख रहा था. गोरा, उंचा, स्मार्ट, कसा हुआ शरीर ऐसा वह सशक्त यूवक था. ईशाने अपनी दिशामें आते उस पहले पुरस्कारके हकदारकी तरफ देखा. उसके चेहरेपर एक तेज चमक रहा था. आंखे निली और चमकीली थी. उसकी आखोंमें देखकर पलभरके लिए ईशाको अस्तित्व की याद आ गई. लेकिन अपने विचारोंको दिमागसे झटककर वह आगे गई. वह ईशाके सामने आकर खड़ा हो गया और उसने लोगोंकी तरफ मुड़कर उनकी अभिवादन किया. पहलेका तालियोंका आवाज जो अब भी बरकरार था वह और बढ़ गया. लोगों को अभिवादन कर उसने ईशाकी तरफ देखा और उसकी नजर ईशापर से हटनेका नाम नहीं ले रही थी, मानो वह उसके मदहोश करनेवाली आंखोंमें अटकसा गया था. तालियोंकी गुंज अब भी चल रही थी. लेकिन अचानक एक अजिब घटना घटी, ईशाने जितने जोरसे हो सकता है उतनी जोरसे उसके गालपर एक चाटा जड़ दिया

था. तब कहा वो होशमें आगया. हॉलमें चल रहा तालियोंका आवाज एकदमसे बंद होगया, मानो किसीने स्विच ऑफ किया हो. उसने और वहां उपस्थित किसीनेभी सोचा नहीं होगा वैसी अजिब वह घटना थी. हां ईशाने उसके गालपर एक जोरका चाटा जमा दिया था. उसका ही क्यों सारे उपस्थित लोगोंका इस बातपर यकिन नहीं हो रहा था. हॉलमें एकदम श्मशानवत चुप्पी फैल गई.. एकदम पिनड्रॉप सायलेन्स.

" यस आय स्लॉप हिम... एंड ही डीजर्व इट... क्योंकि वह एक क्रॅकर है ... सिर्फ क्रॅकरही नहीं तो ही इज आल्सो अ ब्लॅकमेलर..." हॉलमें चुप्पीका भंग हुवा वह ईशाके इन शब्दोंनें .

ईशा लगातार बोल रही थी. उसकी आंखोंमें आग थी. गुस्सेसे ईशाका पुरा शरीर कांप रहा था. तभी इन्स्पेक्टर राणा, जो पहलेसे ही तैयार थे, वे डायसपर दो कॉन्स्टेबलके साथ आ गए. उन्होने प्रथम सॅमकी कॉलर पकडकर दो तिन तमाचे उसके कानके निचे जड दिए.

" इन्स्पेक्टर " सॅम गुर्गया.

उसके मासूम, स्मार्ट चेहरेने अब उग्र रुप धारण किया था. उसे जडाए हुए तमाचोंकी वजहसे लाल हुवा उसका चेहरा औरही भयानक लग रहा था. इन्स्पेक्टरने जादा वक्त ना दौडाते हुए उसे हथकडीयां पहनाकर अरेस्ट किया और वे गुस्सेसे चिल्लाए, " टेक दिस बास्टर्ड अवे..."

कॉन्स्टेबल उसे लेकर, लगभग खिंचते हुएही वहांसे चले गए. उसका मद और नशा अबभी उतरा हुवा नहीं दिखाई दे रहा था. वह वहांसे जाते हुए कभी गुस्सेसे इन्स्पेक्टरकी तरफ तो कभी ईशाकी तरफ देख रहा था.

" याद रखो मुझे अरेस्ट करना तुम्हे बहुत महंगा पडनेवाला है " जाते जाते वह चिल्लाया.

कॉन्स्टेबल जब सॅमको वहांसे ले गया और सॅम सब लोगोंके नजरोंसे ओझल हुवा तब कहां इतनी देरसे हक्काबक्का रहे लोगोंमे खुसुरफुसुर शुरु हो गई. कुछ लोग अबभी डरे, सहमे और सदमे मे थे, तो कुछ लोगोंको यह सब क्या हो रहा है कुछ समझ नहीं आ रहा था. प्रथम पुरस्कार जिसे मिला उस लडकेको अचानक ईशाने मारा और इन्स्पेक्टरने डायसपर आकर उसे गिरफ्तार किया. सबकुछ कैसे लोगोंके समझके बाहर था. लोगोंमें चलरही खुसुफुसुर देखकर इन्स्पेक्टरने ताड लिया की लोगोंको पुरी केस और उसकी गंभिरता समझाना जरुरी है, नहीं तो लोग और गडबडी मचा सकते है. क्योंकि सॅम जो कुछ पल पहलेही सबलोगों का हिरो था उसे ईशाने अगलेही पल उसे व्हिलन करार दिया था. लोगोंको वह सच्चा या ईशा सच्ची यह जाननेकी उत्कंठा होनाभी लाजमी था.

" शांत हो जाईए ... शांत हो जाईए प्लीज..." इन्स्पेक्टर हात उपर कर, जो कुछ लोग उठ खडे हुए थे उन्हे बिठाते हुए बोले, " कोई डरनेकी या घबरानेकी कोई जरुरत नहीं... दिस इज अ केस ऑफ ब्लॅकमेलींग एंड सायबर क्राईम... मैने खुद इस केसपर काम किया है ... और इस केसका गुनाहगारके तौरपर अभी अभी आपके सामने सॅम बिश्वास को पकडा गया है ..."

फिरभी लोग शांत होनेके लिए तैयार नहीं थे, तब ऍन्करने फिरसे माईकका कब्जा लिया, " दोस्तो शांत हो जाईए .. प्लीज शांत हो जाईए .. हमारी प्रतिस्पर्धाभी इथीकल हँकींग ... यानीकी हँकींगके बारेमेही थी... और इन्स्पेक्टरने अभी आप लोगोंके सामने हँडल की केसभी हँकींग और क्रेकींगके बारेमेंही थी .. इसलिए इन्स्पेक्टर साहेबको मेरी बिनती है की वे इस केसके बारेमें... उन्होने यह केस कैसे हँडल की... यह केस हँडल करते वक्त कीन कीन चुनौतीयोंका सामना उन्हे करना पडा... और आखिर वह गुनाहगारतक कैसे पहुँचे ... यह सब यहां इकठ्ठा हुए लोगोंको विस्तारसे बतायें ..."

अब कहा लोग फिरसे शांत हो चुके थे. यह केस क्या है? ... और इन्स्पेक्टरने उसे कैसे हँडल किया.. यह जाननेकी लोगोंमें उत्सुकता दिखने लगी. एन्करने एकबार फिरसे इन्स्पेक्टरकी तरफ देखा और उन्हे आगे आकर पुरी कहानी बयां करनेकी बिनती की. इन्स्पेक्टरने ईशाकी तरफ देखा. ईशाने आखोंसेही इजाजत दे दी. इन्स्पेक्टर सामने आये और उन्होने माईक ऍन्करसे अपने पास ले लिया .

इन्स्पेक्टर कहानी कथन करने लगे –

" सायबर क्राईम यह अब भारतमें नया नहीं रहा है ... आजकल पुरे देशमें लगभर रोज कुछना कुछ सायबर क्राईमकी घटनाएं घटीत होती रहती है लेकिन तहकिकात करते वक्त मुझे हमेशा इस बातका अहसास होता है की लोगोंकी सायबर क्राइमके बारेमें बहुत गलतफहमीयां है ... जितनी उनकी सायबर क्राईमके बारेमें गलतफहमीयां है उतनाही उनका अपने देशके पुलिस डिपार्टमेंटर भरोसा उडा हुआ दिखाई देता है ... उन्हे हमेशा आशंका लगी रहती है की यह टोपी और डंडे लेकर घुमनेवाले पुलिस यह इतना ऍडव्हान्स... यह इतना टेक्नीकल क्राईम कैसे हँडल कर सकते है? ... उन्हे सायबर क्राईमके बारेमें अपना पुलिस डिपार्टमेंट कितना सक्षम है इसके बारेमें आशंकाए लगी रहती है. ... लेकिन अब अभी अभी मैने हँडल किए केसके जरीए मै लोगोंको यकिन दिलाना चाहता हूं की ... सायबर क्राईमके बारेमें अपना पोलीस डीपार्टमेंट सिर्फ सक्षमही नहीं तो पुरी तरहसे तैयार है ... इस तरह का या और किसी तरहका गुनाह होनेके बाद जिस कार्यक्षमतासे हम दुसरे गुनाहगारोंको तुरंत पकड सकते है उसी कार्यक्षमतासे हम सायबर क्रिमीनल्सको भी पकड सकते है.... लेकिन फिर भी कुछ चिजोंके बारेमें हम गुनाह हँडल करते वक्त कम पडते है ... खासकर जब उस गुनाहको दुसरे किसी देशके जमिन से अंजाम दिया जाता है तब... उस केसमें वह गुनाहगार किसी दुसरे देशके कानूनके कार्यक्षेत्रमें आता है ... और फिर वह देश हमें उस गुनाहके बारेमें उस गुनाहगारको पकडनेके लिए कितना सहकार्य करते है इसपर सब निर्भर करता है.... सायबर गुनाहके बारेमें और एक महत्वपूर्ण बात... इसमें इंटरनेट इस्तेमाल करनेवाले लोगोंको कुछ चिजोंमें बहुतही जागरुक होना आवश्यक होता है .. जैसे किसीको, उस सामनेके पार्टीकी पुरी जानकारी रहे बिना खुदकी जानकारी पासवर्ड .. फोन ... मोबाईल देना बहुतही खतरनाक होता है ... वैसे अनसेफ, अनप्रोटेक्टेड, अनसेक्यूर कनेक्शनपर फायनांसीयल ट्रांझेक्शन करना ... अपने खुदके प्रायव्हेट फोटो इंटरनेटपर भेजना ... इत्यादी... यहभी खतरेसे खाली नहीं है... अब मै यह जो केस विस्तारपूर्वक बतानेवाला हूं ... इससे आपको किस तरह जागरुक रहना पड़ेगा इसका अंदाजा आ जाएगा ..."

इतनी प्रस्तावना देकर इन्स्पेक्टर सॉमके केसके बारेमें बताने लगे ...

एक रूममें सॅम और रघु रहते थे. रूमके स्थितीसे यह जान पड़ता था की उन्होंने रूम किराएसे ली होगी. कमरे में एक कोने में बैठकर सॅम अपने कॉम्प्यूटरपर बैठकर चॅटींग कर रहा था और कमरेके बिचोबिच रघु डीप्स मारता हुआ एक्सरसाईज कर रहा था. सॅम अपने कॉम्प्यूटरपर दिख रहे चॅटींग विंडोमें धीरे धीरे उपर खिसक रहे चॅटींग मेसेजेस एक एक करके पढ़ रहा था. शायद वह चार्टींगके लिए कोई अच्छा साथीदार ढूंढ रहा होगा. जबसे उसे चॅटींगका आविष्कार हुआ तब से ही उसे यह बहुत पसंद आया था. पहले खाली वक्तमें वक्त बितानेका गप्पे मारना इससे कारगर कोई तरीका नहीं होगा ऐसी उसकी सोच थी. लेकिन अब जबसे उसे चॅटींगका आविष्कार हुआ उसकी सोच पुरी तरह बदल गई थी. चॅटींगकी वजहसे आदमीको मिले बिना गप्पे मारना अब संभव होगया था. कुछ जान पहचानवाले तो कुछ अजनबी लोगोंसे चॅट करने में उसे बड़ा मजा आने लगा था. अजनबी लोगोंसे आमने सामने मिलने के बाद कैसे उन्हे पहले अपने कंफर्टेबल झोन में लाना पड़ता है और उसके बाद ही बातचित आगे बढ़ सकती है. और उसके लिए सामनेवाला कैसा है इसपर सब निर्भर करता है और उसको कंफर्टेबल झोन में लाने के लिए कभी एक घंटा तो कभी कई सारे दिनभी लग सकते है. चॅटींगपर वैसा नहीं होता है. कोई पहचान का हो या अजनबी बिनदास्त मेसेज भेज दो. सामनेवाले ने एंटरटेन किया तो ठीक नहीं तो दुसरा कोई साथी ढूंढो. अपने पास सारे विकल्प होते है. कुछ न समझनेवाले तो कुछ गाली गलोच वाले कुछ संवाद उसे चॅटींग विंडोमें उपर उपर खिसकते हुए दिखाई दे रहे थे.

तभी उसे बाकी मेसेजसे कुछ अलग मेसेज दिखा ,

" अच्छा तुम क्या करती हो? ... मेरा मतलब पढाई या जॉब?"

किसी अस्तित्व का मेसेज था.

वह उसका असली नामभी हो सकता था या नकली ...

" मैने बी. ई. कॉम्प्यूटर किया हुआ है ... और जी. एच. इन्फॉर्मॅटीक्स इस खुदके कंपनीकी मै फिलहाल मैनेजींग डायरेक्टर हूं " अस्तित्व के मेसेजके रिस्पॉन्सके तौरपर यह मेसेज अवतरीत हुआ था.

भेजनेवाले का नाम ईशा था.

अचानक मेसेज पढ़ते हुए सॅमके दिमागमें एक विचार कौंधा.

इस मेसेजसे क्या मै कुछ फायदा ले सकता हूं ?...

वह मनही मन सोचकर सारी संभावनाए टटोल रहा था. सोचते हुए अचानक उसके दिमागमें एक आयडीया आ गया.

वह झटसे रघुकी तरफ मुड़ते हुए बोला, " रघु जल्दीसे इधर आ जाओ "

उसका चेहरा एक तरहकी चमकसे दमक रहा था.

रघु एक्सरसाईज करते हुए रुक गया और कुछ इंटेरेस्ट ना दिखाते हुए धीमे धीमे उसके पास आकर बोला, " क्या है ?... अब मुझे ठिकसे एक्सरसाईज भी नहीं करने देगा ?"

" अरे इधर मॉनिटरपर तो देखो ... एक सोनेका अंडा देनेवाली मुर्गी हमें मिल सकती है .." सॅम फिरसे उसका इंटेरेस्ट जागृत करनेका प्रयास करते हुए बोला.

अब कहा रघु थोडा इंटेरेस्ट लेकर मॉनिटरकी तरफ देखने लगा.

तभी चॅटींग विंडोमें अवतरित हुआ और उपर खिसक रहा अस्तित्व का और एक मेसेज उन्हे दिखाई दिया,

" अरे बापरे!.. " तुम्हे तुम्हारे उम्रके बारेमें पुछा तो गुस्सा तो नहीं आएगा ?... नहीं ... मतलब मैंने कही पढा है की लडकियोंको उनके उम्रके बारेमें पुछना अच्छा नहीं लगता है. ... "

उसके बाद तुरंत ईशाने भेजा हुआ रिस्पॉन्सभी अवतरित हुआ –

" २३ साल"

" देख तो यह हंस और हंसिनी का जोडा... यह हंसीनी एक सॉफ्टवेअर कंपनीकी मालिक है ... मतलब मल्टी मिलीयन डॉलर्स..." सॅम अपने चेहरेपर आए लालचभरे भाव छूपानेका प्रयास करते हुए बोला.

तभी फिरसे चॅटींग विंडोमें अस्तित्व का मेसेज अवतरित हुआ,

" अरे यह तो मुझे पताही था... मैंने तुम्हारे मेल आयडीसे मालूम किया था.... सच कहूं ? तूम्हने जब बताया की तूम्ह मॅनेजींग डायरेक्टर हो ... तो मेरे सामने एक ४५-५० सालके वयस्क औरतकी तस्वीर आ गई थी..."

रघुने उन दोनोंके उस विंडोमें दिख रहे सारे मेसेजेस पढ लिए और पुछा, " लेकिन हमें क्या करना पड़ेगा ?"

" क्या करना है यह सब तुम मुझपर छोड दो ... सिर्फ मुझे तुम्हारा साथ चाहिए " सॅम अपना हाथ आगे बढ़ाते हुआ बोला.

" कितने पैसे मिलेंगे ?" रघुने असली बातपर आते हुए सवाल पुछा.

" अरे लाखो करोडो में खेल सकते हैं हम " सॅम रघुका लालच जागृत करनेका प्रयास करते हुए बोला.

" लाखो करोडो?" रघु सॅमका हाथ अपने हाथमे लेते हुए बोला, " तो फिर मैं तो अपनी जानभी देनेके लिए तैयार हूँ "

तभी फिरसे चॅटींग विंडोमें ईशाका मेसेज अवतरीत हुआ , " तूमने तुम्हारी उम्र नहीं बताई ?..."

उसके पिछेही अस्तित्व का जवाब चॅटींग विंडोमें अवतरीत हुआ, " मैने मेरे मेल ऍड्रेसकी जानकारीमें ... मेरी असली उम्र डाली हुई है ..."

" २३ साल... बहुत नाजुक उम्र होती है ... मछली प्यारके जालमें फसकर कुछभी कर सकती है " सॅम अजिब तरहसे मुस्कुराते हुए बोला.

लगभग आधी रात हो गई थी. सॅमके कमरेका लाईट बंद था. लेकिन फिरभी कमरेमें चारो तरफ धुंधली रोशनी फैल गई थी- कमरेमें, कोनेमें चल रहे कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी वजहसे. सॅम कॉम्प्यूटरपर कुछ करनेमें बहुत लीन था. उसके आसपास सब तरफ खानेकी, नाश्तेकी प्लेट्स, चायके खाली, आधे भरे हुए कप्स, चिप्स, खाली हो चुके किस्किके ग्लासेस और आधीसे जादा खाली हो चुकी किस्किकी बॉटल दिख रही थी. उसके पिछे कॉटपर हाथपैर फैलाकर रघु सोया हुआ था. उस आधी रातके सन्नाटेमें सॅम तेजीसे कॉम्प्यूटरपर कुछ कर रहा था और उसके किबोर्डके बटन्सका एक अजिब आवाज उस कमरेमें आ रहा था. उधर सॅमके पिछे सो रहे रघुका बेचैनीसे करवटपे करवट बदलना जारी था.

आखिर अपने आपको ना रोक पाकर रघु उठकर बैठते हुए सॅमसे बोला, " यार तेरा यह क्या चल रहा है? ... ८ दिनसे देख रहा हूं ... दिनभर किचकिच... रातकोभी किचकिच... कभीतो शांतीसे सोने दे... तेरे इस साले किबोर्डके आवाजसे तो मेरा दिमाग पागल होनेकी नौबत आई है ..."

सॅम एकदम शांत और चूप था. कुछभी प्रतिक्रिया ना व्यक्त करते हुए उसका अपना कॉम्प्यूटरपर काम करना जारी था.

"अच्छा तुम क्या कर रहे हो यह तो बताएगा ? ... आठ दिनसे तेरा ऐसा कौनसा काम चल रहा है ?... मेरी तो कुछ समझमें नहीं आ रहा है ..." रघु उठकर उसके पास आते हुए बोला.

" अस्तित्व और ईशाका पासवर्ड ब्रेक कर रहा हूं ईशाका ब्रेक हो चुका है अब अस्तित्व का ब्रेक करनेकी कोशीश कर रहा हूं " सॅम उसकी तरफ ना देखते हुए कॉम्प्यूटरपर अपना काम वैसाही शुरू रखते हुए बोला. .

" उधर तु पासवर्ड ब्रेक कर रहा है और इधर तेरे इस किबोर्डके किचकीचसे मेरा सर ब्रेक होनेकी नौबत आई है उसका क्या ?" रघु फिरसे बेडपर जाकर सोनेकी कोशीश करते हुए बोला.

किसका पासवर्ड ब्रेक हुआ और किसका ब्रेक होनेका रहा इससे उसे कुछ लेना देना नहीं था. उसे तो सिर्फ पैसेसे मतलब था. रघुने अपने सरपर चादर ओढ ली, फिरभी आवाज आ ही रहा था, फिर तकिया कानपर रखकर देखा, फिरभी आवाज आ ही रहा था, आखीर उसने तकीया एक कोनेमें फाडा और उसमेंसे थोड़ी रुई निकालकर अपने दोनो कानोंमे ठूस दी और फिरसे सोनेकी कोशीश करने लगा.

अब लगभग सुबहके तिन बजे होंगे, फिरभी सॅमका कॉम्प्यूटरपर काम करना जारीही था. उसके पिछे बेडपर पडा हुआ रघु गहरी निंदमें सोया दिख रहा था.

तभी कॉम्प्यूटरपर काम करते करते सॅम खुशीके मारे एकदम उठकर खड़ा होते हुए चिल्लाया,
" यस... या हू... आय हॅव डन इट"

वह इतनी जोरसे चिल्लाया की बेडवर सोया हुआ रघु डरके मारे जाग गया और चौककर उठते हुए घबराए स्वरमें इधर उधर देखते हुए सॅमसे पुछने लगा, " क्या हुआ ? क्या हुआ ? "

" कम ऑन चियर्स रघु... हमें अब खजानेकी चाबी मिल चुकी है ... देख इधर तो देख ..."
सॅम रघुका हाथ पकड़कर उसे कॉम्प्यूटरकी तरफ खिंचकर ले जाते हुए बोला.

रघु जबरदस्तीही उसके साथ आगया. और मॉनिटरपर देखने लगा.

" यह देखो मैंने अस्तित्व का पासवर्डभी ब्रेक किया है और यह देख उसने भेजी हुई मेल " सॅम रघुका ध्यान मॉनिटरपर अस्तित्व के मेलबॉक्ससे खोले हुए एक मेलकी तरफ आकर्षित करते हुए बोला.

मॉनिटरपर खोले मेलमें लिखा हुआ था –

" अस्तित्व ... २५ को सुबह बारा बजे एक मिटींगके सिलसिलेमें मैं मुंबई आ रही हूं ...
१२.३० बजे हॉटेल ओबेराय पहुँचूंगी ... और फिर फ्रेश वगैरे होकर १.०० बजे मिटींग अटेंड करूंगी ... मिटींग ३-४ बजेतक खत्म हो जाएगी ... तुम मुझे बराबर ५.०० बजे वसोवा बिचपर मिलो ... बाय फॉर नॉऊ... टेक केअर"

" चलो अब हमें अपना बस्ता यहांसे मुंबईको ले जानेकी तैयारी करनी पड़ेगी. " सॅमने रघुसे कहा.

रघु अविश्वासके साथ सॅमकी तरफ देख रहा था. अब कहां उसे अस्तित्व आठ दिनसे क्या कर रहा था और किस लिए कर रहा था यह पता चल गया था.

" यार सॅम ... यू आर जिनियस" अब रघुके बदनमेंभी जोश दौड़ने लगा था.

वर्सोवा बिचपर ईशा अस्तित्व की राह देख रही थी और उधर बड़े बड़े पत्थरोंके पिछे छुपकर सॅम और रघु अपने अपने कॅमेरे उसपर केंद्रीत कर विवकके आनेकी राह देखने लगे. थोड़ी देरमें अस्तित्व भी आ गया, अस्तित्व और ईशामें कुछ संवाद हुआ, जो उन्हें सुनाई नहीं दे रहा था लेकिन उनके कॅमेरे अब उनके एक के पिछे एक फोटो खिंचने लगे. थोड़ीही देरमें अस्तित्व और ईशा एकदूसरेके हाथमें हाथ डालकर बिचपर चलने लगे. इधर सॅम और रघुभी पत्थरोके पिछेसे आगे आगे खिसकते हुए उनके फोटो ले रहे थे.

अंधेरा छाने लगा था और एक लमहेमें उनमें क्या संवाद हुआ क्या पता?, अस्तित्व ने ईशाको कसकर अपने बांहोंमें खिंच लिया. इधर सॅम और रघुकी फोटो निकालनेकी रफ्तार तेज हो गई थी. फिरभी वे संतुष्ट नहीं थे. क्योंकि उन्हें जो चाहिए था वह अबभी नहीं मिला था.

ईशाकी कार जब ओबेराय हॉटेलके सामने आकर रुकी. उसके कारका पिछा कर रही सॅम और रघुकी टॅक्सीभी एक सुरक्षीत अंतर रखकर रुक गई. ईशा गाडीसे उतरकर हॉटेलमें जाने लगी और उसके पिछे अस्तित्व भी जा रहा था, तब सॅमने रघुकी तरफ एक अर्थपूर्ण नजरसे देखा और वे दोनोंभी उनके खयालमें नहीं आए इसका ध्यान रखते हुए उनका पिछा करने लगे.

अब ईशा और अस्तित्व हॉटेलके रुममें पहुंच गए थे और रुमका दरवाजा बंद हो गया था. उनका पिछा कर रहे सॅम और रघु अब जल्दी करते हुए उनके रुमके दरवाजेके पास आ गए. रघुने दरवाजा धकेलकर देखा. वह अंदरसे बंद था.

" अब क्या हम यहां उनकी पहरेदारी करनेवाले हैं ?" रघुने चिढ़कर लेकिन धीमे स्वरमें कहा.

" डोन्ट वरी... वुई हॅव अ सोल्यूशन " सॅमने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा.

रघु दरवाजेके कीहोलसे अंदर हॉटेलके रुममें देख रहा था ...

अंदर फोन उठाते हुए ईशाके हाथका हल्कासा स्पर्श अस्तित्व को हुआ. बादमें फोनका नंबर डायल करनेके लिए उसने दुसरा हाथ सामने किया. इसबार उस हाथकाभी अस्तित्व को स्पर्श हुआ. इसबार अस्तित्व अपने आपको रोक नहीं सका. उसने ईशाका फोन डायल करनेके लिए सामने किया हाथ हल्केसे अपने हाथमें लिया. ईशा उसकी तरफ देखकर शर्माकर मुस्कराई. उसने अब वह हाथ कसकर पकड़कर खिंचकर उसे अपने आगोशमें लिया था. सबकुछ कैसे तेजीसे हो रहा था. उसके होंठ अब थरथराने लगे थे. अस्तित्व ने अपने गरम और अधीर हुए होंठ उसके थरथराते होंठपर रख दिए और उसे झटसे अपने मजबूत आगोशमें लेकर, उठाकर, बाजुमें रखे बेडपर लिटा दिया

रघु अंदर कीहोलसे इतनी देरसे अंदर क्या देख रहा है? ... और वहभी कुछ शिकायत ना करते

हूए. सॅमको आशंका हुई. उसने रघुका सर कीहोल से बाजू हटाया. और वह अब खुद अंदर देखने लगा ...

अंदर ईशाके शरीर पर अस्तित्व झुक गया था और वह उसके गलेको चुम रहा था मानो उसके कानमें कुछ कह रहा हो. धीरे धीरे उसका मजबुत मर्दानी हाथ उसके नाजूक अंगोसे खेलने लगा. और प्रतिक्रियाके रुपमें वहभी किसी लताकी तरह उसे चिपककर सहला रही थी. हकसे अब वह उसके शरीरसे एक एक कर कपडे निकालने लगा और वहभी उसके शरीरसे कपडे निकालने लगी....

रघुने सॅमकी उसका सर कीहोलसे बाजू होगा इसकी थोड़ी देर राह देखी. लेकिन वह वहांसे हटनेके लिए तैयार नहीं था. तब रघुने जबरदस्ती उसका सर कीहोलसे बाजू हटाया और वह उसे बोला, " मेर भाई यह देखनेसे अपना पेट भरनेवाला नहीं है ... थोडा अपने पेट पानीका भी सोचो "

अंदरका दृष्य देखनेमें लिन हूवा सॅम अब कहा होशमें आ गया.

" लेकिन अब उनके फोटो तूम कैसे निकालनेवाले हो ?" रघुने कामका सवाल पुछ लिया.

" डोन्ट वरी वुई आर इक्वीपड विथ टेक्नॉलॉजी." रघुने उसे दिलासा दिया और उसने अपने जेबसे एक वायरजैसी चिज निकालकर उसका एक सिरा अपने कॅमेरेसे जोडा और दुसरा सिरा दरवाजेके कीहोलसे अंदर डाला.

" यह क्या है ... पता है ?" रघुने पुछा.

" दिस इज स्पेशल कॅमेरा माय डियर" सॅमने कहा और वह उस स्पेशल कॅमेरेसे हॉटेलके रुमके अंदरके सारे फोटो निकालने लगा.

शामका वक्त था. सॅम सुबहसे अबतक उसके रुममें कॉम्प्यूटरपर बैठा हुआ था. रघु उसके बगलमें आकर खड़ा हो गया और उसका क्या चल रहा है यह देखने लगा. रघुकी आहट होतेही सॅम कीबोर्डकी कुछ बटन्स दबाता हुआ बोला,

" देख यह है हमने निकाली हुई तस्वीरें ... कैसी लग रही है ?"

कॉम्प्यूटरके मॉनिटरपर ईशा और अस्तित्व की हॉट फोटोज किसी स्लाईड शो की तरह एकके पिछे एक ऐसी आगे आगे खिसकने लगी.

" वा वा .. एकदम परफेक्ट... जस्ट लाईक अ प्रोफेशनल फोटोग्राफर..." रघु सॅमकी सराहना करते हुए बोला.

" लेकिन सिर्फ यह फोटोग्राफ्स देखकर क्या होनेवाला है ... हमें आगे भी कुछ करना पड़ेगा ... सिर्फ सुबहसे शामतक कॉम्प्यूटरपर बैठकर क्या होनेवाला है? " रघु उसे ताना मारते हुए बोला.

" अरे ... अब आगेका काम यह कॉम्प्यूटरही करनेवाला है ... पहले मैं ईशाके मेलबॉक्ससे अस्तित्व को एक मेल भेजता हूं ... फिर उसके बाद तुम्हारा काम शुरू होनेवाला है " सॅमने कहा.

" तूम मेरे कामके बारेमें एकदम बिनदास रहो ... सिर्फ पहले तुम्हारा काम होनेके बाद मुझे बता देना .. " रघुने कहा.

सॅमने काफी मेहनत करके हासिल किया हुआ पासवर्ड देकर ईशाका मेलबॉक्स खोला और वह मेल टाईप करने लगा –

" अस्तित्व ... सबसे पहले तुम्हें लिखू या ना लिखू ऐसा सोचा लेकिन बादमें तय किया की लिखनाही ठिक रहेगा ... हम मुंबईको मिलनेके बाद मैं वापस गई और इधर एक प्रॉब्लेम होगया ... वैसे उसको प्रॉब्लेम नहीं बोल सकते ... लेकिन तुम्हारे लिए उसे प्रॉब्लेमही कहना पड़ेगा ... इधर मेरे रिश्तेदारोंको क्या लगा क्या मालूम लेकिन उन्होंने तुरंत मेरी शादी तय की है ... पहले मुझे बहुत बुरा लगा ... लेकिन बादमें मैंने उसके बारेमें बहुत सोचा और मैं इस नतिजेपर पहुंची हू की मेरे रिश्तेदार जो भी कर रहे हैं वह मेरे भलेके लिए ही हैं .. लड़का अच्छा है, अमेरीकामें पढ़ा हुआ है इंडस्ट्रीयल फॅमिली है और हमारे बराबरीकी है ... अब मुझे धीरे धीरे समझने लगा है की अबतक जो भी हमारे बिच हुआ वह एक अपरीपक्वताका नतिजा था.... इसलिए तुम्हारे और मेरे लिए यही अच्छा रहेगा की कुछ हुवाही नहीं इस तरह सब भूल जाएं ... हम मुंबईको मिलें थे यह शायद मेरे रिश्तेदारोंको पता चल चुका है ... तुमने

मुझसे मिलनेकी या मुझसे संपर्क बनानेकी कोशीशभी की तो वे लोग तुम्हे कुछभी कर सकते हैं ... इसलिए तुम इस मेलका रिप्लायभी मत भेजना ... मेरा मेलबॉक्सभी शायद मॉनिटर किया जा रहा है ... अपना खयाल रखना ...इतनाही मैं तुम्हे कह सकती हूं ... ईशा"

समने मेल मानो ईशानेही टाईप कर अस्तित्व को भेजी हो इस तरहसे टाईप की. मेल पुरी तरह लिखनेके बाद उसने एक बार फिरसे उसे पढ़कर देखा. उसके चेहरेपर एक वहशी मुस्कुराहट छुपाए नहीं छुपाई जा रही थी. उस मेलमें कुछभी त्रुटी बची नहीं है इसकी तसल्ली होतेही उसने वह मेल अस्तित्व को भेज दी और ईशाका मेलबॉक्स बंद किया.

इधर अस्तित्व सायबर कॅफेमें बैठा था. उसे आशंका ... नहीं यकिन था की ईशाकी कोई तो मेल उसे आई होगी. उसने अपना मेलबॉक्स खोला और उसे मेलबॉक्समें ईशाकी आई हुई मेल दिखाई दी. उसने तुरंत, मानो उसके बदनमें बिजली दौड़ गई हो, वह मेल खोली. मेल पढ़ते हुए उसका खिला चेहरा एकदमसे मायूस हो गया. मेल पुरी पढ़नेके बादभी वह जैसे शून्यमें देख रहा हो ऐसे मॉनिटरकी तरफ देखता रहा.

यह ऐसे कैसे हूवा ?...

वह अपना मजाक तो नहीं कर रही है ?...

उसे एक पलके लिए लगा.

तभी सायबर कॅफेमें एक आदमी आ गया. वह आए बराबर सिधा अस्तित्व के पास गया. धीरेसे उसके पास झुककर उसने उसके कानमें कुछ कहा, –

" अस्तित्व ... आपही है ना ?"

" हां " अस्तित्व आश्चर्यसे उस आदमीकी तरफ देखते हुए बोला.

क्योंकी वह उस आदमी को पहचानता नहीं था.

" ईशाजी घरसे भागकर आई है ... बाहर गाडीमें आपकी राह देख रही है ..." वह आदमी फिरसे उसके कानमें बोला.

अस्तित्व ने झटसे कॉम्प्यूटरके मॉनिटरपर खुले हुए थे वह सब वेब पेजेस बंद कर दिए. और उस आदमीके पिछे पिछे सायबर कॅफेसे बाहर निकल गया.

उस आदमीके पिछे पिछे सायबर कॅफेके बाहर जाते हुए अस्तित्व सोचने लगा.

उसने तो मुझे जो हूवा वह सब भूल जानेके लिए मेल की थी ...

फिर वह अचानक भागकर क्यों आ गई होगी?

शायद उसके रिश्तेदारों ने उसपर दबाव बनाया होगा ...

और इसलिए उसने वह मेल लिखी होगी ...

अब अस्तित्व उस आदमी के पिछे पिछे सायबर कॅफे के बाहर पहुंच गया था. बाहर सब तरफ अंधेरा था और अंधेरे में एक कोने में उसे एक खिड़कीयों को सब काले शिंशे लगाई हुई कार दिखाई दी.

इसी गाड़ी में आई होगी ईशा...

जैसे वह आदमी उस गाड़ी की तरफ बढ़ने लगा, अस्तित्व भी उसके पिछे पिछे उस गाड़ी की तरफ बढ़ने लगा. गाड़ी के पास पहुंचते ही उसके खयाल में आगया की गाड़ी का पिछला दरवाजा खुला है.

दरवाजा खुला रखकर वह अपनी राह देख रही होगी....

गाड़ी के और पास पहुंचते ही अस्तित्व ने पिछले खुले दरवाजे से ईशा के लिए अंदर झांककर देखा.

लेकिन यह क्या ?...

तभी किसी काले साये ने पिछे से आकर उसके नाक पर क्लोरोफॉर्म का रुमाल रख दिया और उसे अंदर गाड़ी में धकेल दिया. वह अंदर जाने के लिए प्रतिकार करने लगा तो उस काले साये ने लगभग जबरदस्ती उसे अंदर ठूस दिया. गाड़ी का दरवाजा बंद होगया और गाड़ी तेजी से दौड़ने लगी. अस्तित्व के खयाल में आगया की उसके साथ कुछ धोखा हुआ है. लेकिन तब तक देर हो चुकी थी. उसे अब अहसास होने लगा था की वह अपना होश खोने लगा है.

जिस आदमी ने अस्तित्व को गाड़ी तक लाया था उसने जेब से पैसे निकाले और वह वे पैसे गिनते हुए वहां से निकल गया.

अस्तित्व एक बेड पर बेसुध पड़ा हुआ था. अब धीरे धीरे उसे होश आने लगा था. जैसे ही वह पूरी तरह होश में आगया, उसे वह एक अन्जान जगह पर है ऐसा अहसास होगया. वह तुरंत बैठ गया और अपनी नजर चारों तरफ दौड़ाने लगा. उसके सामने रघु और उसके दो साथी काले लिबास में बैठे थे. उनके चेहरे भी काले कपड़े से ढंके हुए थे. अस्तित्व ने उठकर खड़े होने की कोशिश की तब उसके खयाल में आगया की उसके हाथ पैर बंधे हुए हैं.

वैसेही हालमें जोर लगाकर फिरसे उठकर खड़े होनेकी कोशीश करते हुए वह बोला, " कौन हो आप लोग? ... मुझे यहां कहां और क्यों लाया आप लोगोंने ..."

" चिंता मत करो ... यहां हम तुझे ठाठबाटमें रखनेवाले हैं ... हमने तुम्हें ईशाजीके रिस्तेदारोंके कहे अनुसार यहा लाया है ... वैसे वे लोग बहुत अच्छे हैं ... जादातर ऐसे झमेलेमें पड़ते नहीं हैं ... लेकिन क्या करे इसबार बाते उनके बसके बाहर निकल गई .. फिरभी उन्होंने तुम्हें कोई तकलिफ ना हो इसका खास ध्यान रखनेकी हिदायत दी है ... "

रघु वहांसे उठकर जानेलगा तो अस्तित्व चिल्लाया.

" मुझे छोड दो ... मुझे पकडकर तुम्हें क्या मिलनेवाला है ?"

रघु जाते हुए एकदमसे रुक गया, और मुंहपर उंगली रखते हुए अस्तित्व से बोला,

" चूप जादा आवाज नहीं करना ... "

फिर अपने दो साथीकी तरफ देखकर वह बोला, " ओय... तुम दोनो इसपर ध्यान रखो ... "

फिर दुबारा अस्तित्व की तरफ देखकर रघु बोला, " और मजनू तूम ... जादा चालाकी करनेकी कोशीश मत करना.. नहीं तो दोनो पैर तोडकर तुम्हारे हाथमें दे देंगे... और ध्यान रखो ईशाजीके रिस्तेदार अच्छे लोग होंगे ... हम नहीं ... "

रघु आगे और उसके दो साथी उसके पिछे पिछे कमरेके बाहर निकल गए. उन्होंने कमरेको बाहरसे ताला लगाकर चाबी उन दोनोंमेंसे एक के पास दी, उसे वह चाबी संभालकर रखनेकी हिदायत दी और रघु वहांसे निकल गया.

सुबहका वक्त था। एक कमरेमें सॅम कॉम्प्यूटर पर बैठा था और रघु उसके बगलमें बैठा हुआ था, " अब देखो ... हमारा मजदूरीका काम अब खत्म हुआ है " सॅमने रघुसे कहा और उसने कॉम्प्यूटरपर अस्तित्व के मेलबॉक्सका ब्रेक किया हुआ पासवर्ड देकर अस्तित्व का मेलबॉक्स खोला।

" अब असली काम शुरू हो गया है ..." सॅम कॉम्प्यूटर ऑपरेट करते हुए बोला।

रघु चूपचाप गौरसे वह क्या कर रहा है यह देख रहा था।

सॅम अब अस्तित्व के मेलबॉक्समें मेल टाईप करने लगा –

" मिस ईशा... हाय... वुई हॅड अ नाईस टाईम ... आय रिअली ऍन्जॉइड इट.. खुशीसे लथपथ और आपके प्यारसे भीगे हुए वह क्षण मैंने अपने हृदय और कॅमेरेमें कैद कर रखे है ..."

सॅमने टाईप करते हुए एक बार रघुकी तरफ देखा। दोनों एक दुसरेकी तरफ देखकर अजीब तरहसे मुस्कराए। फिर सॅम आगे टाईप करने लगा –

" मैं तुम्हारी क्षमा मांगता हूं की वे पल मैंने तुम्हारे इजाजतके बिना कॅमेरेमें कैद किए ... वे पल थे ही ऐसे की मैं अपने आपको रोक ना सका ... तुम्हें झूठ लगता है? ... तो देखो ... उन पलोंमेंसे एक पलका फोटो मैं इस मेलके साथ भेज रहा हूं ... ऐसे काफी पल मैंने मेरे कॅमेरेमें और मेरे दिलमें कैद करके रखे है ... सोच रहा हूं की उन पलोंको .. उन फोटोग्राफ्सको इंटरनेटपर पब्लीश करूं ... क्यों कैसी झकास आयडिया है ? नहीं? ... लेकिन वह तुम्हें पसंद नहीं आएगा ... नहीं तुम्हारी अगर वैसी इच्छा ना हो तो उन पलोंकी मैं हमेशाके लिए मेरे हृदयमें दफन कर सकता हूं ... लेकिन उसके लिए तुम्हें एक मामुली किमत अदा करनी होगी ... क्या करें हर चिजकी एक तय किमत होती है ... नहीं?..."

फिरसे सॅम टाईप करते हुए रुका, वह रघुकी तरफ मुड़कर बोला,

" रघु बोलो तुम्हें कितनी किमत चाहिए ?"

" मांगो २०-२५ लाख" रघुने कहा।

" बस २५ लाखही ... ऐसा करते है २५ तुम्हारे और २५ मेरे ... ५० कैसा रहेगा " सॅमने कहा।

" ५० !" रघु आश्चर्यभरी आंखोंसे सॅमकी तरफ देखते हुए बोला।

सॅम फिरसे बची हूई मेल टाईप करने लगा —

" कुछ नहीं बस सिर्फ ५० लाख रुपए... तुम्हारे लिए एकदम मामूली रकम है ... और हां ... पैसोंका बंदोबस्त जल्दसे जल्द करो ... पैसे कहां और कैसे पहुंचाने है ... यह सब बादकी मेलमें बताऊंगा ...

मैं इस मेलके लिए तुम्हारी तहे दिलसे माफी चाहता हूं ... लेकिन क्या करे कुछ पानेके लिए कुछ खोना पडता है ... अगले मेलकी प्रतिक्षा करना... और हां ... मुझे पुलिससे बहुत डर लगता है ... और जब मुझे डर लगता है तब मैं कुछभी कर सकता हूं किसीका खुनभी ...

— तुम्हारा ... सिर्फ तुम्हारा ... अस्तित्व "

सॅमने पुरी मेल टाईप की. फिर एक दो बार पढकर देखी ताकी कोई गलती ना छुटे. फिर कोई गलती नहीं है इसकी तसल्ली होते ही 'सेंड' बटनपर क्लीक कर ईशाको भेजभी दी.

जब स्क्रीनपर 'मेल सेंट' मेसेज आया. दोनोंने एक दुसरेका हाथ टकराकर ताली बजाई.

उधर ईशाने जब मेलबॉक्स खोलकर वह मेल पढी, उसे अपने पैरोंके निचेसे मानो जमिन खिसक गई हो ऐसा लगा. उसने झटसे अपने सामने रखे इंटरकॉमपर दो डीजीट दबाए ,

" दीपिका... सेन्ड निकिता इन ... इमिडीयटली"

शामका वक्त था. सॅम एक कमरेमें कॉम्प्यूटरपर बैठा हुआ था. उस कमरेसे बगलकेही कमरेमें बंद किया हुआ अस्तित्व दिख रहा था. लेकिन अस्तित्व को उसके कमरेसे सॅमके कमरेमेंका कुछ नहीं दिख रहा था. सॅमको रातदिन कॉम्प्यूटरके सिवा कुछ सुझताही न था. रघु अपना एक्सरसाईज वैगरे निपटाकर पसिना पोंछते हुएही अतुलके पास जाकर बैठ गया.

" क्यों लडकी क्या बोलती है? ... उसे पैसा प्यारा है या अपनी इज्जत? " रघुने पुछा.

रघुको अपने पास आकर बैठा हुआ पाकर अतुल अस्तित्व का मेलबॉक्स खोलते हुए बोला,

" देखो तुम्हे एक मजेकी चिज दिखाता हूं "

सॅमने अस्तित्व के मेलबॉक्समेंसे एक मेल खोली.

" देखोतो इस मेलमें ईशाने क्या लिखा हुआ है."

दोनो पढने लगे. मेल पढनेके बाद दोनो उनके कमरेको और अस्तित्व के कमरेको अलक करते कांचसे अस्तित्व की तरफ देखने लगे.

"देखोतो इस मेलमें यह ईशा ...

अस्तित्व को समझानेकी कोशीश कर रही है...

वह सोच रही होगी..

कबूतरकी एकदमसे कैसे मर गयी सारी वफाए...

अब इसको क्या बताएं, कैसे समझाएं

कि बेचारा इधर पिंजरेमे बंधा तडप रहा है "

फिरसे अस्तित्व की तरफ देखते हुए उन्होंने एक दुसरेके हाथसे ताली बजाई और वे जोरसे हंसने लगे. दोनोंका हंसना थमनेके बाद रघुने एक आशंका उपस्थित की,

" यह अस्तित्व अपने होस्टेलसे अचानक गायब होनेसे वहा कुछ हंगामा तो नही खडा होगा ?"

" अरे हां ... अच्छा हुआ तुमने याद दिलाया ... उसके होस्टेलमें रह रहे उसके किसी दोस्तको मेल कर उसका बंदोबस्त करता हूं " सॅमने कहा.

सॅम मेल टाईप करने लगा और टाईप करते हुए बोला, " लेकिन रघु याद रखो ... इसके आगेही असली खतरा है ... इसके आगे हमे सारी मेल्स अलग अलग सायबर कॅफेमें जाकर भेजनी पड़ेगी ... नहीं तो ट्रेस होनेका बड़ा खतरा है ... "

.... कॉम्प्यूटरपर मेल आनेका बझर बजतेही ईशाने अपना मेलबॉक्स खोला. उसे एक नई मेल आयी हुई दिखाई दी. वह मेल उसने भेजे स्निफर प्रोग्रामकीही थी. उसने झटसे वह मेल खोली और

" यस्स!" उसके मुंहसे जितभरे उद्गार निकले.

उसने भेजे स्निफरने अपना काम सही सही निभाया था.

उसने बिजलीके गतीसे मेल सॉफ्टवेअर ओपन किया और ...

" यह उसका मेल आयडी और यह उसका पासवर्ड" कहते हुए अस्तित्व का मेल ऍट्रेस टाईप करते हुए उस प्रोग्रामको अस्तित्व के मेलका पासवर्ड दिया.

ईशाने उसका मेल अकाउंट खोलतेही और की बोर्डकी दो चार बटन्स और दोन चार माऊस क्लीक्स दबाए. और दोनोभी कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ देखने लगी.

" ओ माय गॉड ... आय जस्ट कान्ट बिलीव्ह" ईशाके खुले मुंहसे निकला.

निकिता कभी मॉनिटरकी तरफ तो कभी ईशाके आश्चर्यसे खुले मुंहकी तरफ देख रही थी.

" निकिता यह देखो अस्तित्व के मेलबॉक्समें ... देखो यह मेल ... जो है तो मेरे नामकी पर मैने भेजी नहीं है ... " " मतलब ?" निकिताने पुछा.

" मतलब मै और अस्तित्व के अलावा दुसरा कोई है जो यह मेल अकाउंटस खोल रहा है ... और हो सकता है वही तिसरा आदमी जो मुझे ब्लॉकमेल कर रहा है ... लेकिन वह तिसरा है कौन ?"

कॉन्फरंस रुममें ईशा, इन्स्पेक्टर राणा और निकिता बैठे हुए थे. ईशा इन्स्पेक्टर और निकितासे इसी केसके सिलसिलेमें कुछ बातें कर रही थी. सब कुछ बयान होनेके बाद ईशाने एक लंबी सांस ली और आगे कहा,

" तो पूरी कहानी इस प्रकार है ... "

ईशाने फिरसे एकबार सामने बैठे इन्स्पेक्टर राणा और निकिताकी तरफ देखा.

" राणा अंकल... अब मुझे डर ... वह ब्लॉकमेलर फोटो इंटरनेटपर डालेगा क्या? इस बात का नहीं है ... मुझे असली चिंता है अस्तित्व की ... शायद अस्तित्व उनके कब्जेमें है ... उसके जानको खतरा तो नहीं ?" ईशाने अपना डर जाहिर किया.

" उसकी जो मेल आई थी उसे हमारे एक्स्पर्ट्सने ट्रेस करनेकी कोशीश की थी ... एकज्याट लोकेशन और कॉम्प्यूटरका तो कुछ पता नहीं चला ... लेकिन इतना जरूर पता चला की मेल मुंबईसे कहींसे की गई होगी."

" इसका मतलब पैसे कहां देना है और कैसे देना है यह बतानेवाली मेलभी मुंबईसेही आएगी " इतनी देरसे चुप्पी साथी हुई निकिता पहली बार बोली.

" शायद हां ... या शायद ना भी ... यह वह क्रिमीनल कितना पहुंचा है इसपर निर्भर करेगा ... लेकिन इसबार हम पहलेसेही तयार होनेसे, मेल कौनसे गांवसे, उस गांवके किस जगहसे और कौनसे कॉम्प्यूटरसे आई यह हमें पता चल सकेगा ... " इन्स्पेक्टरने कहा.

" इसका मतलब हमारे पास उसके अगले मेलका इंतजार करनेके अलावा दुसरा कोई चारा नहीं है ... " ईशा निराश होकर बोली.

" हां ... लगता तो ऐसाही है .. " इन्स्पेक्टरभी सोचते हुए सारी संभावनाएं जांचते हुए बोला.

एक पुरानी कार एक सायबर कॅफेके पास आकर रुकी. गाडीके ड्रायव्हिंग सिटपर रघु बैठा हुआ था और उसके बगलके सिटपर सॅम बैठा हुआ था. शायद किसीको शक ना हो इसलिए उन्होंने वहां आनेके लिए और अगले सारे कामके लिए उस पुरानी कारको चूना था. गाडी रुकतेही गाडीसे सॅम निचे उतरा.

" तूम अब पैसे लानेके लिए निकल जावो ... मै मेलपर उसे जगहकी सारी जानकारी देता हूं ... और सुनो ... जरा संभलकर ... तुम्हे काफी अंतर तय करना है " सॅमने उतरते हुए रघुसे कहा.

" यू डोन्ट वरी... तूम एकदम बिनधास्त रहो " रघु गाडीके ड्रायव्हिंग सिटपर बैठे हुए बोला.

" अच्छा पैसे मिलनेके बाद उस पंटरका क्या करना है " रघुने कुछ सोचते हुए पुछा. उसका इशारा अस्तित्व की तरफ था.

" उसका क्या करना है .. यह बादमें देखेंगे लेकिन वह अपनी महबुबाके लिए शहीद होगा इसकी जादा संभावना पकडकर हमे चलना होगा... क्योंकि रास्तेसे चलते हुए सामने आए गड्ढोंको भरते हुए आगे जाना जरूरी होता है ... नही तो वापस आते हुए उसी गड्ढोंमे फिसलकर गिरनेकी संभावना जादा होती है." सॅम उतरते हुए गुडतासे हसते हुए रघुकी तरफ देखते हुए बोला.

रघुभी उसकी तरफ देखकर मुस्कुराया.

सॅम गाडीसे उतरा और सायबर कॅफेकी तरफ निकल पडा. रघुने गाडी आगे बढ़ाई और अगले चौराहेपर मुडकर वह तेजीसे आगे निकल गया.

सॅम सायबर कॅफेमें एक कॉम्प्यूटरके सामने बैठा था. उसने चॅटींग सेशन खोला और ईशाभी चाटींग रूममें है यह देखकर उससे चॅटींग शुरू की –

" हाय मिस. ईशा"

उधर सॅमने भेजा हुवा मेसेज ईशाके मॉनिटरपर अवतरीत हुवा. और तभी निकिता ईशाके कॅबिनमें आ गई. निकिताको देखतेही ईशाने उसे 'उसकाही मेसेज है' ऐसा इशारा किया. इशारा मिलतेही निकिता तुरंत कॅबिनके बाहर गई. बाहर जाकर निकिता ईशाके ऑफीसके बगलमें स्थित एक रूममें चली गई. उस रूममें इन्स्पेक्टर राणा और, और दो लोग एक कॉम्प्यूटरके सामने बैठे थे. निकिताने कमरेमें प्रवेश करतेही कहा –

" सर उसका मेसेज आया है "

वे तिनोँ एकदम सतर्क होकर, सिधे बैठकर कॉम्प्यूटरकी तरफ देखने लगे.

" कम ऑन सुरज ट्रेस द ब्लडी बास्टर्ड " उन दोनोँको उत्साहीत करनेके उद्देशसे इन्स्पेक्टरने कहा.

" सर ही इज ट्रेस्ड ... द कॉल इज अगेन फ्रॉम मुंबई ... ऐन्ड सी द आय पी ऍट्रेस..."

इन्स्पेक्टरने मॉनिटरकी तरफ देखा और तुरंत मोबाईल लगाया,

" हॅलो रोहन... हमने उस ब्लॉकमेलरको ट्रेस किया है ... उसे अभीभी ईशाने चॅटींगपर बिड़ी रखा है ... तूम वहां मुंबईमें उसके सही सही ठिकानेका पता लगाओ ... ऐन्ड सी दॅट द फेलो शुड नॉट एस्कप... हां यह लो ब्लॉकमेलरका आय पी ऍट्रेस"

अबभी ईशाको ब्लॉकमेलरका मेसेज ‘ हाय मिस ईशा ‘ उसके चॅटींग विंडोमें दिख रहा था. वह अब मनही मन उसे जादासे जादा वक्त तक चॅटींगपर कैसे बिड़ी रखा जाए ताकी पुलिस उसे ट्रेस कर पकड सके, इसके बारेमें सोच रही थी. तभी अगला मेसेज आया,

‘ ईशा प्लीज ऍकनॉलेज युवर प्रेसेन्स ‘

अब ईशाके पास कुछतो मेसेजे भेजनेके अलावा कोई चारा नही था, नही तो वह डिस्कनेक्ट होनेका डर था.

‘ हॅलो.. ‘ उसने मेसेज टाईप कर भेजा.

इधर इन्स्पेक्टरने फिरसे मुंबईको फोन लगाया.

" रोहन ... कुछ पता चला?"

" यस सर ... द एरीया वुई हॅड जस्ट फाईन्ड आऊट... इट्स ठाणे... बट द एकज्याट स्पॉट वुई आर ट्राईंग टू लोकेट..." उधरसे राज बोल रहा था.

" कमॉन डू समथींग ऐन्ड फाईन्ड आऊट क्वीकली" इन्स्पेक्टरने कहा.

उधर ईशाको ब्लॉकमेलरका अगला मेसेज आया –

‘ मै मेलमें सारी डिटेल्स भेज रहा हूं ... ‘

ईशाको लगा की उसे सारी डिटेल्स चर्टींगपरही भेजनेके लिए कहा जाए ... लेकिन नही उसे आशंका होगी ...

लेकिन वह अब डिस्कनेक्ट कर सकता है ... उससे संभाषण जारी रखना आवश्यक था....

अचानक उसे कुछ सुझा और उसने मेसेज टाईप किया,

‘ लेकिन ५० लाख रुपए देनेके बादभी तुम मुझे ब्लॉकमेल नही करोगे इसकी क्या गॅरंटी ?’

उधर इन्स्पेक्टरको चैन नही पड रहा था. उन्होने फिरसे मुंबई रोहनको फोन लगाया,

" रोहन .. कुछ पता चला ?"

" सर वुई हॅव फाऊंड आऊट द एकज्याट लोकेशन ऍन्ड दी एक्सॅट स्पॉट..." उधरसे राजने कहा.

" गुड व्हेरी गुड... नाऊ क्वीकली इन्स्ट्रक्ट द ठाणे पुलिस टू रेड द स्पॉट ... " इन्स्पेक्टरने जोशके साथ कहा.

" यस सर" उधरसे प्रतिक्रिया आ गई ...

ईशा अब सोच रही थी की वह उसे चर्टींगपर बातोंमें उलझानेमें कामयाब रही की नही, क्योंकि अबतक उसका कोई रिप्लाय नही आया था.

तभी उसका रिप्लाय आ गया,

‘ देखो ... यह दुनिया भरोसेपर चलती है ... तुम्हे मुझपर भरोसा करनाही पडेगा ... और तुम्हारे पास उसके अलावा दुसरा कोई चाराभी नही है ‘

उसके मायूस चेहरेपर खुशीकी एक लहर दौड गई, क्योंकि कमसे कम अबतक वह उसे बातोंमें उलझानेमें कामयाब रही थी.

अब आगे उसे और उलझानेके लिए क्या मेसेज भेजा जाए, वह सोच रही थी और उसने कुछ टाईपभी किया. लेकिन तभी ब्लॉकमेलरका अगला मेसेज आ गया –

‘ ओके देन बाय... दिस इज अवर लास्ट कन्व्हरसेशन... टेक केअर... तुम्हारा ... और सिर्फ तुम्हारा अस्तित्व ...’

वह और कुछ टाईप कर उसे भेजती उससे पहलेही वह चॅटींग रुमसे गायब होगया.

वह इतने जल्दी चॅटींग खत्म करेगा ऐसा उसे अंदेशा नही था. ईशा तुरंत अपने कुर्सीसे उठकर जल्दी जल्दी अपने कॅबिनसे बाहर निकल गई. बाहर आकर सिधे वह बगलके रुममे, जहां इन्स्पेक्टर और दो कॉम्प्यूटर एक्स्पर्ट्स बैठे थे वहा चली गई. ईशा वहा पहुंचतेही वे ईशाके डरसे सहमें चेहरेकी तरफ देखने लगे थे.

" अंकल उसने अभी अभी चॅटींग शेशन क्लोज किया है ... लेकिन मुझे यकिन है की वह अबभी इंटरनेटपर कनेक्टेड होगा और मेल लिख रहा होगा .." ईशाने कहा.

" डोन्ट वरी... ठाणे पुलिस हॅव ऑलरेडी स्टार्टेड टू रेड द लोकेशन... " इन्स्पेक्टरने कहा.

पुलिसकी एक गाडी आकर एक सायबर कॅफेके सामने रुकी. गाडीसे एक इन्स्पेक्टर चार पाच हवालदारोंको साथमें लेकर सायबर कॅफेकी तरफ चलने लगा. वे हवालदार उसके अगले आदेशकी राह देखते हुए उसके पिछे पिछे चलने लगे. इन्स्पेक्टर सायबर कॅफेमें घूस गया और उसके पिछे वे चार हवालदारभी कॅफेमें घुस गए. पहले वे रिसेप्शन काउंटरपर रुके. रिसेप्शन काउंटरपर बैठा स्टाफ एकदम इतने पुलिसको देखकर हडबडाकर उठ खड़ा हुआ.

" यस सर... " उस स्टाफके मुंहसे मुश्कीलसे निकला.

इन्स्पेक्टरने उससे कुछ ना बोलते हुए उसके सामने रखा लॉग रजिस्टर उठाया और उसमें वह कुछ खोजनेकी कोशीश करने लगा.

" क्या हुआ साब?" वह स्टाफ फिरसे हिम्मत करके बोला.

इन्स्पेक्टरने गुस्सेसे सिर्फ उसकी तरफ देखा, वैसे वह सहम गया और चुप होगया. इन्स्पेक्टर लॉगबुकमें एक एक एन्ट्री ठिकसे देखने लगा. एक जगह इन्स्पेक्टरकी रजीस्टरपर दौडती उंगली रुक गई और आंखोंकी पुतलीयांभी स्थिर हो गई. उस एन्ट्रीमें नाम के रकानेमें 'अस्तित्व जाधव' ऐसा लिखा हुआ था. इन्स्पेक्टर मन ही मन मुस्कराया. उसे शायद ब्लॉकमेलरने सब सावधानी बरतनेके बावजूद वह अब पकड़ा जाने वाला है इस बातकी हंसी आ रही होगी. इन्स्पेक्टर उस एन्ट्रीके सामने दी सारी जानकारी पढते हुए बोला,

" सतरा नंबर किधर है ?"

" आवो मेरे साथ... मैं तुम्हे उधर ले जाता हूँ " वह स्टाफ इन्स्पेक्टरको एक तरफ ले जाते हुए बोला. वह सायबर कॅफेका स्टाफ आगे आगे और इन्स्पेक्टर अपने साथीयोंके साथ उसके पिछे पिछे चल रहे थे.

चलते हुए एक जगह रुककर उस स्टाफने एक बंद कॅबिनका दरवाजा धकेलकर खोला. सब पुलिस अब गुनाहगारको पकड़नेके तैयारीमें थे. लेकिन कॅबिन खोलतेही जब उन्होंने कॅबिनके अंदर देखा, उनके चेहरे खुलेकी खुलेही रह गए. क्योंकि कॅबिन खाली थी. कॅबिनमें कॉम्प्यूटर शुरु था लेकिन कॅबिनमें कोई नहीं था. इन्स्पेक्टरने चारो हवालदारोंको कॅफेमें चारो तरफ उस गुनाहगारको ढुंढनेके लिए भेजा.

इन्स्पेक्टर और चारो हवालदारोंने काफी समय तक सारा कॅफे और कॅफेके आसपासका इलाका छान मारा . लेकिन कुछभी हाथ नहीं लगा. गुनाहगार अब उनके कब्जेमें आनेवाला नहीं है इसकी तसल्ली होतेही इन्स्पेक्टरने मोबाईल लगाया,

" सर आय थींक वुई वेअर लेट बाय फ्यू सेकंड्स ... हि हॅज एस्केड... आय ऍम सॉरी... हम उसे पकड नहीं पाए "

इन्स्पेक्टर राणा मोबाईलपर बोल रहे थे और उनके आसपास ईशा, निकिता और वे दो कॉम्प्यूटर एक्स्पर्ट्स बडी आशासे क्या हुआ यह सुननेका प्रयास कर रहे थे

" शिट ... एस्केड... " इन्स्पेक्टर झुंझलाए.

और कुछ पल कुछतो सोचनेजैसा करनेके बाद वह मोबाईलपर बोले,

" अब एक काम करो ... वहांसे उसके फिंगर प्रिंट्स लो ... जिस कॉम्प्यूटरपर वह बैठा था उसके फोटोग्राफ्स लो ... ऍन्ड सी द हिस्ट्री लॉग ऑफ द कॉम्प्यूटर"

" यस सर " उधरसे जवाब आया.

इन्स्पेक्टरने मोबाईल डिस्कनेक्ट किया और निराशासे ईशाकी तरफ देखते हुए उसे किस तरह कहां जाए यह सोचने लगे.

" द ब्लडी बास्टर्ड हॅज एस्केड..." उन्होने कहा.

लेकिन उनके बातचित और हावभावसे कमरेमें उपस्थित सारे लोग यह बात पहलेही समझ चुके थे.

जंगलमें सब तरफ सुखे पत्ते फैले हुए थे. उन सुखे पत्तोंकों रौंदते हुए एक काले शिशे चढाई हुई कार धीरे धीरे उस जंगलसे गुजरने लगी. वह कार जब जंगलसे गुजर रही थी तब उन सुखे पत्तोंके रौंदनेसे एक अजिबसी आवाज उस जंगलके शांतीमे बाधा डाल रही थी. आखिर एक पेडके पास वह कार रुक गई. उस कारके ड्रायव्हर सिटवाला शिशा धीरे धीरे निचे खिसकने लगा और अब वहां ड्रायव्हीग सिटपर बैठी हुई काला चष्मा लगाई हुई ईशा दिखने लगी. उसने एक पेडपर लगाई लाल निशानी देखी और उसने बगलके सिटपर रखी एक ब्रिफकेस उठाकर खिडकीसे उस निशान लगाए पेडकी तरफ फेंक दी. ब्रिफकेसका 'धप्प' ऐसा आवाज आ गया. उसने फिरसे अपनी पैनी नजर चारो तरफ घुमाई और अपनी कार स्टार्ट कर वह वहांसे चली गई.

जंगलसे बाहर निकलकर ईशाकी कार अब प्रमुख रस्तेपर आ गई थी. तभी ईशाका मोबाईल बजा.

ईशाने डिस्प्ले ना देखते हुएही वह अटेंड किया, " हॅलो..."

" हॅलो... मै इन्स्पेक्टर राणा बोल रहा हूं ..." उधरसे आवाज आया.

" यस अंकल.."

" पैसे कब और कहां भेजने है इसके बारेमें ब्लॅकमेलरकी मेल तुम्हे आईही होगी " इन्स्पेक्टर राणाने पुछा.

" हां आई थी .. सच कहूं तो मै अब वहां पैसे पहुंचाकर वापसही आ रही हूं " ईशाने कहा.

" व्हॉट..." इन्स्पेक्टरके स्वरमें आश्चर्य स्पष्ट झलक रहा था.

"आय जस्ट कांन्ट बिलीव् धीस... तुमने मुझे बताया नही ... हम जरूर कुछ कर सकते थे. " इन्स्पेक्टरने आगे कहा.

" नही अंकल अब यहां मुझे पुलिसका शामिल होना नही चाहिए था एक बार तो पुलिस पुरी तरहसे नाकामयाब रही है ... यहां मै चान्स लेना नही चाहती थी ... और मुझे चिंता सिर्फ अस्तित्व की है ... पैसे जानेका अफसोस मुझे नही ... बस ब्लकमेलरको पैसे मिलनेके बाद वह अस्तित्व को छोड देगा ... और पुरा मसलाही खत्म हो जाएगा " ईशाने कहा.

" मै प्रार्थाना करता हूं की तूम जैसा सोचती हो... सब वैसाही हो ... लेकिन मुझे चिंता होती है तो बस इस बातकी की अगर वैसा नही हुवा तो ?" इन्स्पेक्टरने कहा.

" मतलब ?" ईशाने पुछा.

" मतलब ... तुमने पैसे देकरभी उसने अगर अस्तित्व को नहीं छोडा तो ?" इन्स्पेक्टरने अपना डर जाहिर किया.

ईशा एकदम सोचमें पड गई.

सॅम और रघु उस काले ब्रिफकेसके सामने बैठे थे. उनके चेहरेपर खुशी झलक रही थी. आखिर सॅमने अपने आपको ना रोक पाकर वह बॅग खोली. दोनो आंखे फाड़कर उन पैसोंकी तरफ देख रहे थे. सॅमने उस बॅगसे एक पैसोंका बंडल उठाया, अपने नाकके पास लिया और वह उस बंडलसे अपनी उंगली फेरते हुए उस नोटोंकी खुशबु लेने लगा.

" देख तो कितनी अच्छी खुशबु आ रही है ... " सॅमने कहा.

रघुनेभी एक बंडल उठाकर उसकी खुशबु लेते हुए वह बोला,

" और देखोतो अपने मेहनतके कमाईके पैसेकी खुशबु कुछ औरही आती है ... नही?"

दोनोंने हंसते हुए एक दुसरेकी जोरसे ताली ली.

" इतने सारे पैसे वहभी एकसाथ... मै तो पहली बार देख रहा हूं " रघुने कहा.

दोनों उस बैगमें हाथ डालकर सारे बंडल्स उलट पुलटकर देखने लगे.

" नोटोंके बंडल्स देखते हुए रघु बिचमेही रुककर बोला, " अब उस पंटरका क्या करना है ... उसे छोड देना है ? "

" छोड देना है ? ... कहीं तुम पागल तो नही हुए ? ... अरे अब तो शुरवात हुई है ... मुर्गीने अंडे देनेकी अबतो शुरवात हुई है " सॅम बिभत्स हास्य धारण करते हुए बोला.

ईशा अपने कुर्सीपर बैठकर कुछ ऑफीशियल कागजाद उलट पुलटकर देख रही थी और उसके बगलमेंही निकिता कॉम्प्यूटरपर बैठकर कुछ ऑफीशियल काम कर रही थी. तभी कॉम्प्यूटरका बझर बजा. ईशाने पलटकर मॉनिटरकी तरफ देखा.

" उसकाही मेसेज है " निकिताने बताया.

ईशा उठकर कॉम्प्यूटरके पास गई. उसके आतेही कॉम्प्यूटरके सामनेसे उठकर उसने ईशाको जगह दे दी.

" जा जल्दी जा ' ईशाने कॉम्प्यूटरके सामने बैठते हुए निकितासे कहा.

निकिता तुरंत वहांसे निकलकर कॅबिनके बाहर चली गई. ईशाके कॅबिनसे बाहर आकर निकिता सीधे बगलके रुममें चली गई. वहां इन्स्पेक्टर राणा और वे दोनो कॉम्प्यूटर एक्सपर्ट्स एक कॉम्प्यूटरके सामने बैठे थे. निकिता जल्दी जल्दी उनके पास गई. उसकी आहट होतेही तिनो पलटकर उसकी तरफ मुड़कर देखने लगे.

" जैसे आपने बोला था वैसाही हो गया ... ब्लॉकमेलरका फिरसे मेसेज आ गया है ... " निकिता जल्दी जल्दी आनेसे सांस फुले स्थितीमें बोली.

वे दोनों कॉम्प्यूटर एक्सपर्ट्स कुछ ना बोलते हुए अपने काममें लग गए.

" सुरज... कम ऑन... इस बार किसीभी हालमें साला छुटना नहीं चाहिए.... "

" सर एंज बिफोर दिस टाईम ऑल्सो हि इज कॉलींग फ्रॉम मुंबई... और उसका आय पी ऍड्रेस देखिए ... " एक्सपर्टने सॉफ्टवेयरके कुछ रिपोर्ट्स देखते हुए कहा.

वह बोलनेके पहलेही इन्स्पेक्टरने मुंबईको इन्स्पेक्टर रोहनको फोन लगाया,

" हां रोहन ... फिरसे हमने ब्लॉकमेलरको ट्रेस किया है ... अबभी वह च्याटींगही कर रहा है ... तुम उसकी एकज्याट लोकेशनका पता करो ... एंन्ड सी दॅट दिस टाईम द बास्टर्ड शुड नॉट एस्केप... और हां उसका आय पी ऍड्रेस लिख लो ..."

सॅम सायबर कॅफेमें एक कॉम्प्यूटरके सामने बैठकर चॅटींगमें उलझा हुवा था.

" मिस ईशा... हाय कैसी हो ?" उसने मेसेज टाईप कर भेजा.

काफी समय हो गया था फिरभी उसका जवाब नहीं आया था. लेकिन उसका नामतो चॅटींगमें दिख रहा था.

कॉम्प्यूटर खुला छोडकर कही गई तो नहीं साली...

या फिर अपना अचानक मेसेज आनेसे गडबडा गई होगी ...

उसने सोचा. अबभी उसका मेसेज आया नहीं था. गुस्सेसे उसका चेहरा लाल होने लगा था. तभी उधरसे मेसेज आ गया , " ठिक हूं "

तब कहा सॅमने चैनकी सांस ली. वह अब अगला मेसेज, जो उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण था, टाईप करने लगा,

" तुम्हे फिरसे तकलिफ देते हूए मुझे बुरा लग रहा है ... लेकिन क्या करे? ... पैसा यह साली चिजही ऐसी है ... कितनेभी संभलकर इस्तमाल करो तो भी खतम हो जाती है ... मुझे इस बार २० लाख रुपएकी सख्त जरूरत है ..."

सॅमने टाईप कर मेसेज भेजभी दिया.

" अभी तो तुम्हे ५० लाख रुपए दिए थे मैंने ... अब मेरे पास पैसे नहीं है ..." उधरसे ईशाका दोटूक जवाब आया.

" बस यह आखरी बार ... क्योंकि यह पैसे लेकर मैं परदेस जानेकी सोच रहा हूं " अस्तित्व ने कुछ सोचकर टाईप किया और 'सेंड' बटनपर क्लिक किया.

" तुम परदेस जावो ... या और कही जावो ... मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं है ... देखो ... मेरे पास कोई पैसोका पेढ तो है नहीं ... " ईशाका मेसेज आया.

अतुलको फिरसे गुस्सा आ रहा था, लेकिन अपने गुस्सेपर काबू करते हूए उसने टाईप किया.

" ठिक है ... तुम्हे अब मुझे कमसे कम १० लाख रुपए तो भी देने पडेंगे ... पैसे कब कहा और कैसे पहुँचाने है वह मैं तुम्हे मेल कर सब बता दूंगा ..."

उसने 'सेंड' बटनपर क्लिक कर मेसेज भेज दिया, और चॅटींग सेशनसे लॉग आऊटभी कर दिया. वह ईशासे जादा बहस नहीं करना चाहता था.

अब अतुल मेलबॉक्स खोल रहा था, तभी उसका ध्यान यूंही खिडकीके बाहर गया और वह भौंचक्का होकर उधर देखने लगा. बाहर एक पुलिस इन्स्पेक्टर और, और एक दो पुलिस

तेजीसे सायबर कॅफेके तरफही आ रहे थे. अब सॅमके हरकतोंमे तेजी आ गई. उसने झटसे अपना कॉम्प्यूटर ऑफ किया और काउंटरपर पैसे देकर वह सायबर कॅफेसे बाहर निकल गया. वह बाहर निकल गया उसके बाद कुछ पलही गुजर गए होंगे जब जल्दी जल्दी पुलिस इन्स्पेक्टर और उसके साथी सायबर कॅफेमें घुस गए. सायबर कॅफेमें प्रवेश करतेही इन्स्पेक्टरने ऐलान किया,

" नो बडी वील गो आऊट ऑफ दी कॅफे... ऑल ऑफ यू स्टे व्हेअर यू आर... नो बडी वील मुक् "

ईशाके कॅबिनके बगलके रुममें दो कॉम्प्यूटर एक्सपर्ट्स, ईशा और निकिता बडी आस लगाए मोबाईलपर बोल रहे इन्स्पेक्टर राणाकी तरफ देख रहे थे.

इन्स्पेक्टरने मोबाईल अपने कानसे हटाया और मायूसीसे ईशाकी तरफ देखते हुए कहा,

" द बास्टर्ड इस मॅनेज्ड टू एस्केप अगेन..."

ईशा और निकिता ने एकदुसरेकी तरफ देखा, उनके खिले हुए चेहरे मायूस हो गए थे.

ईशा अपने कॅबिनमें अपने काममें व्यस्त थी. तभी फोनकी घंटी बजी.

" हॅलो " ईशाने फोन उठाया.

" ईशा देअर इज गुड न्यूज फॉर यू..." उधरसे इन्स्पेक्टर राणा बोल रहे थे.

" यस अंकल"

" ब्लॉकमेलरने अस्तित्व को छोड़ दिया है ..." इन्स्पेक्टरने ईशाको खुशखबरी सुनाई.

" ओ.. थैंक गॉड ... आय कान्ट एक्सप्लेन ... आय ऐम सो हॅपी..."

ईशाको अस्तित्व के छुटनेकी खबर जबसे मिली थी तबसे उसे कुछभी सुझ नहीं रहा था. उसे कब मिलती हूं ऐसा उसे हो रहा था. वह ऑफीसका सारा काम वैसाही छोड़कर सिधे एअरपोर्टकी तरफ निकल पड़ी.

... उसे पहले बताना कैसा रहेगा ?

नहीं ... उसे सरप्राइज देते हैं ...

और उसे डायरेक्ट बतानेका कोई रास्ताभी तो नहीं ...

इमेल थी. लेकिन आजकल ईशाको इमेल, चॅटिंग इन सारी चिजोंसे सक्त नफरत और मनमें डरसा बैठ गया था.

एअरपोर्ट आया वैसे उतरकर उसने ड्रायव्हरको गाडी वापस ले जानेके लिए कहकर वह लगभग दौड़ते हुए तिकिट काउंटरके पास गई.

" मुंबईके लिए ... अब कोई फ्लाईट है ?" उसने पुछा.

" वन फ्लाईट इज देअर .. जस्ट रेडी टू टेक ऑफ..." काउंटरपर बैठे लड़किने बताया.

" वन टीकट प्लीज" ईशा अपना क्रेडीट कार्ड आगे करते हुए बोली.

उसने काउंटरसे टिकट खरीदा और लगभग दौड़ते हुए ही वह फ्लाईटकी तरफ दौड़ पड़ी. तभी उसका मोबाईल बजा. उसने मोबाईलका डिस्प्ले देखा. डिस्प्लेपर उसके ऑफिसका नंबर था. उसने आगे कुछ ना सोचते हुए ही फोन बंद किया और दौड़ते हुएही फ्लाईटमें जाकर बैठ गई. सिटवर बैठतेही फिरसे उसका मोबाईल बजने लगा. उसने मोबाईलका डिस्प्ले देखा. वही ऑफीसका नंबर

ऑफीसका नंबर... क्या काम होगा ?... निकिता एक कामभी ठिकसे नहीं संभाल सकती ..

उसने फोन बंद किया. लेकिन वह फिरसे बजने लगा.

निकिता कभी ऐसा बार बार फोन नहीं करती ...

कुछ तो जरूरी काम होगा ...

उसने फोन उठाया और उधर फ्लार्टका लास्ट कॉल हो गया.

" क्या है निकिता?... " वह लगभग चिढ़करही बोली.

लेकिन यह क्या? उधरसे आनेवाला आवाज आदमीका था – हां अस्तित्व का आवाज था.

" अस्तित्व तूम... " वह एकदमसे सिटसे उठकर खडी होते हुए बोली, " ऑफीसमें तुम कैसे .. कब.. और वहां क्या कर रहे हो ...?" उसे क्या बोला जाए कुछ समझ नहीं आ रहा था.

वह बोलते हुए जल्दी जल्दी प्लेनके दरवाजेकी तरफ जा रही थी.

" तुम्हे मिलनेके लिए आया था " उधरसे अस्तित्व का आवाज आया.

वह जब प्लेनके दरवाजेके पास पहुंची तब प्लेनका दरवाजा बंद किया जा रहा था.

" रुको मुझे उतरना है ... "

" क्यों क्या हुवा ?" अटेंडंटने पुछा.

" आय एम नॉट फीलींग वेल" उसके पास अब पुरी बात समझानेका वक्त नहीं था.

वह दरवाजा बंद करते हुए रुक गया. और वह तेजीसे चलते हुए प्लेनसे उतर गई.

वह अटेंडंट उसकी तरफ आश्चर्यसे देख रहा था.

"इसकी तबीयत ठिक नहीं ... फिर वह इतने जल्दी जल्दी और जोशके साथ कैसे उतर रही है ?" उसके मनमें आया होगा.

उसकी टैक्सी लगभग अब उसके घरके पास पहुंच गई थी. टैक्सी जैसेही उसके घरतक आकर पहुंची उसके दिलकी धडकने तेज हो रही थी. प्लेनसे बाहर निकलतेही वह सिधे एअरपोर्टके बाहर आ गई थी और टैक्सी लेकर उसने टैक्सीवालेको सिधे उसके घर ले जानेके लिए कहा था. और प्लेनमें जब अस्तित्व का फोन आया था तभी उसने उसे अपने घर आनेके लिए कहा था. उसे ऑफीसमें सिन नहीं चाहिए था. तबतक टैक्सी उसके घरके आहातेमें आकर रुकी. उसे पोर्चमेही अस्तित्व उसकी बडी अधिरतासे राह देखता हुवा दिखाई दिया. उसकी टैक्सी आतेही वह पोर्चसे उतरकर उसके टैक्सीके पास आ गया. उसेभी अब रहा नहीं जा रहा था. टैक्सीका दरवाजा खोलकर सिधे वह उसके बाहोंमे घुस गई. न जाने कितने दिनोंसे वे एक दुसरेको मिल रहे थे. ईशा के आंखोंमें आंसू आ गए और वे फिर रुकनेका नाम नहीं ले रहे थे.

" अरे अरे... यह क्या ?" अस्तित्व उसे थपथपाते हुए बोला.

" देखो तो मै पुरा की पुरा सहीसलामत तुम्हारे पास पहुंच गया हूं " वह मजाकिया अंदाजमे, मौहोल थोडा ढीला करनेके लिए बोला.

लेकिन वह उसे इतनी मजबुतीसे चिपक गई थी की वह उसे छोडनेके लिए तैयार नहीं थी.

ईशा और अस्तित्व जबसे आए थे तबसे ईशाके बेडरूममें, एक दुसरेकों बाहोंमें भरकर, लेटे हुए थे. ना उन्हे खानेकी सुध ती ना पिनेकी.

" जब उसकी पहली मेल आई, तब तुम्हे क्या लगा?" अस्तित्व ने पुछा.

" सच कहूं ... मुझे तो मानो मेरे पैर के निचेसे जमिन और सर के उपरसे आसमान खिसक गया ऐसा लगा था... मैंने तो दिलसे तुम्हे स्विकारा था और ऐसी स्थितीमें ऐसाभी कुछ हो सकता है, मैंने सपनेभी नहीं सोचा था...." ईशाने कहा.

" इसका मतलब तुम्हे सब सच लगा था " अस्तित्व ने मजाकिया अंदाजमें पुछा.

"अरे.. मतलब ?... भलेही दिल नहीं मानता था पर परिस्थितीयां उसीके ओर इशारा कर रही थी. " ईशाने अपना बचाव करते हुए कहा.

" और तुम्हे क्या लगा था ?" ईशाने पुछा.

" नहीं तुम ठिक कहती हो ... मेराभी हाल कुछ कुछ तुम जैसाही था ... भलेही दिल ना माने परिस्थितीयां किसी ओर इशारा कर रही थी. " अस्तित्व ने उसे सहलाते हुए कहा.

" ऐसा वक्त फिरसे अपने जिंदगीमें कभी ना आए " ईशाने कहा.

" सचमुछ... पहले तो मुझे अपने प्यारको किसीकी नजर लगी हो ऐसाही लग रहा था. " अस्तित्व उसके माथेको चुमते हुए बोला.

उसने उसके माथेको चुम लिया और वह उसके होंठोके पास अपने होंठ ले जाकर बड़े बड़े सांस लेते हुए वही रुक गया. और फिर आवेशके साथ एकदुसरेके होठोंको अपने मुंहमें लेकर वे एक बड़े चुबनमें मशगुल हो गए.

अचानक ईशाको उनका पहले हॉटेलमें हुवा वह प्रणय याद आ गया और उसीके साथ कोई उनके फोटो खिंच रहा है ऐसा आभास हो गया.

वह झटसे अपने होंठ उसके होठोंसे हटाते हुए वह पिछे हट गई.

" क्या हुवा ?" अस्तित्व ने पुछा.

" हम वही गलती दुबारा तो दोहरा नहीं कर रहे हैं " ईशाने मानो खुदसेही पुछा.

" मतलब ?" अस्तित्व ने पुछा.

" यह सब और वहभी शादीसे पहले... तूम मेरे बारेमें क्या सोच रहे होंगे " ईशाने अपने जहनमें उठा दुसरा सवालभी पुछा.

" डोन्ट बी सिली" वह फिरसे पहल करते हुए बोला.

लेकिन उसके हाथपैर मानो ठंडे पड चुके थे. वह कुछभी प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी.

" तुम्हे अगर इसमें गलत लगता है और... तुम्हारा दिल अब नहीं मान रहा है तो ठिक है ... " वह उससे अलग होते हुए वहांसे उठते हुए बोला.

" वैसा नहीं है ... डोन्ट मिसअंडरस्टैंड मी" वह उसे फिरसे अपने पास खिंचते हुए बोली.

उसने फिरसे उठनेका प्रयास किया लेकिन अब वह उसे छोडनेके लिए तैयार नहीं थी. अस्तित्व को कुछ समझ नहीं रहा था की. वह शिथील होकर सिर्फ उसके पास बैठा रहा. लेकिन अब मानो ईशाके शरीरमें किसी चिजका संचार हुवा था. वह कॉटपर उसे एक तरफ गिराकर उसके उपर चढ गई और उसके शरीरपर सब तरफ चुंबनोकी मानो बरसात करने लगी. और फिर उनके बिच कुछ पलके लिए क्यों ना हो तैयार हुवा फासला मिट गया और वे एकदुसरेमें कब समा गए उन्हें कुछ पताही नहीं चला.

ईशा सुबह सुबह निंदसे जब जाग गई तब वह अपने पास पडे अस्तित्व के मासूम चेहरेकी तरफ एकटक देखने लगी. उसने खिडकीसे बाहर झांककर देखा. बाहर अभीभी अंधेरा था. वह फिरसे अस्तित्व के चेहरेकी तरफ एकटक देखने लगी. अचानक उसके खयालमें आगयाकी उसका मासूम चेहरा धीरे धीरे उग्र होता जा रहा है.

शायद वह कोई बुरा सपना देख रहा हो....

उसने उसके चेहरेपर हाथ फेरनेकी कोशीश की. लेकिन उसके हाथका स्पर्श होतेही वह चौंककर उठ गया और गुस्सेसे बोला, ' मैं तुम्हे छोडूंगा नहीं ... मैं तुम्हे छोडूंगा नहीं "

कुछ पलके लिए तो ईशाभी घबराकर असमंजसमें पड गई.

" क्या हुवा ?" ईशाने पुछा.

लेकिन कुछ पलमेंही उसका गुस्सा ठंडा पडा दिखाई दिया. और वह इधर उधर देखते हुए

फिरसे सोनेके लिए लेटते हूँ बोला,

" कुछ नहीं "

और फिरसे सो गया.

सुबह सुबह ईशा, अस्तित्व, निकिता और इन्स्पेक्टर राणा कॉन्फरेंस रुममें इकट्ठा हुए थे।

"मैं इस बातसे संतुष्ट हूँ की आखिर ब्लॉकमेलरने अस्तित्व को कोईभी हानी ना पहुंचाते हुए छोड़ दिया।" ईशा काफी समयसे चल रहे चर्चाके बाद एक गहरी सांस लेते हुए बोली।

"एक मिनीट" अस्तित्व ने हस्तक्षेप किया।

सब लोग एकदम गंभीर होकर उसकी तरफ देखने लगे।

"मुझे लगता है ब्लॉकमेलरकी वजहसे हमे, मुझे, आपको, ईशाको – सबकोही काफी तकलिफ उठानी पड़ी.... " अस्तित्व ने कहा।

"अस्तित्व ... पैसा चला गया इस बातका मुझे दुख नहीं है ... तुझे कुछ हानी नहीं हुई यह मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है " ईशाने बिचमेंही उसे काटते हुए कहा।

इन्स्पेक्टर राणाभी उसकी हां में हां मिलाएंगे इस आशासे ईशाने उनकी तरफ देखा। लेकिन वे कुछ नहीं बोले।

"ईशा बात सिर्फ पैसोकी नहीं है ... कमसे कम मुझे लगता है की उसे यूही छोड़ देना कुछ उचित नहीं होगा. ... वैसे अबभी देरी नहीं हुई है... अब अगर हमने उसे पकड़नेकी कोशिश की तो कैसा रहेगा?... " अस्तित्व ने सवाल खड़ा किया और वह इन्स्पेक्टरकी प्रतिक्रिया परखनेके लिए उनकी तरफ देखने लगा। इन्स्पेक्टरने सोचते हुए कमरेकी छतकी तरफ देखा और वे कुछ बोलनेही वाले थे तभी निकिता बिचमेंही बोली।

"लेकिन हमे ना उसका नाम पता है ... ना उसका पता... वह क्या करता है यहभी हमे पता नहीं है ... फिर अगर हमने उसे पकड़नेकीभी ठान ली तो उसे पकड़ेंगे कैसे ? ... " निकिताने अपनी आशंका जाहिर की।

ईशाने निकिताकी तरफ देखकर मानो उसके बातको मुक संमती दर्शाई।

"इतके दिन हम उसे पकड़नेकी कोशीश कर रहे थे.... वे सब कोशिशें एकदम खाली गईं ऐसा कहना कुछ उचित नहीं होगा ... क्योंकि अबभी अपनेपास कुछ क्लूज है ... एक तो उस ब्लॉकमेलरका हैंड रायटींग जो हमें सायबर कॅफेके लॉगबुकसे मिला.... दुसरा उसके फिंगर प्रिंटस जो हमें सायबर कॅफेसेही मिले और तिसरा ... यह फोटोग्राफस देखो ... " इन्स्पेक्टर राणा बोल रहे थे।

अबभी ब्लॉकमेलरको पकड़नेकी अस्तित्व की तिब्र इच्छा देखकर मानो इन्स्पेक्टरके शरीरमें फुर्ती दौड़ रही थी. वे अपने जेबसे दो फोटोग्राफ्स निकालकर वहां इकट्ठा हुए लोगोंको दिखाकर आगे बोले,

" यह फोटोग्राफ्स उस सायबर कॅफेमें मिले कॉम्प्यूटरके हैं, जहां फोटोग्राफ लेनेके थोड़ीही देर पहले ब्लॉकमेलर बैठा हुआ था .. इस फोटोग्राफ्सकी तरफ थोड़ा गौरसे देखो ... देखो कुछ खयालमें आता है क्या ?" इन्स्पेक्टरने वे फोटो सबको देखनेके लिए आगे खिसकाए.

सब लोगोंने वह फोटोग्राफ्स एक एक करके देखे. लेकिन किसीकोभी उन फोटोग्राफ्समें कुछ अलग महसूस नहीं हुआ. तभी अस्तित्व वे फोटोग्राफ्स देखते हुए मंद मंद मुस्कराया.

" क्या हुआ ?" ईशाने पुछा.

" जरा देखोतो... गौरसे देखो ... इस फोटोग्राफ्समें कॉम्प्यूटरका माऊस कॉम्प्यूटरके बाए तरफ की बजाय दाई तरफ रखा हुआ दिख रहा है ..." अस्तित्व ने कहा.

" यस यू आर एब्सुलेटली राईट" इन्स्पेक्टरने उत्साहभरे स्वरमें कहा.

अब ईशाभी मंद मंद मुस्कराने लगी.

" लेकिन इसका क्या मतलब है ?" निकिता अबभी संभ्रममें थी.

"... इसका एकही मतलब निकलता है की वह ब्लॉकमेलर लेफ्ट हैंड्डेड है ... " इन्स्पेक्टरने कहा.

" यस दॅट्स राईट " अब कहा निकिताभी मुस्कराने लगी थी.

तभी कॉन्फरंस रुममें रखे हुए फोनची घंटी बजी. फोन ईशाके बगलमेंही रखा हुआ था. उसने फोन उठाया,

" हॅलो"

" गुड मॉर्निंग ईशा ... " उधरसे सीक्युर डेटाके मॅनेजिंग डायरेक्टर मि. कश्यपं बोल रहे थे.

" गुड मॉर्निंग कश्यपजी..." ईशाने उतनीही सरगर्मीसे उनका स्वागत किया, " बोलीए क्या कहते हो ?"

" हमारे यहां हमने एक नेटवर्किंग सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट कॉन्टेस्ट रखी थी ... कॉन्टेस्टचा

टॉपीक है इथीकल हँकींग... उस कॉन्टेस्टमें प्राईज डिस्ट्रीब्यूशन आपके हाथसेही हो ऐसी हमारी इच्छा है ... " उधरसे कश्यपजी मानो अपना हक जताते हुए बोले.

" आपने बुलाया और हम नहीं आए ऐसा कभी होगा क्या कश्यपजी ... मैं जरूर आऊंगी ... प्राईज डिस्ट्रीब्यूशन कब है ?... " ईशाने पुछा.

" पुरा प्रोग्राम अभी फायनल होनेका है ... वैसे वह प्रोग्राम टेंटीटीव्हली समव्हेअर अराऊंड धीस मंथ होगा ... पुरा प्रोग्राम फायनल होतेही आपको वैसे डीटेलमें बताया जाएगा ... " उधरसे कश्यपजी बोले.

" नो प्रॉब्लेम"

" थैंक्स"

" मेन्शन नॉट"

" ओके बाय... सीयू"

" बाय"

ईशाने फोन क्रॅडल वापस रखा और उसने वहा बैठे सब लोगोंपर अपनी नजर घुमाई. उसके चेहरेपर फिरसे मुस्कराहट दिखने लगी थी.

" मेरे दिमागमें एक आयडीया आया है ... अभी सीक्युर डेटाके मॅनेजींग डायरेक्टर मि. कश्यपजीका फोन था ... इथीकल हँकींगपर वे एक सॉफ्टवेअर डेव्हलपमेंट कॉन्टेस्ट ले रहे है ... मुझे यकिन है की अगर इस कॉन्टेस्ट का प्रचार बडे पैमानेपर अगर किया गया और उस कॉन्टेस्ट जितनेवालोंको अगर बडे बडे प्राईजेस रखे गए ... तो वह ब्लॉकमेलर इस प्रतियोगितामें जरूर हिस्सा लेगा ..." ईशाने कहा.

" लेकिन तुम यह सब इतने यकिनके साथ कैसे कह सकती हो ?" अस्तित्व ने आशंका जताई.

" पुरे यकिनके साथतो नहीं... फिरभी ... क्रिमीनल सायकॉलॉजीके अनुसार... वह ब्लॉकमेलर अभी अपना आत्वविश्वास और गर्वमें पुरी तरह चुर है ... उसतक अगर यह कॉन्टेस्टकी बात पहुँचाई गई तो वह उसमें जरूर हिस्सा लेगा ... " इन्स्पेक्टरने अपना अंदाजा लगाया.

सुबह सुबह ऑफिसमें आए बराबर ईशा अपने काममें व्यस्त हो गई. तभी निकिता कॅबिनमें आ गई.

"प्रतियोगीता कब कलसे शुरू होनेवाली है ना?" ईशाने निकितासे पुछा.

"हां" निकिताने एक फाईल ढुंढते हुए जवाब दिया.

"कितने लोगोंके अप्लीकेशन्स आए हैं?" ईशाने पुछा.

"लगभग तिन हजार" निकिताने उत्तर दिया.

"ओ माय गॉड ... इतने लोगोंमें उस ब्लॅकमेलरको ढुंढना यानी ... पहाड खोदकर चुहा निकालने जैसा होगा... और वहभी अगर वह इस प्रतियोगीतामें शामिल हुवा तो?... नही?" ईशाने पुछा.

"हां कठिण तो है ही" निकिता एक फाईल लेकर निकिताके सामने आकर बैठते हुए बोली.

तभी ईशाका फोन बजा. ईशाने फोन उठाकर अपने कानको लगाया,

"ईशा... मै इन्स्पेक्टर राणा बोल रहा हूं .." उधरसे आवाज आया.

"मॉर्निंग अंकल...."

"मॉर्निंग ... तुम्हे पता तो होगाही की प्रतियोगिताके लिए ३१२३ अप्लीकेशन्स आए हैं ... उसमें हमने जो लेफ्ट हैंड्रेड और राईट हैंड्रेड जानकारी मंगवाई थी ... उसके अनुसार जो लेफ्ट हैंड्रेड लोगोंके हैं वे ३२ अप्लीकेशन्स अलग किए हुए हैं.... उसमेंसे एक लडकेका हैंडरायटींग हुबहु मॅच हो रहा है ... उसका नाम है सॅम बिश्वास ... " उधरसे इन्स्पेक्टरने जानकारी दी.

"गुड केरी गुड..." ईशा एकदम खुश होते हुए बोली, "थॅक्यू अंकल... मै आपके उपकार किस तरह उतार सकुंगी... मुझे तो कुछ समझमें नही आ रहा है ..." ईशा खुशीके मारे बोली.

"इतने जल्दी इतना खुश होकर नही चलेगा ... अभी तो सिर्फ शुरुवात है ... उसे कानुकके शिकंजेमें पकडनेके लिए हमे और काफी मेहनत करनी पडेगी .." इन्स्पेक्टरने कहा.

" क्यों? ... अभी तुरंत हम उसे नहीं पकड़ पाएंगे ?" ईशाने निराश होकर पुछा.

" नहीं अभी नहीं ... आगे तो सुनो ... हमने अभी उसका फोन टॉप करना शुरू किया है .. ताकी उसके और कोई साथीदार होंगे तो उसे हम पकड़ पाएंगे ... और सारे सबुत इकठ्ठा होतेही उसे अरेस्ट करेंगे .. " इन्स्पेक्टर राणाने कहा.

ईशाका तो मानो खुन खौल रहा था. उस ब्लॉकमेलरको कब एक बार पकड़कर उसे सजा दी जाए ऐसा उसे हो रहा था. उसे फिलहाल वह कुछभी नहीं कर सकती इस बातका दुख हो रहा था.

लेकिन नहीं...

मैं कुछ तो करही सकती हूं ...

यह खबर अगर अस्तित्व को दी जाए तो.....

यह खबर सुनतेही वह कितना खुश हो जाएगा ...

उसने फोनका क्रेडल उठाया और वह एक नंबर डायल करने लगी.

पोलिस स्टेशनमें इन्स्पेक्टर राणाके सामने एक पुलिस बैठा हुआ था.

" सर हमने अतुल बिश्वासके सारे फोन कॉल्स टॉप किए हैं ... उनमेंसे यह एक महत्वपूर्ण लगा .." वह पुलिस सामने रखा टेपरेकॉर्डर शुरू करते हुए बोला.

टेपरेकॉर्डर शुरू हो गया और उसमेंसे वह टेप किया हुआ फोन कॉल सुनाई देने लगा.-

" रघु... मुझे वहां आनेके लिए ७-८ दिन लगेंगे ... पैसे संभालकर रखना ... मैं वहां पहुंचनेके बाद हम उसे बाट लेंगे .. " अतुलने कहा.

" ठीक है .. " रघुने कहा.

" और हां ... अपने कॉम्प्यूटरको पूरी तरहसे फॉरमेट करना... उसमें कुछभी बाकी रहना नहीं चाहिए ... "

" ठीक है ... तूम इधरकी बिलकुल चिंता मत करो... मैं सब संभाल लूंगा .."

" ओके देन ... बाय"

" बाय .. "

इन्स्पेक्टर राणाने वह संवाद रिवाइंड कर फिरसे बार बार सुना. और फिर वे एक इरादेके साथ खड़े होते हुए उस पुलिससे बोले,

"चलो "

इन्स्पेक्टरने भलेही सिर्फ एकही शब्द कहा था, फिरभी वह इशारा उस पुलिसको काफी था. इन्स्पेक्टर आगे आगे और वह पुलिस उनके पिछे पिछे चलने लगे.

रातका समय था. एक अंधेरे कमरेमें रघु कॉम्प्यूटरके सामने बैठकर कुछ कर रहा था. कमरेमें जोभी कुछ उजाला था वह उस मॉनिटरकाही था. उस मॉनिटरके रोशनीमें रघुका भद्दा चेहरा और ही भयानक दिख रहा था. तभी दरवाजेपर दस्तक हुई. रघु उठ खड़ा हुआ,

लगता है आगए साले बेवडे...

उसने सोचा. यह उसके रातमें इकठ्ठा होनेवाले दोस्तोंके आनेका वक्त था. वे इकठ्ठा होकर देर रात तक पिते थे और गप्पे मारते बैठते थे. और इतनेमें उसके पास पैसा आनेसे उसके यहां आनेवाले दोस्तोंकी गिनती बढ़ती जा रही थी.

" कोण है बे?" मस्तीमें बोलते हुए उसने दरवाजा खोला.

और उसके चेहरेका रंग फिका पड़ गया. उसके चेहरेकी मस्ती पूरी तरहसे उड़ गई थी. उसके सामने दरवाजेमें इन्स्पेक्टर राणा और और पांच छे पुलिस खड़े थे. उनमेंसे दो लोग ड्रेसमें नहीं थे. वह कुछ सोचे और कुछ हरकत करे इसके पहलेही पुलिसने उसे दबोचकर अरेस्ट किया.

" मैंने क्या किया ?" रघु अपने चेहरेपर मासूमियतके भाव लाकर बोला.

कोई कुछभी प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है यह देखकर वह फिरसे बोला,

" मुझे क्यों अरेस्ट किया गया ... कुछ तो कहोगे ?"

फिरभी कोई कुछ नहीं बोला.

" ऐसे आप कुछभी गलती ना होते हुए किसीको अरेस्ट नहीं कर सकते ... यह कानूनन अपराध है " वह अपनी आवाज बढ़ाकर बोला.

फिरभी कोई कुछ बोलनेके लिए तैयार नहीं था, यह देखते हुए वह चिढ़कर चिल्लाया,

" मुझे क्यों अरेस्ट किया गया है ?"

" पता चलेगा... जल्दीही पता चलेगा " इन्स्पेक्टरका एक साथी ताना मारते हुए धीमे स्वरमें बोला.

अब कंधा उचकाकर, चेहरेपर जितने हो सकते हैं उतने मासूमियतके भाव लाकर, वह उनकी

हरकते निहारने लगा. एक बलवान पुलिस उसके हाथोंमें हथकड़ीयां पहनाकर उसे घरके अंदर ले गया. बाकी सारे पुलिस घरमें सब तरफ फैलकर घरकी तलाशी लेने लगे. उनमेंसे दो लोग ड्रेसमें नहीं थे, वे कॉम्प्यूटर एक्सपर्ट थे. उन्होंने तुरंत कॉम्प्यूटरपर कब्जा किया. कॉम्प्यूटर शुरूही था इसलिए अपराधीसे पासवर्ड हासिल करना या उस कॉम्प्यूटरका पासवर्ड ब्रेक करना, यह सब टल गया था. पुलिसकी टीम पुरे घरकी और आसपासकी तलाशी लेते हुए जब कॉम्प्यूटरके इर्द गिर्द इकट्ठा हो गई, तब कॉम्प्यूटरपर बैठे एक्सपर्टमेंसे एकने इन्स्पेक्टर राणासे कहा,

" सर इसमें तो कुछभी नहीं है "

" घरमेंभी कुछ नहीं मिल रहा है " टीममेंसे एकने जोड़ दिया.

" कुछ होगा तो मिलेगा ना ... मुझे लगता है आप लोग गलत घरमें घुस गए हो " रघुने बिचमेंही कहा.

" ठिकसे देखो .. उसने अगर हार्डडिस्क फॉरमेट की हो तो अपने रिकवरी टूल्स रन करो " इन्स्पेक्टरने कहा.

" यस सर" कॉम्प्यूटर एक्सपर्ट बोला.

टीममेंसे कुछ पुलिस अबभी घरमें सामान उलट पुलटकर देख रहे थे. तभी एक पुलिस वहा इन्स्पेक्टरके पास एक बैग लेकर आया. उसने बैग खोली तो अंदर कपडे थे. उसने कपडेभी बाहर निकालकर देखा, लेकिन अंदर कुछभी नहीं था.

" देखो ... घरका कोना कोना छान मारो ..." इन्स्पेक्टर उन्हें मायूस हुवा देखकर उनका हासला बढ़ानेके उद्देशसे बोला.

" यस सर" उस पुलिसने कहा और फिरसे घरमें ढुंढने लगा.

तभी कॉम्प्यूटर एक्सपर्टका उत्साहीत स्वर गुंजा " सर मिल गया "

सारे लोग अपने अपने काम छोड़कर कॉम्प्यूटरके इर्द गिर्द जमा हो गए. और वे कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ बड़ी आस लेकर देखने लगे. उनमेंसे सिनियर कॉम्प्यूटर एक्सपर्टने कॉम्प्यूटरपर एक फाईल खोली. शायद उसने वह रिकवरी टूलसका इस्तेमाल कर रिकवरी की होगी. वह फाईल यानी ब्लॉकमेलरने पहले मेलमें ईशाको भेजा हुवा ईशा और अस्तित्व के प्रणयका फोटो था. इन्स्पेक्टरने अब गुस्सेसे मासूम बननेकी कोशीश कर रहे रघुकी तरफ देखा. रघुके चेहरेसे मासूमियतभरे भाव कबके उड़ चुके थे. उसने अपनी गर्दन झुकाई थी. इन्स्पेक्टरने अपने साथीसे इशारा करतेही वह पुलिस अरेस्ट किए हुए रघुको बाहर ले गया. रघु चुपचाप कुछभी प्रतिकार ना करते हुए उस पुलिसके पिछे पिछे चलने लगा.

रघुको उस पुलिसने वहांसे बाहर ले जातेही, इन्स्पेक्टर राणाने अपना मोबाईल लगाया –

" ईशा गुड न्यूज... "

पुरी कहानी सुनाकर इन्स्पेक्टरने एक लंबी सांस ली. स्टेजपर इन्स्पेक्टर राणा, ईशा, सीक्युर डेटाके डायरेक्टर और ऍन्कर खड़े थे. पुरी कहानी खत्म होगई थी, फिरभी लोग अभीभी शांत थे. हॉलमें मानो शमशानसी चुप्पी फैली हुई थी. तभी ईशाको हॉलके पिछले हिस्सेमें अस्तित्व खड़ा हुआ दिखाई दिया. ईशाने हात हिलाकर उसे स्टेजपर बुलाया. अस्तित्व भी लगभग दौड़ते हुएही स्टेजपर गया. ईशाने उसका हाथ अपने हाथमें लेकर उसे अपने पास खड़ा किया. अबतक जो सब लोग शांत थे वे अब तालियां बजाने लगे. और तालियाभी इतनी की मानो उन्होंने सारा हॉल सरपर लिया हो. तालियां रुकनेका नाम नहीं ले रही थी.

अबभी अस्तित्व का हाथ ईशाके हाथमें कसकर पकड़ा हुआ था. ईशाने दुसरा हाथ दिखाकर लोगोंको शांत रहनेका इशारा किया और वह माईक हाथमें लेकर बोलने लगी –

" हमारा प्रेम... यां यू कहिए ... हमारा इ – लव्ह ... लगा था कमसे कम इसमें तो बाधाएं नहीं आयेंगी .. लेकिन ऐसा लगता है की प्यार की राहमें हमेशा बाधाएं आती है ..."

ईशाने हॉलमें सब तरफ अपनी नजरे घुमाई और वह अस्तित्व का हाथ और कसकर पकड़ते हुए आगे बोली, " ... लेकिन कुछभी हो ... आखिर जित प्यारकीही होती है "

लोगोंने तालिया बजाते हुए फिरसे पुरा हॉल मानो अपने सरपर उठा लिया.

अब अस्तित्व ने माईक अपने हाथमें लिया और लोगोंको शांत रहनेका इशारा करते हुए वह बोला,

" हमारे दोनोके प्रेमकहानीसे आप लोग एक सिख जरूर ले सकते है की ... " एक क्षण स्तब्ध रहकर वह आगे बोला, " की बुरेका अंत आखिर बुरेमेंही होता है ..."

फिरसे लोगोंने तालियां बजाकर मानो उसके कहनेको अपनी सहमती दर्शाई. तभी एक कंपनीका आदमी स्टेजके पिछले हिस्सेसे स्टेजपर आ गया. उसकी चारो ओर घुमती हुई आंखें स्टेजपर किसीको ढूँढ रही थी. आखिर उसे कंपनीके मैनेजिंग डायरेक्टर कश्यपजी दिखतेही वह उनके पास गया और उनके कानमें कुछ बोलने लगा. वह जोभी बोल रहा था वह सुनकर कश्यपजीके चेहरेपर अचानक हड़बड़ाहट, आश्चर्य और डरके भाव दिखने लगे. उनके चेहरेपर वे भाव देखकर स्टेजपर उपस्थित बाकी लोगोंके चेहरेपरभी भाव बदल गए थे. स्टेजपर जो हल्का फुल्का खुशीका माहौल था वह एकदमसे तनावमें बदल गया था. उस कंपनीके आदमीने कश्यपजीको सब बतानेके बाद कश्यपजीने स्टेजपर इधर उधर देखा और वे इन्स्पेक्टर राणाकी तरफ बढ़ने लगे.

अब कश्यपजी इन्स्पेक्टरके कानमें कुछ बोल रहे थे. इन्स्पेक्टरकीभी वही दशा हो गई थी.

उनके चेहरेपरभी हडबडाहटभरे आश्चर्य और डरके भाव आगए थे. तबतक ईशा, अस्तित्व और वह ऍन्करभी इन्स्पेक्टरके पास पहुंच गए.

" क्या हुवा ?" ईशाने एकबार इन्स्पेक्टरकी तरफ तो दुसरी बार कश्यपजीकी तरफ देखते हुए पुछा.

" जाते हुए वह अपना आखरी दांव खेल गया है " इन्स्पेक्टरने बताया.

" लेकिन क्या हुवा ?" अस्तित्व ने पुछा.

" थोडा खुलकर तो बताओ ?" ईशाने कश्यपजीकी तरफ देखते हुए पुछा.

" खुलकर बोलनेके लिए अब वक्त नही है ... चलो मेरे साथ चलो " कश्यपजी अब जल्दी करते हुए बोले. और तेजीसे स्टेजके पिछले हिस्सेसे उतरकर उस कंपनीके आदमीके साथ अपने ऑफीसकी तरफ जाने लगे.

इन्स्पेक्टर, ईशा, और अस्तित्व भी चुपचाप उनके पिछे चलने लगे. वह ऍन्कर उनके पिछे जाएकी ना जाए इस दुविधामें स्टेजपरही रुका रहा, क्योंकि अबतक हॉलमें उपस्थित लोगोंमें खुसुरफुसुर और गडबडी शुरु हो गई थी. हकिकतमें क्या हुवा यह जाननेकी जैसे उन लोगोंकी उत्सुकता बढ रही थी. लेकिन जितने वे लोग अनभिज्ञ थे उतनाही वह ऍन्करभी अनभिज्ञ था. लेकिन क्या हुवा यह जाननेसे बडी जिम्मेदारी अब उस एन्करके कंधेपर आन पडी थी – किसीभी तरह उन लोगोंको शांत करके वहां उस हॉलसे सही सलामत बाहर निकालनेकी.

कंपनीके उस आदमीने कंपनीके मैनेजिंग डायरेक्टरके कानमें कुछ खुसफुसाकर प्रोग्रॅमका सारा मुडही बदल दिया था. डायससे निचे उतरकर कंपनीके मैनेजिंग डायरेक्टर कश्यपजी सिधे अपने कैबिनके तरफ जाने लगे. कश्यपजीको वह फासला मानो बहोत दूर लग रहा था. डायसकी सिढीयां उतरकर और उनके ऑफीसकी सिढीयां चढते हुए पहलीबार उन्हे थकावट महसूस हो रही थी. उनके पिछे इन्स्पेक्टर राणा और सबसे पिछे असमंजसमें चल रहे ईशा और अस्तित्व थे. सबलोग जब कश्यपजीके कैबिनमें घुस गए, तब वहां पहलेसेही कुछ लोगोंने कॉम्प्यूटरके इर्दगिर्द भिड की थी. कश्यपजीभी उस भिडमें शामिल हो गए और कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ आश्चर्यसे देखने लगे. ईशा और अस्तित्व ने जब उस भिडमें घुसकर उस मॉनिटरकी तरफ देखा. तब कहां उनको सारे मसलेका अवलोकन हुवा. उनके मनमें चल रही सारी शंकाए एक पलमें नष्ट होकर वह जगह अब चिंता और डरने ली थी. मॉनिटरपर एक ब्लिंक हो रहा मेसेज दिख रहा था – आल दी सर्वर डाटा अँड कॉम्प्यूटर डाटा ह्याज बिन डिलीट. टू रीकवर एंटर दी पासवर्ड और मॉनिटरपर उलटी गिनती दिखा रही टाईम बॉम्बके घडी जैसी एक घडी दिख रही थी. टाईम- ५:१०:२६

" ओ माय गॉड... " कश्यपजीके आश्चर्यासे खुले रहे मुंहसे निकल गया.

उनका पुरा बदन पसिना पसिना हो गया था और चेहरेपर भी पसिनेकी बूंदें दिख रही थीं. सब डाटा अगर डिलीट होवा तो होनेवाले नुकसानके कल्पनाभरसेही वे घबरा गए थे.

" सर यही नहीं तो कंपनीके सारे कांम्प्यूटरपर यह मेसेज आया है ... " कंपनीका एक आदमी बोला. और फिर सब लोगोंको डेक्लपमेंट सेंटरकी तरफ ले जाते हुए बोला, " सर जरा इधरभी देखिए .."

उसके पिछे सारे लोग कुछ ना बोलते हुए जा रहे थे, मानो समशानमें जा रहे हों.

डेक्लपमेंट सेंटर यानी एक बड़ा हॉल था और वहां छोटे छोटे क्यूबिकल्स बनाकर हर डेक्लपरकी तरफ ध्यान दिया जा सके और सबको प्रायक्सीभी मिले इसका खास ध्यान रखा गया था. वहां सब कॉम्प्यूटरके मॉनिटर्स शुरू थे और सब मॉनिटरपर एकही मेसेज था – आल दी सर्वर डाटा अँड कॉम्प्यूटर डाटा ह्याज बिन डिलीट. टू रीकवर एंटर दी पासवर्ड

और यहांभी सब कॉम्प्यूटर्सपर उलटी गिनती चल रही थी.

टाइम - ०५:०३:०२

" सचमुछ गुनाहगार जाते हुए अपनी आखरी चाल चल गया है " अस्तित्व ने कहा.

" इट्स अ टीपीकल एक्झाम्पल ऑफ इंटररीझम" ईशाने कहा.

" हमारे तो कंपनीका अस्तित्वही खतरेमें आया है " कश्यपजी अपने चेहरेसे पसिना पोंछते हुए बोले.

" आप चिंता मत किजिए ... पासवर्ड गुनाहगारसे कैसे उगलना है यह हमारा काम है " इन्स्पेक्टरने कहा.

तभी दो पुलिस हथकड़ी पहने हुए सैमको वहां लेकर आ गए. इन्स्पेक्टरने पुरा मसला समझमें आतेही उसे वापस यहां लानेके लिए अपने साथीयोंको पहलेही वायरलेसपर बताया था. सैम धीमे मस्ती भरी चालसे मंद मंद मुस्कराते हुए इन्स्पेक्टरकी तरफ चलने लगा.

" पासवर्ड क्या है ?..." इन्स्पेक्टरने उसे कड़े स्वरमें पुछा.

इन्स्पेक्टरने 'साम दाम दंड भेद' से पहले 'दंड' का इस्तेमाल करनेकी ठान ली थी ऐसा दिख रहा था.

" जल्दी क्या है ... पहले मेरी हथकड़ीतो खोलो ... अभी और ५ घंटे बाकी है " सैम हसते हुए

शांत स्वरमें बोला.

इन्स्पेक्टर गुस्सेसे उसे मारनेके लिए उसकी तरफ बढ़े वैसे सॉम चेहरेपर कुछभी डर ना दिखाते हुए वैसेही खड़ा रहते हुए, उनकी आखोंमें आखे डालकर बोला, ' अं हं... इन्स्पेक्टर यह गलती कभी ना करना ... ऐसी गलती करोगे तो मैं पासवर्ड तो दुंगा लेकिन वह पासवर्ड देनेके बाद ... तुम्हारेपास जो ५ घंटे बाकि है वहभी नहीं रहेंगे..... पुरा डाटा वह पासवर्ड देनेके बाद तुरंत नष्ट हो जाएगा ..."

इन्स्पेक्टरने उसपर उठाय़ा हुआ हाथ पिछे लिया. उन्हे अहसास हो गया था की उसके बोलनेमें तथ्य था.

" खोलो मेरी हथकड़ी " सॉमने फिरसे कहा.

इन्स्पेक्टरने उसे लेकर आए पुलिसको इशारा किया. उन्हे इशारा मिलतेही उन्होने चूपचाप उसकी हथकड़ी खोली. सॉमने अपनी खुली हुई कलाईयां एक के बाद एक दुसरे हाथमें लेकर घुमाई और वह अपने दोनो हाथ पिछे ले जाते हुए जम्हाई भरते हुए, उसे मिली हुई रिहाईका आनंद व्यक्त करते हुए बोला,

" हां अब देखो... कैसे खुला खुला लग रहा है "

" पासवर्ड क्या है ?" फिरसे इन्स्पेक्टरका कड़ा स्वर गुंजा.इन्स्पेक्टर, ईशा, और अस्तित्व भी चुपचाप उनके पिछे चलने लगे. वह एंन्कर उनके पिछे जाएकी ना जाए इस दुविधामें स्टेजपरही रुका रहा, क्योंकि अबतक हॉलमें उपस्थित लोगोंमें खुसुरफुसुर और गड़बड़ी शुरु हो गई थी. हकिकतमें क्या हुआ यह जाननेकी जैसे उन लोगोंकी उत्सुकता बढ़ रही थी. लेकिन जितने वे लोग अनभिज्ञ थे उतनाही वह एंन्करभी अनभिज्ञ था. लेकिन क्या हुआ यह जाननेसे बड़ी जिम्मेदारी अब उस एन्करके कंधेपर आन पड़ी थी – किसीभी तरह उन लोगोंको शांत करके वहां उस हॉलसे सही सलामत बाहर निकालनेकी.

कंपनीके उस आदमीने कंपनीके मॅनेजिंग डायरेक्टरके कानमें कुछ खुसफुसाकर प्रोग्रॅमका सारा मुडही बदल दिया था. डायससे निचे उतरकर कंपनीके मॅनेजिंग डायरेक्टर कश्यपची सिधे अपने कैबिनके तरफ जाने लगे. कश्यपर्जीको वह फासला मानो बहोत दूर लग रहा था. डायसकी सिढीयां उतरकर और उनके ऑफीसकी सिढीयां चढ़ते हुए पहलीबार उन्हे थकावट महसूस हो रही थी. उनके पिछे इन्स्पेक्टर राणा और सबसे पिछे असमंजसमें चल रहे ईशा और अस्तित्व थे. सबलोग जब कश्यपर्जीके कैबिनमें घुस गए, तब वहां पहलेसेही कुछ लोगोंने कॉम्प्यूटरके इर्दगिर्द भिड की थी. कश्यपर्जीभी उस भिडमें शामिल हो गए और कॉम्प्यूटरके मॉनिटरकी तरफ आश्चर्यसे देखने लगे. ईशा और अस्तित्व ने जब उस भिडमें घुसकर उस मॉनिटरकी तरफ देखा. तब कहां उनको सारे मसलेका अवलोकन हुआ. उनके मनमें चल रही सारी शंकाए एक पलमें नष्ट होकर वह जगह अब चिंता और डरने ली थी. मॉनिटरपर एक ब्लिंक हो रहा मेसेज दिख रहा था – आल दी सर्वर डाटा अँड कॉम्प्यूटर डाटा ह्याज बिन

डिलीट. टू रीकवर एंटर दी पासवर्ड' और मॉनिटरपर उलटी गिनती दिखा रही टाईम बॉम्बके घड़ी जैसी एक घड़ी दिख रही थी. टाइम - ०५:१९:२६

" ओ माय गॉड... " कश्यपजीके आश्चर्यासे खुले रहे मुंहसे निकल गया.

उनका पुरा बदन पसिना पसिना हो गया था और चेहरेपर भी पसिनेकी बुंदें दिख रही थी. सब डाटा अगर डिलीट हूवा तो होनेवाले नुकसानके कल्पनाभरसेही वे घबरा गए थे.

" सर यही नहीं तो कंपनीके सारे कॉम्प्यूटरपर यह मेसेज आया है ... " कंपनीका एक आदमी बोला. और फिर सब लोगोंको डेक्लपमेंट सेंटरकी तरफ ले जाते हुए बोला, " सर जरा इधरभी देखिए .."

उसके पिछे सारे लोग कुछ ना बोलते हुए जा रहे थे, मानो समशानमें जा रहे हो.

डेक्लपमेंट सेंटर यानी एक बड़ा हॉल था और वहां छोटे छोटे क्यूबिकल्स बनाकर हर डेक्लपमेंट की तरफ ध्यान दिया जा सके और सबको प्रायक्सीभी मिले इसका खास ध्यान रखा गया था. वहां सब कॉम्प्यूटरके मॉनिटर्स शुरू थे और सब मॉनिटरपर एकही मेसेज था – आल दी सर्वर डाटा अँड कॉम्प्यूटर डाटा ह्याज बिन डिलीट. टू रीकवर एंटर दी पासवर्ड'

और यहांभी सब कॉम्प्यूटर्सपर उलटी गिनती चल रही थी.

टाइम - ०५:०३:०२

" सचमुछ गुनाहगार जाते हुए अपनी आखरी चाल चल गया है " अस्तित्व ने कहा.

" इट्स अ टीपीकल एक्झाम्पल ऑफ ईटेररीझम" ईशाने कहा.

" हमारे तो कंपनीका अस्तित्वही खतरेमें आया है " कश्यपजी अपने चेहरेसे पसिना पोंछते हुए बोले.

" आप चिंता मत किजिए ... पासवर्ड गुनाहगारसे कैसे उगलना है यह हमारा काम है " इन्स्पेक्टरने कहा.

तभी दो पुलिस हथकड़ी पहने हुए सैमको वहां लेकर आ गए. इन्स्पेक्टरने पुरा मसला समझमें आतेही उसे वापस यहां लानेके लिए अपने साथीयोंको पहलेही वायरलेसपर बताया था. सैम धीमे मस्ती भरी चालसे मंद मंद मुस्कराते हुए इन्स्पेक्टरकी तरफ चलने लगा.

" पासवर्ड क्या है ?..." इन्स्पेक्टरने उसे कड़े स्वरमें पुछा.

इन्स्पेक्टरने 'साम दाम दंड भेद' से पहले 'दंड' का इस्तेमाल करनेकी ठान ली थी ऐसा दिख रहा था.

" जल्दी क्या है ... पहले मेरी हथकडीतो खोलो ... अभी और ५ घंटे बाकी है " सॅम हसते हुए शांत स्वरमें बोला.

इन्स्पेक्टर गुस्सेसे उसे मारनेके लिए उसकी तरफ बढ़े वैसे सॅम चेहरेपर कुछभी डर ना दिखाते हुए वैसेही खड़ा रहते हुए, उनकी आंखोंमें आंखे डालकर बोला, ' अं हं... इन्स्पेक्टर यह गलती कभी ना करना ... ऐसी गलती करोगे तो मैं पासवर्ड तो ढुंगा लेकिन वह पासवर्ड देनेके बाद ... तुम्हारेपास जो ५ घंटे बाकि है वहभी नहीं रहेंगे..... पुरा डाटा वह पासवर्ड देनेके बाद तुरंत नष्ट हो जाएगा ..."

इन्स्पेक्टरने उसपर उठाया हुआ हाथ पिछे लिया. उन्हे अहसास हो गया था की उसके बोलनेमें तथ्य था.

" खोलो मेरी हथकडी " सॅमने फिरसे कहा.

इन्स्पेक्टरने उसे लेकर आए पुलिसको इशारा किया. उन्हे इशारा मिलतेही उन्होने चूपचाप उसकी हथकडी खोली. सॅमने अपनी खुली हुई कलाईयां एक के बाद एक दुसरे हाथमें लेकर घुमाई और वह अपने दोनो हाथ पिछे ले जाते हुए जम्हाई भरते हुए, उसे मिली हुई रिहाईका आनंद व्यक्त करते हुए बोला,

" हां अब देखो... कैसे खुला खुला लग रहा है "

" पासवर्ड क्या है ?" फिरसे इन्स्पेक्टरका कड़ा स्वर गुंजा.

इन्स्पेक्टर तुम्हे लगता है, की मैं इतने आसानीसे और इतने जल्दी तुम्हे पासवर्ड बताऊंगा ?" सॅम इन्स्पेक्टरकी आंखोसे आंखे मिलाते हुए बोला.

" फिर तुम्हे और क्या चाहिए ?" इन्स्पेक्टरने अपना स्वर अबभी कड़ा रखते हुए पुछा.

" बस कुछ नहीं ... सिर्फ मेरे पुरे रिहाईका इंतजाम .. " सॅमने कहा.

" मतलब ?" इतनी देर से चुप था अस्तित्व पहली बार बोला.

" अरे हां ... अच्छा हुआ तु बोला ... तुझे मेरे साथ आना पड़ेगा ... मुझे यहांसे दूर ... जहां ये लोग फिरसे पहुंच नहीं पाए ऐसी जगह मुझे पहुंचानेकी जिम्मेदारी अब तुम्हारी ... और फिर वहांसे मैं इन्हे मोबाईलसे वह पासवर्ड बताऊंगा ... " सॅमने कहा.

" हमें क्या मुख समझ रखा है ?" इन्स्पेक्टर फिरसे गुराया.

" इन्स्पेक्टर यह वक्त अब कौन मुख है या बननेवाला है यह तय करनेका नही है ... संक्षिप्तमें कहा जाए तो ... यू डोन्ट हव चॉईस... तुम्हे मेरे कहे अनुसार करनेके अलावा कोई चारा नही है " सॅमने कहा.

इन्स्पेक्टरने एक बार अस्तित्व की तरफ तो दुसरी बार सॅमकी तरफ देखा.

" ठिक है " अस्तित्व ने दृढतासे कहा.

इतनी बडी कंपनीका अस्तित्व और भविष्य खतरेमें आया था, इसलिए इन्स्पेक्टरको सॅमका सबकुछ सुननेके अलावा कोई रास्ता नही था. और उससे कितना नुकसान हो सकता है यह कश्यपजीके पसिनेसे लथपथ चेहरेपर साफ दिख रहा था. वैसे देखा जाए तो कश्यपजी बहुत हिम्मतवाले या यू कहा जाए की मोटी चमडीवाले आदमी थे. और उनके चेहरेपर और पुरे बदनमें पसिना आए मतलब कंपनीका अस्तित्व बुरी तरफ दाव पर लगा था यह स्पष्ट था.

सॅमने बताए अनुसार अस्तित्व भी उसके साथ उसे उस जगहसे दूर छोडनेके लिए तैयार हुवा था. इसलिए उसके साथ कौन जाएगा यह एक बडी गुथ्थी सुलझ गई थी. क्योंकी उसके साथ अकेला जाना खतरेसे खाली नही था, यहांतककी खुदकी जान जानेकाभी खतरा था और वह किसे अपनेसाथ कोई हथीयार ले जाने देगा इतना मुख नही था. लेकिन अस्तित्व को उसके साथ अकेले भेजनेके लिए ईशाका दिल नही मान रहा था. वह वैसे कुछ बोली नही लेकिन उसके चेहरेसे सबकुछ झलक रहा था. एक तरफ कश्यपजीकी कंपनी उसकी वजहसेही खतरेमें आ गई थी और उसनेही अस्तित्व को भेजेनेके लिए इन्कार करना उसे ठिक नही लग रहा था. अतुलको जाल डालकर फांसनेके काममें कश्यपजीका बहुमोल योगदान था. और उन्होने उस बातके खतरेका अहसास होते हुए भी उसे पुरा सहयोग दिया था. और अब उनकी कंपनी खतरेमें आनेके बाद मुंह मोड लेना उसे जच नही रहा था.

अस्तित्व नें उसकी दुविधा जानते हुए उसे अपनी बाहोंमें लेते हुए थपथपाकर कहा.

" डोन्ट वरी हनी... आय विल बी फाईन"

ईशा कुछभी बोली नही, लेकिन आखीर अपने दिलपर पत्थर रखकर वह उसे जाने देनेके लिए तैयार हो गई.

एक तरहसे इन्स्पेक्टर राणानेही उसे धिरज बंधाकर तैयार किया था.

कश्यपजी, ईशा, अस्तित्व और इन्स्पेक्टर राणा स्टेजसे उतरकर वहांसे निकल जानेके बाद हॉलमें इकठ्ठा हुए लोगोंको शांतीसे बाहर निकालनेका काम ऍन्करने कुछ पुलिसकी मदद लेते हुए खुब निभाया था. अब कंपनीके कंपाऊंडके अंदर पुलिस, कंपनीके लोग, अस्तित्व, ईशा और वह गुनाहगार के अतिरिक्त कोई नहीं था. कुछ लोगोंको इस पुरे मसलेकी खबर शायद लगी थी, क्योंकि वे पुलिसकी डरकी वजहसे कंपाऊंडके बाहर जाकर इधर उधर छिपते हुए उधरही देख रहे थे. और वेभी लोग बहुत कम थे. इसलिए अब गुनाहगारको संभालनेमें या उसकी मांगे सुन लेनेमें इन्स्पेक्टर राणाको जादा तकलिफ नहीं हो रही थी. अगर लोग अबभी कंपाऊंडके अंदर या हॉलमें होते तो शायद इस गुनाहगारको संभालनेसे उन लोगोंको संभालना जादा तकलिफदेह होता था.

आखिर सॅमको उसके कहे अनुसार कही बहुत दूर ले जाकर छोड़नेके लिए पुलिस राजी हो गई. सब लोग कंपनीके बिल्डींगके बाहर खुले मैदानमें इकठ्ठा हुए थे. मैदानमें पुलिसकी और बाकी बहुतसारी गाडीयां खड़ी थी. सॅमने वहां खड़ी पाच छे गाडीयोंके पास जाकर गौरसे देखा और उनमेंसे एक गाडीके छतपर थपथपाते हुए पुछा,

" यह गाडी किसकी है ?".

वह कंपनीके एक ऑफिसरकी गाडी थी. वह ऑफिसर डरते हुएही सामने आते हुए बोला, " मेरी है "

" चाबी दो " सॅमने फरमान छोडा.

कश्यपजीने उस ऑफीसरकी तरफ देखते हुए आंखोंसेही उसे वैसा करनेके लिए कहा. उस ऑफीसरने चुपचाप अपने पॅन्टकी जेबसे चाबी निकालकर सॅमके हवाले कर दी.

" हम इस गाडीसे जाएंगे " सॅमने एलान किया.

अस्तित्व ने एक कडा कटाक्ष सॅमकी तरफ डालते हुए कहा, " पहले तुम्हारा मोबाईल इधर दो "

सॅमने कुछ क्षण सोचा और अपना मोबाईल निकालकर अस्तित्व के पास देते हुए बोला, " गुड मुक्क"

अस्तित्व ने वह मोबाईल लेकर इन्स्पेक्टरके पास दिया.

" अब तुम्हारा मोबाईल इधर लाओ " सॅमने कहा.

अस्तित्व ने अपना मोबाईल निकालकर सॅमके पास दिया. सॅमने गाड़ीकी डीक्की खोली और वह मोबाईल डिक्कीमें डाल दिया. लेकिन उसे क्या लगा क्या मालूम, उसने वह मोबाईल फिरसे डीक्कीसे बाहर निकाला और उसे ऑफ कर फिरसे डिक्कीमें डालते हुए डिक्की बंद की.

गुड मुक्" अब अस्तित्व की बारी थी.

सॅम उसकी तरफ देखकर मक्कारकी तरह मुस्कराते हुए बोला, " हां अब सब ठिक है "

" हू विल ड्राईक् द व्हेईकल?" अस्तित्व ने गाड़ीके पास जाते हुए पुछा.

" ऑफ कोर्स मी" सॅमने कहा और गाड़ीके ड्राईक्ींग सिटकी तरफ जाने लगा.

लेकिन अचानक सॅम बिचमेंही रुकते हुए बोला , "वेट'

अस्तित्व भी रुक गया. सॅम मुस्कराते हुए अस्तित्व के पास गया और उसकी उपरसे निचेतक पुरी तलाशी लेने लगा. शायद वह उसके पास कोई हथीयार है क्या यह देख रहा था.

" हां अब ठिक है " सॅम ड्रायक्ींग सिटकी तरफ जाने लगा वैसे अस्तित्व ने कहा,

" वेट... दॅट अप्लाईज टू यू टू"

अस्तित्व नेभी सॅमके पास जाकर उसकी पुरी तलाशी ली.

" हां अब ठिक है " अस्तित्व ने कहा और गाड़ीकी तरफ जाने लगा वैसे सॅम इन्स्पेक्टरकी तरफ देखते हुए बोला,

" नहीं अभीभी सब ठिक नहीं है ... "

इन्स्पेक्टर कुछ ना बोलते हुए सॅमकी तरफ देखने लगा.

" इन्स्पेक्टर अगर मुझे किसीभी क्षण खयालमें आगया की हमारा पिछा हो रहा है ... या हमारी जानकारी कही भेजी जा रही है ... तो ध्यानमें रखो ... मै पासवर्ड तो दुंगा ... लेकिन वह गलत पासवर्ड होगा ... जो दिए बराबर तुम्हारे कंपनीका सारा डाटा तुरंत नष्ट हो जाएगा ... समझे ?" सॅमने कडे स्वरमें ताकिद दी.

" डोन्ट वरी यू विल नॉटबी ... फालोड... प्रोक्वायडेड यू गिक् अस द करेक्ट पासवर्ड..."

इन्स्पेक्टरने कहा.

" दट्स लार्क अ गुड बॉय" सॅम गाडीके ड्रायव्हींग सिटपर बैठते हुए बोला.

सॅमने गाडी शुरू करके अस्तित्व की तरफ कडी नजरसे देखा. अस्तित्व उसकी बगलवाले सिटपर चुपचाप आकर बैठ गया और ईशाकी तरफ देखते हुए उसने गाडीका दरवाजा खिंच लिया.

सॅमने गाडी रिस की और कंपनीके कंपाऊंडके बाहर ले जाकर तेजीसे रास्तेपर दौड़ाई.

सॅम अब अस्तित्व के एकदम सामने खड़ा होकर उसकी आखोंमें आखे डालकर देखते हुए बोला,

" तुम्हे पासवर्डही चाहिए ना ?"

" हां ... और बहभी डाटा डिलीट होनेके पहले " अस्तित्व फिरसे चिढ़कर ताना मारते हुए बोला.

" अरे हां ... वह डाटा डिलीट होनेके बाद पासवर्डकी क्या जरूरत ?" सॅम अपने आपसेही जोरसे हंस दिया.

और एकदम अपनी हंसी रोककर बोला, " लेकिन पहले तुम्हारे पासका हथीयार मेरे हवाले कर दो "

अस्तित्व ने उसकी तरफ चौंककर देखते हुए पुछा, " हथीयार ?... मेरे पास कोई हथीयार नहीं .. तुमनेही तो निकलते वक्त मेरी तलाशी ली थी. "

" मि. अस्तित्व ... मुझे क्या इतना बेवकुफ समझते हो ?... " सॅम मोबाईल लगाते हुए बोला. अस्तित्व कुछ नहीं बोला.

सॅमका मोबाईल लगा था और उधरसे इन्स्पेक्टर मोबाईलपर थे. " सॅम पासवर्ड क्या है ?" उन्होने फोन लगतेही पुछा.

" इन्स्पेक्टर थोड़ा धीरज रखो ... पहले इधरका एक काम निपट लूं और फिर तुम्हे पासवर्ड बताता हूं " सॅम फोनपर बोला और उसने चलता हुआ मोबाईलही गाडीके बोनटपर रख दिया.

" मैने सुना है की आजकल तुम्हारी पी एच डी चल रही है " सॅमने अस्तित्व से पुछा.

फिरभी अस्तित्व कुछ नहीं बोला.

" मुझे एक बात नहीं समझमें आती, इतनी अमीर लडकीको फांसनेके बाद तुम्हे पिएचडीकी क्या जरूरत है ?" सॅमने आगे पुछा.

अस्तित्व कुछभी बोलनेके लिए तैयार नहीं था, सच कहे तो वह बोलनेके मनःस्थितीमें नहीं था.

" तुम्हारे पी एच डी का सब्जेक्ट क्या है ?" सॅमने एकदम गंभीर होते हुए पुछा.

अस्तित्व उसके इस असंबंध सवालको कुछ जवाब देना नहीं चाहता था.

" तुम्हारे पी एच डी का सब्जेक्ट क्या है ?" सॅमने अब कड़े स्वरमें पुछा.

अस्तित्व ने पहले उसकी आखोंमें देखा. वह इस सवालके बारेमें सिरीयस दिख रहा था.

" अनकन्फेन्शनल वेपन्स" अस्तित्व ने कंधे उचकाकर जवाब दिया.

" अनकन्फेन्शनल वेपन्स ... हूं ... तुम्हारे जुते बताओ.. निचेसे " सॅमने मांग की.

अस्तित्व को उसके सवालका उद्देश अब पता चल चुका था. उसे अबभी उसके पास कोई हथीयार होनेकी आशंका थी. अस्तित्व ने अपना दाया जुता वैसेही पैरमें रखते हुए उलटा कर बताया. सॅमने गौरसे देखा. वहां कुछ होनेके निशान तो नहीं दिख रहे थे.

" अब बाया बताओ " सॅमने फिरसे आदेश दिया.

अस्तित्व ने थोड़ी हिचकिचाहट जताई तो वह चिल्लाया, " कम ऑन क्वीक".

अस्तित्व ने बाया जुताभी उलटा कर बताया. सॅमने गौरसे देखा. वहांभी कुछ नहीं था. लेकिन अब सॅम सोचमें पड़ गया. उसे अस्तित्व के पास कुछ हथीयार होनेका पुरा विश्वास था.

" रुको ... हात उपर करो ..." सॅम उसके पास जाते हुए बोला.

अस्तित्व ने दोनो हाथ उपर किए. और सॅम उसके जेबसे एक एक सामान निकालकर बोनेटपर रखने लगा. पहले पॅन्टके जेबसे और फिर शर्टके जेबसे सब सामान निकालकर सॅमने गाडीके बोनेटपर रख दिया.

उस सामानमें कुछ लोहेके छोटे छोटे टुकडे थे. सॅम उन टुकडोंकी तरफ गौरसे देखते हुए बोला, " यह क्या है ?"

" कुछ नहीं .. मेरे रिसर्चका सामान " अस्तित्व ने कहा.

" अच्छा!" सॅम अविश्वासके साथ बोला. .

सॅम अब वे सारे टूकडे एक एक करते हुए उलट पुलटकर निहारने लगा. उन सारे टूकडोंमें उसे एक टूकडा थोडा अलग लगा. वह उसने उठाया और वह उसे और गौरसे निहारकर देखने लगा. उस टूकडेके एक तरफ लाल बटन जैसा कुछ तो था. उसकी तरफ अस्तित्व का ध्यान आकर्षित करते हुए सॅम बोला,

" यह क्या है ऐसा ?"

अस्तित्व कुछ नहीं बोला. सॅमने वह टूकडा उलट पुलटकर देखते हुए वह लाल बटन दबाया. और क्या आश्चर्य गाडीके बोनटपर रखे सब टूकडोंमें अब हरकत दिखने लगी थी. और वे किसी चुंबककी तरह एक दुसरेसे चिपकने लगे. जब सारे टूकडे चुंबककी तरह एक दुसरेसे चिपक गए. उसमेंसे एक बंदूककी तरह वस्तू तैयार हो गई.

" अच्छा तो यह ऐसा है ?..." सॅम आश्चर्यसे बोला, “ मेरा अंदेशा कभी गलत नहीं होता ... मुझे पता था की तुम्हारे पास कोईना कोई हथियारतो होनाही चाहिए "

सॅमने वह बंदूक उठाकर उलट पुलटकर देखी.

" स्मार्ट व्हेरी स्मार्ट... अस्तित्व यू आर जिनीयस ... बट ओन्ली इंटेलेक्चूअली ... नॉट प्रोफेशनली" सॅम अजीब तरहके मुस्कुराहटके साथ बोला.

सॅम अबभी वह छोटे छोटे लोहेके टूकडोंसे बनी बंदूक हाथमें लेकर उलट पुलटकर देखते हुए अस्तित्व के इर्द गिर्द चल रहा था. उसने अस्तित्व की तरफ अर्थपूर्ण ढंगसे मुस्कुराते हुए एक कटाक्ष टाकला. उसका हंसना ‘ अब कैसे आया उट पहाड के निचे’ इस तरह का था. अस्तित्व चुपचाप अपने जगह खडा था. उसके इर्द गिर्द चलते चलते उसने अपने कलाईपर बंधे घडीमें देखा ,

" अबभी एक मिनट बाकी है "

सॅम अब बोनटके पास गया और उसने वहा रखा हुवा शुरु मोबाईल उठाकर अपने कानको लगाया. उधरसे अबभी, " हॅलो... सॅम... हॅलो... पासवर्ड क्या है ... जल्दी बोलो ... टाईम खत्म होनेको आया है ..." ऐसा सुनाई दे रहा था.

" इन्स्पेक्टर ... इतनीभी जल्दी क्या है ... बताता हूं ना पासवर्ड " सॅमने कहा और उसने अपने हाथमें पकडी बंदूक अस्तित्व पर तानी.

इधर ईशा, इन्स्पेक्टर, कश्यपजी इन्स्पेक्टरके हाथमें पकड़े मोबाईलपर चल रहा संभाषण कान लगाकर सुन रहे थे, और साथही सामने मॉनिटरकी तरफ देख रहे थे. कमसे कम मोबाईलपर आ रहे सॅमके बोलनेके आवाजसे तो लग रहा था की अस्तित्व मुष्कीलमें फंसा हुआ है. और सामने मॉनीटरपर - ' आल दी सर्वर डाटा अँड कॉम्प्यूटर डाटा ह्याज बिन डिलीट. टू रीकवर एंटर दी पासवर्ड ' और मॉनिटरपर उलटी गिनती चल रहा टाईम बॉम्ब जैसी घड़ी बता रही थी - टाइम- ००:०२:१०. और उपरसे सॅम अबभी पासवर्ड बतानेके लिए तैयार नहीं था. हर एकको अलग अलग चिंता सता रही थी. ईशाको अस्तित्व की. कश्यपजीको कंपनीकी और इन्स्पेक्टरको अस्तित्व और कंपनीकी. आखिर मॉनिटरपर चल रही घड़ी बता रही थी - टाइम- ००:००:५०.

" टाईम खत्म होनेको आया है ... जल्दी पासवर्ड बताओ " इन्स्पेक्टर लगभग चिल्लाए.

" बताता हूँ इन्स्पेक्टर... धिरज रखो "

टाइम- ००:००:४०.

" अब क्या डाटा डिलीट होनेके बाद बताओगे ? " इन्स्पेक्टर चिढ़कर बोला.

कश्यपजीने उनके पिठपर हाथ रखकर उन्हें शांत रहनेका इशारा किया. नहीं तो सॅम अगर चिढ़ गया तो वह पासवर्ड बतानेके लिए इन्कार कर सकता है.

टाइम- ००:००:३०.

" प्लीज ... जल्द से जल्द बता दो " इन्स्पेक्टर मानो अब गिड़गिड़ाने लगे थे.

" उसे पहले अस्तित्व को छोड़ देनेके लिए बोलीए " ईशा अपने आपको ना रोक पाकर चिल्लाई.

" और तुम्हें पहले अस्तित्व को छोड़ना पड़ेगा " इन्स्पेक्टर.

टाइम- ००:००:२०.

" पहले उसे छोड़ना है या पासवर्ड बताना है ? " सॅमभी मौकेका फायदा लेते हुए बोला.

" पहले अस्तित्व को छोड़ दो " ईशाने कहा.

उधरसे सॅमके ठहाकेकी आवाज आ गई.

टाइम- ००:००:१०.

" नही इन्स्पेक्टर पहले मैं पासवर्ड बतानेवाला हूँ ...क्यों ठिक है ना ?"

" बोलो जल्दी ..." इन्स्पेक्टर

" हं यह लो – इलक्... ऑल स्मॉल... नो स्पेस इन बिट्विन.."

टाइम- ००:००:०३

सामने कॉम्प्यूटरपर बैठे एक कर्मचारीने तुरंत पासवर्ड टाईप किया.

टाइम- ००:००:०१

और एंटर दबाया.

मॉनिटरपर चल रहा काउंटर रुक गया और मेसेज आ गया, " पासवर्ड करेक्ट... रिकवरी स्टार्ट"

सब लोगोंने अपने इर्द गिर्द देखा. सभी कॉम्प्यूटरके मॉनिटरपर वही मेसेज आया था – " पासवर्ड करेक्ट... रिकवरी स्टार्ट"

हॉलमें उपस्थित सब लोग, सिर्फ एक ईशाको छोड़कर इतने खुश हो गए की वे तालियां बजाने लगे. मानो कोई यान आसमानमें किसी ग्रह पर सही सलामत उतरनेमें कामयाब हुवा हो. लेकिन अचानक इन्स्पेक्टरके हाथमें पकड़े हुए शुरु मोबाईलसे आए बंदूकके आवाजने, सब लोगोंकी तालियां एकदम बंद हो गई और हॉलमें शमशानवत सन्नाटा छा गया. ईशा तो इतनी देरसे उस पर पड रहा तनाव सह नहीं पाकर और बंदूकका आवाज सुनकर अस्तित्व का क्या हो गया होगा इसके कल्पनामात्रसे बेहोश होकर निचे गिर गई.

एक तरफ सॅम मोबाईलपर बोल रहा था और दुसरे हाथमें उसने अस्तित्व पर बंदूक तानी हूई थी. आखिर उसने लगभग ५ सेकंद बचे होंगे तब इन्स्पेक्टरको पासवर्ड बताया था – " हं यह लो पासवर्ड – इलक्... ऑल स्मॉल... नो स्पेस इन बिट्विन.."

सॅमने अब शुरु मोबाईल फिरसे गाडीके बोनटपर रख दिया. और वह उस अस्तित्व की तरफ ताने हुए बंदूकका ट्रिगर दबाने लगा.

" रुको ... तुम बहुत बड़ी भूल कर रहे हो ..." अस्तित्व किसी तरह बोला.

" भूल ... इसके बाद तुम्हारी वजहसे ... सिर्फ तुम्हारे हठकी वजहसे ... मुझे जिस अंडरवर्डमें

जाना पड रहा है ... उसके लिए मुझे एक योग्यता हासिल करनी पड़ेगी ... पुछो कौनसी ?
... कम से कम एक खुन... और वह योग्यता अब मैं हासिल करनेवाला हूं " सैमने कहा और
उसने झटसे बंदूकका ट्रिगर दबाया.

एक बड़ीसी आवाज हो गई और बगलमें खडे गाडीके खिडकीके कांचपर खुनकी बडी बडी छिटे
उड गई थी.

मोबाईलसे बंदूककी आवाज सुननेके बाद ईशा चक्कर आकर निचे गिर गई. कंपनीके हॉलका
खुशीका माहौल एकदमसे श्मशानवत सन्नाटेमें बदल गया. इन्स्पेक्टरने तुरंत एक दो लोगोंकी
सहायता लेकर ईशाको उठाया. किसीने झटसे फोन कर ऍम्बूलन्स बुलाई.

ईशा बेडपर पड़ी हुई थी. उसके पास डॉक्टर खड़े थे और उसका बीपी चेक कर रहे थे. इन्स्पेक्टर, कश्यपजी, निकिता और, और दो चार लोग उसके आसपास खड़े थे.

" डॉक्टर कैसी है उसकी तबियत ?" निकिताने पुछा.

" इनके उपर अचानक बहुत बड़ा आघात हुआ है जो की वे सह नहीं पाई ... ऐसे वक्त थोड़ा वक्त बितने देना बहुत जरूरी होता है ... फिलहाल मैंने इनको निंदका इन्जेक्शन दिया है ... तबतक आप लोग बाहर बैठिएगा ... लेकिन उन्हें होश आए बराबर उनके पास कोई होना बहुत जरूरी है ... इनके करीबी कौन है ?" डॉक्टरने पुछा.

" मै " निकिताने जवाब दिया.

" आप कौन ... इनकी बहन ?"

" नहीं मै इनकी दोस्त हूं " निकिताने कहा.

" दुसरा कोई नहीं है? ... जैसे मां बाप भाई बहन."

निकिताने उलझनमें इधर उधर देखा तो इन्स्पेक्टरने कहा, " डॉक्टर उनका नजदिकी ऐसा कोई नहीं है "

" अच्छा ठिक है ... ऐसा करो आप इनके पास रुको " डॉक्टरने निकितासे कहा.

वैसेभी निकिताका वहांसे हिलनेके लिए मन नहीं कर रहा था. बाकी सब लोग कमरेसे बाहर चले गए और निकिता वही उसके सिरहाने बैठी रही. वह भलेही उसकी बॉस रही हो लेकिन उसने उसे कभी बॉसकी तरह ट्रीट नहीं किया था. और असलमें ईशाने उसे एक दोस्तके हैसियतसेही वह पीए का जॉब जॉइन करनेके लिए कहा था. निकिता उसके सिरहाने बैठकर उसे होश आनेका इंतजार करने लगी.

ईशाको इंजक्शन देकर लगभग दोन-तिन घंटे हो गए होंगे. उसके रुमके बाहर अबभी इन्स्पेक्टर, कश्यपजी और बाकी काफी लोग उसे होश आनेकी राह देख रहे थे. होशमें आनेके बाद उसकी दिमागी हालत कैसी रहती है इसपर काफी चिजे निर्भर करती थी. असलमें उसे मां बाप ऐसे एकदम करीबी कोई ना होनेसे उसने अस्तित्व पर अपनी पुरी जिंदगी निछावर की थी. और उसका उसे ऐसे बिचमें छोडकर चला जाना उसके लिए बहुत बड़ा आघात था. तभी एक नर्स जल्दी जल्दी बाहर आ गई.

" इन्स्पेक्टर उन्हे होश आ गया है " नर्सने कहा और वह फिरसे अंदर चली गई.

सारे लोग अंदर जानेके लिए हरकतमें आ गए.

अंदर ईशा निकिताके कंधेपर सर रखकर जोर जोरसे रो रही थी. और निकिता उसके पिठपर थपथपाकर और सरपर हाथ फेरते हूए उसे जितना हो सके उतना धीरज बंधानेकी कोशीश कर रही थी. दरअसल पहले वह बुरी खबर सुननेके बाद उसे अपनी भावनाए व्यक्त करनेके लिए मौका नहीं मिला था क्योंकि वह अपनी भावनाओंको व्यक्त करनेके पहलेही बेहोश हो गई थी. कमरेमें वह हृदयविदारक दृष्य देखकर इन्स्पेक्टर उसे धीरज बंधानेके लिए आगे बढ़ने लगे, तब बगलमें खड़े डॉक्टरने उन्हे इशारेसेही मना कर दिया. डॉक्टरकाभी सही था क्योंकि उसका सारा दर्द बाहर आना बहुत जरूरी था. सब लोग, भलेही उन्हे बहुत दुख हो रहा था फिरभी चुप्पी साधकर वह दृष्य देखते रहे.

तभी कमरेके बाहर, काफी दुरसे, शायद अस्पतालके प्रमुख द्वारसे आवाज आया, " ईशा..."

वह आवाज सुनकर ईशाही नहीं तो वहां उपस्थित सारे लोगोंको मानो कुछ आभास होगया है ऐसा लगा. ईशाका रोना रुक गया था. सारे लोग स्तब्धतासे खड़े होकर दरवाजेकी तरफ देख रहे थे.

" ईशा " फिरसे आवाज आ गया.

इसबार काफी नजदिकसे आए जैसा. लगभग दरवाजेकी बाहरसे ही. अब ईशा उठकर खड़ी हो गई और दरवाजेकी तरफ जाने लगी. कमरेमें उपस्थित बाकी लोगभी दरवाजेकी तरफ जाने लगे. ईशा दरवाजे तक पहुंच गई होगी जब कमरेका दरवाजा खुला और दरवाजेमें अस्तित्व खड़ा था. उसके सारे कपड़े और सारा शरीर खुनसे सना हुवा था. दोनों आवेशके साथ एक दुसरेकी तरफ दौड़े और उन्होने एक दुसरेको बाहोंमें लिया.

सॅमने इन्स्पेक्टरको पासवर्ड बतानेके बाद शुरु मोबाईल गाडीके बोनटपर रखा. और वह उस अस्तित्व की तरफ ताने हुए बंदूकका ट्रिगर दबाने लगा.

" रुको ... तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो ..." अस्तित्व किसी तरहसे बोला.

" भूल ... इसके बाद तुम्हारी वजहसे ... सिर्फ तुम्हारे हठकी वजहसे ... मुझे जिस अंडरवर्डमें जाना पड रहा है ... उसके लिए मुझे एक योग्यता हासील करनी पड़ेगी ... पुछो कौनसी ? ... कम से कम एक खुन मेरे नामपर होनेकी... और वह योग्यता अब मैं हासिल करनेवाला हूं " सॅमने कहा और उसने झटसे बंदूकका ट्रिगर दबाया.

एक बड़ीसी आवाज हो गई और सॅमके हाथमें पकडे बंदूकका किसी बॉम्बकी तरह विस्फोट हो गया.

अतुलके शरीरके टूकडे टूकडे होकर चारो ओर उड गए थे. अस्तित्व अपना बचाव करते हुए पिछेकी तरफ लपक पडा था. फिरभी खुनकी छिंटे सॅमके शरीरपर उड गई थी और उसका पुरा शरीर और कपडे खुनसे सन गए थे. पासमें खडे कारके शिशेभी सॅमके खुनसे सन गए थे.

थोड़ी देर बाद अस्तित्व उठ खडा हुवा. उसने निचे गिरे हुए सॅमके शवपर अपनी नजर डाली.

फिरभी मैंने उसे बतानेकी कोशीश की की वह बंदूक ना होकर बॉम्ब है ...

लेकिन वह मानाही नहीं ... उसमें मेरा क्या दोष...

अस्तित्व मानो अपने आपको समझानेकी कोशीश कर रहा था.

आखिर क्या है ... की पराई नार ... और पराये हथीयारसे आदमीको बचना चाहिए...

अस्तित्व के जहनमें आकर गया.

ईशा अपने ऑफीसमें अपने काममें व्यस्त थी. उसने हमेशाकी तरह आए बराबर कॉम्प्यूटर ऑन करके रखा था. तभी कॉम्प्यूटरपर चाटींगका बझर बजा. उसने मॉनिटरपर देखा. एक मेसेज था –

"मिस ईशा ... ५० लाख रुपयोंका मेरे लिए इंतजाम करना वरना नतिजा तो तुम जानतीही हो ..." ईशाने वह मेसेज पढ़ा और उसके रोंगटे खड़े हो गए.

तभी अस्तित्व और निकिता उसके कॅबिनमें आ गए.

"ईशा चलो आज हम पिक्चरको चलते है ...मॉर्निंग शो"

"अस्तित्व ... इधरतो देखो ... ब्लॉकमेलरका फिरसे मेसेज आ गया है" ईशा उसका ध्यान मॉनिटरकी तरफ आकर्षित करते हुए बोली.

अस्तित्व कॉम्प्यूटरके पास जाकर देखने लगा. लेकिन निकिता अपनी हंसी नहीं दबा सकी. वह जोरजोरसे हसने लगी.

"ए क्या हुआ ?" ईशा.

"अरे वह मेसेज अभी अभी अस्तित्व ने बगलके कॅबिनसे भेजा है " निकिता हंसते हुए बोली.

"लेकिन वह तो अभी अभी यहां आया है " ईशा.

"अरे नहीं ... बगलके कॅबिनसे वह मेसेज भेजकर तुरंत हम इधर आ गए.

"यू नॉटी बॉय" ईशा अस्तित्व पर पेपरवेट उठाते हुए बोली.

और फिर पेपरवेट टेबलपर वापस रखते हुए वह उठ गई और उसके पास जाकर उसके छातीपर प्यारसे मारने लगी. अस्तित्व ने हल्केसे उसे अपने आगोशमें खिंच लिया.

***** समाप्त *****